सतभैंया पोखरि

(लघु कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN :

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१३

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८

फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www. shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Sh. Umesh Mandal.

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

***Satbhianya pokhir** : A collection of maithili short story*

by

Sh. Jagdish Prasad Mandal.



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन : कृषि

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

एकसत्तरि-

बिहरन

जहिना बैशाख-जेठक लहकैत धरती, अगियाएल वायुमंडलक बीच हवाकेँ खसने अनासुरती मेघक छोट-छोट चद्दरि सुरूज ओढ़ए लगैत, रेलगाड़ीक हुमड़ैत अवाज दौगए लगैत, रहि-रहि कऽ गुलाबी इजोतक संग छिटकए लगैत जइसँ अनुमानित मन मानैले बेबस भऽ जाइत जे पानि-पाथर-ठनका संग बिहाड़ि आबि रहल अछि तहिना रघुनन्दन आ सुलक्षणीक परिवारमे ज्योति कुमारीक जनमसँ भेलनि।

भलहिं आइ-काल्हि बेटी जनमने माए-बाप अपन सुभाग्यकेँ दुर्भाग्य मानि मनकेँ केतबो किए ने कोसथि जे परिवारमे बेटीक आगमन हिमालयसँ समुद्र दिस निच्चाँ मुहेँ ससरब छी, मुदा से दुनू बेकती सुलक्षणीकेँ नै भेलनि। जहिना गद्दा पाबि कुरसी गदगर होइत तहिना खुशीसँ दुनू परानी रघुनन्दनक मन गद-गद रहनि। से खाली परिवारे धरि नै सर-समाज, कुटुम-परिवार धरि सेहो छेलनि। ओना आन संगी जकाँ रघुनन्दन नै छला जे तीनियेँ मासक पेटक बच्चाक दुश्मन बनि पुरुषार्थक मोँछ पिजबैत, आ ने अपन रसगर जुआनी छोलनी धीपा-धीपा दगैत। दुनू परानी बेहद खुशी! किए नै खुशी रहितथि? मन जे मधुमाछी सदृश मधुक संग मधुर मुस्कान दइ छेलनि। पुरुष अपन वंश बढ़बै पाछू बेहाल आ नारीकेँ हाथ-पएर बान्हि बौगली भरि रौदमे ओँघरा देब केते उचित छी? दुनू परानीक वंश बढ़ैत देखि दुनू बेहाल। मन तिरपित भऽ तरैप-तरैप नचैत रहनि।

ओना तीन भाँइक पछाति ज्योतिक जनम भेल, मुदा तइसँ पहिने बेटीक आगमनो नै भेल छेलनि जे दोखियो बनितथि। भगवानोक किरदानी कि नीक छन्हि? नीको केना रहतनि, काजक तेते भार कपारपर रखने छथि जे जखनि टनकी धड़ै छन्हि तखनि खिसिआ कऽ किछु-सँ-किछु कऽ दइ छथिन। मुदा से लोक थोड़े मानतनि, मानबो किए करतनि? जखनि अपने-अपने हाथ-पएर लाड़ि-चाड़ि जीबैए तखनि अनेरे अनका दिस मुँहतक्कीक कोन जरूरति छै। किए ने कहतनि जे अहाँ निर्माता छी तखनि तराजूक पलड़ा एक रंग राखू, किए केकरो जेरक-जेर बेटा दइ छिऐ आ केकरो जेरक-जेर बेटी। जौं देबे करै छिऐ तँ बुधि किए भंगठा दइ छिऐ जे बेटासँ धन अबै छै आ बेटीसँ जाइ छै। जइसँ नीको घरमे चोंगराक खगता भऽ जाइ छै।

उच्च अफसरक परिवार तँए पारिवारिक स्तर सेहो उच्च। भलहिं किए ने माए-बाप छाँटि परिवार होन्हि। खगल परिवार जकाँ सदति गरजू नै। परिवारक खर्च समटल तइसँ खुलल बजारक कोनो असरि नै। सरकारी दरपर सभ सुविधा उपलब्ध, जइसँ खाइ-पिऐसँ लऽ कऽ मनोरंजनक ओसार चकमकाइत। भलहिं जेकर अफसर तेकर बात बुझैमे फेर होन्हि। जइसँ महगी-सस्ती बुझैमे सेहो फेर भऽ जाइत होन्हि। मुदा परोछक बात छी चारू बच्चाक प्रति समान सिनेह रहलनि। परिवारमे सभसँ छोट बच्चा रहने ज्योति सबहक मनोरंजनक वस्तु। मुदा गुरुआइ तँ ओहिना नै होइ छै, तँए सभ अपन-अपन महिक्का मनक टेमीसँ सदति देखथि, जप करथि। आखिर के एहेन छथि जे ऐ धरतीपर ज्ञानदानी नै छथि। भलहिं ओ अधखिजुए वा अधपकुए किए ने होथि। जहिना कोनो माइलिक बच्चा पिताक संग जामंतो रंगक फूलक फुलवाड़ीमे जिनगीक अनेको अवस्था देखि चमकैत तहिना भरल-पूरल परिवारमे ज्योतियोकेँ भेल। देखलनि कलीमे जहिना अबैत-अबैत रंगो, सौन्दर्यो आ महको अबैए तहिना ने जिनगी छी। जौं मनुखकेँ डोरीसँ बान्हल जाए तँ डोरी तोड़ैक उपएओ तँ हुनके करए पड़तनि।
समुचित वातावरण रहने ज्योति संगी-साथीक बीच नीकक श्रेणीमे आबि गेली। जहिना संगीक सिनेह तहिना शिक्षकोक सिनेह भेटए लगलनि। टिकट कटौल यात्री जहिना निश्चिन्तसँ गाड़ीमे सफर करैत तहिना समतल जिनगी पाबि ज्योति आगू बढ़ए लगली। जिनगीमे बधो अबै छै तइसँ पूर्ण अनभिज्ञ ज्योति। जेना कर्मकेँ धर्म बना जिनगीक बाट बनौने हुअए।

थम्हसँ निकलैत केराक कोसा जहिना अपन घौरक संग हत्थो आ छीमिओक अनुमानित परिचए दैत, फूलक कोढ़ी फूलक दैत तहिना बच्चेसँ कुमारि ज्योति सुफल जिनगीक अनुमानित परिचए दिअए लगली। जेना-जेना बौद्धिक विकास होइत गेलनि तेना-तेना तीनू भाँइयो बुझए लगला जे ज्योति तेहेन चन्सगर अछि जे आगू किछु जरूर करत। जइसँ भैयारीए जकाँ ज्योतिक संग बेवहार करए लगला। लैंगिक प्रभाव ओतए अधिक देखि पड़ैत जेतए भाए-बहिनक दूरी जेते अधिक रहै छै। से रघुनन्दनक परिवारमे नै छेलनि दोसर कारण ईहो छेलनि जे वैचारिक दूरी जेना आन-आन परिवारमे रहैत तेना सेहो नहियेँ जकाँ छेलनि। परिवारक सभ अपन-अपन दायित्व बूझि अपन-अपन काजमे दिन-राति लगल रहैत। ओना ज्योतिकेँ सभ अपना-अपना

नजरिए देखैत रहथि। गुरुक रूप रघुनन्दन देखथि तँ जगत-जननी जानकीक सुनैनापुर रूप माए देखै छेलखिन। जइसँ एक-एक लूरि-बुधिकेँ धरोहर जकाँ सजबै छेली। भाएक मन सामा-चकेबाक सम्बन्धमे ओझराएल। केना नै ओझराइत रहता? आइ धरिक इतिहासक दूरी जे मेटाइत देखथि! केतेक प्रतिशत परिवार अखनि धरि इतिहासक पन्नामे लिखाएल अछि जइमे भाए-बहिनक शिक्षाक दूरी समतल हुअए? तँए सबहक सिनेहक अपन-अपन कारण। जनकपुरमे जहिना रामकेँ आ मथुरामे कृष्णकेँ देखि, देखिनिहारकेँ भेलनि तहिना ज्योतियोक परिवारमे।

बाल-बोध जहिना अपन मनोनुकूल वस्तु पाबि छाती लगबैत, हृदैसँ खुशी होइत तहिना विज्ञान विषयसँ ज्योति सटि गेली। नीक -विज्ञानक विषयमे- नम्बर आनि बिजलोका जकाँ ज्योति संगीओ-साथी, शिक्षको आ मातो-पिताकेँ चमकाबए लगली। हाइ स्कूल पएर दैते जेना अपन आँट-पेट बूझि कोनो विद्यार्थी साइंस तँ कोनो कामर्स तँ कोनो आर्ट विषय चुनि आगू बढ़ैत तहिना ज्योतियो साइंस चुनि नेने छेली। घरसँ बाहर धरि सर्वत्र बहारे-बहार। ऋृषि-मुनि लेल दुनियाँ जहिना समतल देखि पड़ैत, तहिना स्कूलक शिक्षकक संग दू-दूटा भाए पाबि ज्योतिक दुनियाँ सेहो समतल। जइसँ कोनो तरहक असोकर्ज घरसँ बाहर धरि नहियेँ। असोकर्ज तँ ओइठाम होइत जेतए एकपेरिया-चरिपेरियाक -चौबट्टी- मिलैक भौक होइ छै। भौक तँ ओतए ने बेसी बूझि पड़ैत जेतए जेहेन चलनिहार होइत। जैठाम बेसी चलनिहार रहैत ओतए कच्चीओ सड़क पक्कीए जकाँ सक्कत आ पक्कीओ कच्चीए जकाँ बनि जाइत।

साइंस कौलेजसँ ज्योति फिजिक्ससँ नीक नम्वर पाबि एम.एस.सी. केलकनि। जहिना अखराहापर लपटैत-लपटैत पहलवानक कश बनि जाइत तहिना ज्योतियोकेँ भेल।

'नारी मुक्ति संघ'क स्थापित अध्यक्ष होइक नाते पिता रघुनन्दनक सिनेह आरो बेसी ज्योतिपर। ज्योतिकेँ कौलेज पहुँचैत-पहुँचैत तेसरो भाए नोकरी पकड़ि लेलनि जइसँ आरो बेसी सुविधा भेटलनि। ओना काजकेँ कर्म बना करैक अभ्यास सुलक्षणी बच्चेसँ लगबैत आएल रहनि। जइसँ घरक काजक जहैन ज्योतिक जेहन तक पकड़ि लेने तँए जहिनगर। सदति कर्मकेँ सहयोगी प्रेमी जकाँ दुलरबैत, प्रेम करैत। तँए कि ज्योति सुलक्षणीक बेटी नै?, परिवारक सभसँ बेसी सिनेही बेटी छियनि। मुदा सुलक्षनीक मनमे सदति

एकटा कचोट कचोटिते रहनि जे कुल कन्या की? कुल तँ अनेको अछि- गुरुकुल, पितृकुल, मातृकुल इत्यादि। जे पश्न अखनो धरि नै सोझरेलनि। एम.एस.सी. करिते दुनू बेकती रघुनन्दनकेँ जहिना बिनु हवोक पीपरक पात डोलए लगैत, तहिना ज्योतिक प्रति सिनेह डोलए लगलनि। अनासुरती दुनूक मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलनि। बीस बरखक बेटी भऽ गेलि, बिआह करब माए-बापक कर्तव्य कर्म छी। कौलेजक अंतिम सीढ़ीक आगू टपि चुकल, संग ईहो जे पारदर्शी सीसा जकाँ ज्योतिक शरीर देखथि जे जुआनीक रंग सगतरि चमकि रहल छै। ओना कौलेजक आन छात्रा जकाँ नै, मिथिलाक धरोहरि कुल-कन्या जकाँ। जे गुरुकुलमे विद्याध्ययन करैत। दुनू परानीक दायित्व बूझि रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

> ''ज्योति बिआहै जोकर भेल जाइए से की विचार?''

संयासिनी जकाँ सुलक्षणी उत्तर देलखिन-

> ''अपन कोनो काज पछुआ कऽ नै रखने छी, जे बाँकी अछि अहाँकेँ छी। तैबीच की विचार देब।''

पत्नीक उत्तर सुनि रघुनन्दन तिलमिलाइत विचार करए लगला। एहेन उटपटांग उत्तर किए देलनि? मुदा सोलहो आना तँ अनुमानोसँ कोनो बात नै बूझल जा सकैए। नीक हएत जे पुन: प्रश्न उठा आगू बजबाबी। ई तँ निश्चित जे एको परिवारमे काजक हिसाबे सबहक सोचै-विचारै आ बुझैक ढंग फुट-फुट भऽ जाइ छै। भलहिं सासुसँ ऊपर किए ने जेठ सासु मानल जाए, मुदा सासु तँ सासु होइत। जहिना देवालयक कपाट लग ठाढ़ भक्त हाथ जोड़ि अपन दुखरा भगवानसँ सुनबैत तहिना तड़पैत रघुनन्दन पत्नीकेँ पुछलखिन-

> ''संयासिनी जकाँ किए घरसँ पड़ाए चाहै छी। बिसरि रहल छी जे घरनी सेहो छी?''

पतिक गंभीर विचारकेँ आँकिते सुलक्षणीक करेज कलपि गेलनि मुदा पानिक बोहैत बेगमे जहिना गोरसँ गोरिया-गोरिया गोर उठौल जाइत तहिना सुलक्षणी ज्योतिक जिनगीक धारामे ठाढ़ भऽ बजली-

“अहूँ कोनो हूसल नै छी, सभ माए-बाप बेटा-बेटीकेँ बच्चे बुझैए। मुदा एतए से बात नै छै। अहाँ लिए भलहिं ज्योति बच्चा हुअए मुदा ओ ओइ सीढ़ीपर पहुँच गेल अछि जेतए मनुख अपन जिनगीक बाट चुनैक गुण प्राप्त कऽ लइए। तँए दुइए परानी नै, बेटो-पुतोहुसँ विचारि लिअ।”

सेन्ट्रल बैंकक ब्रान्च मैनेजर भोगेश्वरक संग ज्योतिक बिआहक बात पक्का भऽ गेल। जहिना ज्योति तहिना भोगेश्वर। अद्भुत मिलानी। विषुवत रेखाक समान दूरीपर जहिना उत्तरो आ दछिनो समान मौसम, समान उपजा-वाड़ी होइत अछि, तहिना दुनूक बीच। अलेल कमाइ तँए छिड़ियाएल जिनगी भोगेश्वरक। हजारो कोस हटि भोगेश्वर अपन परिवारसँ रहैत। नव-नव वस्तुसँ भरल बजार, जे दुनियाँक एक कोणसँ दोसर कोण पहुँचैत, भोगेश्वर चकाचौंधमे हरा अपन माएओ-बाप आ भाएओ-भौजाइसँ दूर भऽ गेल। किए ने हएत? जखनि सभकेँ अपन कर्मक फल भोगैक अधिकार छै तँ भोगेश्वरो किए ने भोगत। एक तँ दिन राति रूपैआक पेंच-पाँचक गुत्थी खोलैक क्षमता तैपर जेकरे माए मरै तेकरे पात नै भात?’

नीक बर पाबि रघुनन्दन चंदाक तिजोरी -नारी मुक्ति संघक कोष-खोलि देलनि। कोनो अनचितो तँ नहियेँ केलनि। चंदो तँ मुक्तीए लेल अछि। एक तँ मनी-ग्रुप अर्थशास्त्रसँ पी.चए.डी. तैपर सँ सेन्ट्रल बैकक शाखा-प्रबंधक, किए नै भोगेश्वर अपन अधिकारक उपयोग करत। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। तैबीच ज्योतिकेँ, मास दिन पूर्व देल आवेदनक, इन्टर-भ्यूक चिट्ठी भेटलनि। तहूमे बिआहक दिनसँ तीन दिन पूर्वक दोहरी काज परिवारमे बजरि गेलनि। छोड़ैबला कोनो नै। तैपर ज्योति सेहो बिआहकेँ माइनस आ इन्टर-भ्यूकेँ पलसमे हिसाब लगबैत। बिआहक ओरियानक धुमसाही परिवारमे। मुदा ज्योति विपरीत दिशामे मुड़ि इन्टर-भ्यू दइले अड़ि गेली। इन्टर-भ्यूओ तँ लगमे नहियेँ जे दू-चारि घंटा समए लगा पुरौल जा सकैए। दछिन भारत लऽग नै। केतबो तेज दौगैबला गाड़ी भेल तैयो चौबीस घंटासँ पहिने नै पहुँच सकैए। तहूमे बिआह सन शुभ काजमे बर-कन्याकेँ सुरक्षित रहब जरूरी अछि। सीमा केना पार कएल जा सकैए। गाड़ी-सवारीक कोन ठेकान। ज्योतिक प्रश्न परिवारकेँ स्तब्ध केने। जेठ भाय

प्रेमकुमारक सिनेह ज्योतिपर उमड़ि पड़लनि। हिसाब लगबैत पिताकेँ कहलखिन-

> ‘‘बिआहक दिनसँ चौबीस घंटा पहिने अबस्स पहुँच जाएब। अहाँ सभ बिआहक ओरियान करू ज्योतिक संग जाइ छी।’’

प्रेम कुमारक विचारसँ रघुनन्दन दुनू काज होइत देखि खुशी भेला। मुदा सुलक्षणीक मन आरो बेसी करुआए लगलनि। खोलि कऽ बजती केना? एक तँ पुरुष-प्रधान परिवार तैपर सभ बापूतक एक विचार। स्त्रीगणक कोनो ठेकाने नै। कहैले ने चारि गोरे परिवारमे छी मुदा ननदि-भौजाइक सम्बन्ध केहेन होइ छै से की केकरोसँ छिपल छै। नीक हएत जे पोल्हा कऽ बेटीएसँ पूछि ली। मुदा विध-बेवहारपर नजरि पड़िते पुन: मन भगंठि गेलनि। बिनु विधि-बेवहारक बिआह केहेन हएत। रस्ते पेरे तँ सेहो लोक बिआह कऽ लइए मुदा परिवार केहेन बनै छै। आठो दिन तँ कम-सँ-कम विध-बेवहारमे लगबे करत।

ज्योतिक इन्टर-भ्यूओ आ बिआहो भऽ गेलनि। अद्भुत बिआह तँए समाजमे चर्चाक विषय। चर्चो मुँह देखि मुंगबा परसैत। जेहेन मुँह तेहेन मुंगबा। कियो दुनू बेकतीक -बर-कन्याक- शिक्षाक चर्च करैत तँ कियो युगक अनुकूल बर-कन्याक जोड़ाक। कियो विध-बेवहारक लहासक चर्च करैत तँ कियो समाजक अगुआएल नारी जातिक। केतौ भोज-भातक चर्च चलैत, तँ केतौ गमैया बरियातीक संग बजरूआ बरियातीक। मेल-पाँच बरियाती तँए सबहक बात दमगर। इनार पोखरिक घाटसँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा धरि संसद चलैत। मुदा सबहक मन ओइ बिन्दुपर अँटकि जाइत जेतए भोगेश्वर आ ज्योतिक वैवाहिक बंधन रहए।

बिआहक तीन दिन पछाति भोगेश्वर दुरागमनक प्रस्ताव केलनि। प्रस्ताव सुनि परिवारक सबहक मनमे सभ रंगक विचारक संग उत्तरो उठलनि। मुदा आगू बढ़ि कियो बजैले तैयार नै। मने-मन सुलक्षणी सोचथि जे बिआहक साल तँ बर-कनियाँक विध-बेवहार होइ छै। जौं विधि-बेवहारक कारण नै होइ छै तँ किए सौन-भादो आ पूस-माघ बेटीक विदागरी नै होइए। बिनु विधि-बेवहारक बिआह तँ ओहने होइत जेहेन बिनु मसल्लाक तरकारी। कहैले ने लोक बजैए जे फल्लां चीजक तरकारी खेलौं मुदा की बिनु मसल्लेक बनल

छेलै। जौं मसल्लोक सागिरदीसँ तरकारी बनल तँ ओकर चर्च किए ने होइ छै। तर-ऊपर मनकेँ होइतो कंठसँ निच्चे सुलक्षणी अपन विचारकेँ अँटका रखली। रघुनन्दनक मनमे भिन्ने विचार औंढ़ मारैत रहनि। मुदा गारजनक हैसियतसँ औगता कऽ बाजबो उचित नै बूझि सुरखुराइत मनकेँ रोकने रहला। मुदा तैयो होन्हि जे बिनु कहने बुझता केना? भीतरे-भीतर मन बजैत रहनि जे जहिना बीजू -आँठी-सँ जनमल साल-दू सालक आमक गाछ- गाछ कलमी डारिमे छीलि कऽ डोरीसँ बान्हि किछु मास जुटैले छोड़ि देल जाइत तहिना ने बिआहो छी। फागुनक कनियाँ जौं फागुनेमे सासुर चलि जाथि तँ समन जरैत देखब सासुरमे नीक हेतनि? चैताबरक टाँहि सासुरमे नव-कनियाँक देब उचित हएत? तखनि, आमक गाछीक मचकीक बरहमासा आ सौनक राधा-कृष्णक कदमक गाछक झुलाक अर्थे की रहत? तहीले ने बिआह-दुरागमनक बीच समैक फाँक रहैए। भलहिं नै बनैबला रहत तँ पान साल आकि तीन साल नै, मुदा सालो तँ टपबए पड़त। जौं से नै टपत तँ केना सासु-ससुर, सारि-सरहोजि, सार-बहनोइ, सर-समाजक बीच सम्बन्ध बनत। परिवारक बीच कम्मो दिनमे सम्बन्ध स्थापित भऽ सकैए मुदा समाज तँ नम्हरो आ गहींरगरो होइ छै। कोनो धारक पानिक पैमाना तँ तखनि ने नपाएत जाएत जखनि भादोक बढ़ल आ जेठक सटकल पेटक पानि नापल जाए। तहिना ने समाजो छी। अपना गरजे लोक थोड़े जुड़शीतल आ फगुआ आन मासमे कऽ लेत। जौं से करत तँ चरिटंगा आ दूटंगामे कि अन्तर भेलै? एतबे ने, बिनु सिंह-नांगरिक रहत...। मन ममोड़ि कऽ रहि गेला। अनेको कारण अनेको मनकेँ घेर लेलकनि। ज्योतिक भाए-भौजाइ अखनि धरि धर्मसूत्र आ गृहसूत्र पढ़नहि ने तँए कोनो चिन्ता मनमे रहबे ने करनि। नोकरिया रहने होइत रहनि जे जेते जल्दी काज फरिया जाएत ओते जान हल्लुक हएत। अनेरे सी.एल. दुइर हएत। मुदा से सारेक मनमे नै रहनि भोगेश्वरक मनमे सेहो रहनि। बैंकमे घंटाक कोन बात जे मिनटोक महत छै। हरिदम पाइएक बर्खा। अनेरे पा-भरि खाइले दिन-राति सासुर ओगरब कोन कबिल्ती हएत। स्त्रीए लऽ कऽ ने सासुर, आ जे संगे रहत तँ सभदिना सासुर नै भेल? जरूर भेल। अपना परिवारकेँ जौं सासुर बना सौंसे गाम जे ओझे बनि जाएत तँ केकरा सोझहा जाइक आँखि-मुँह रहत। मुदा तीनू भाँइ प्रेमकुमार चुप्पी लादि लेलनि जे अखनि घरक गारजन माए-बाबू छथि तखनि

किछु बाजब उचित नै। मुदा मनमे तीनू भाँइकेँ शंका जरूर होन्हि जे स्त्रीगणक सोभाब होइत अछि जे पुरुखक टीकपर चढ़ि कऽ मुरगीक बाँग देब। तइ संग समाजोक डर। समाज तँ ओहन शक्ति छी जे बिनु डोरी-पगहाक रहनौं चपरासीसँ लाट साहैब धरि सजौने अछि। हाकिम-हुकुम आ रिनियाँ-महाजन रहै वा नै। भलहिं बिलाइ बाझकेँ खाए वा बिलाइकेँ बाझ।

जखनिसँ जमाइबाबूक दुरागमनक प्रस्ताव परिवारमे आएल तखनिसँ सभ सकदम! चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप। जइसँ धारक पानि जकाँ बोहैत बोल ठमकि कऽ भौर लिअए लगल। ओना बन्न मुँह रहितो आँखिक नाच जोर पकड़नहि, मुदा सिरिफ मूक नाच। जेठुआ गरेक सूर-सार देखते जहिना सचेत लोक पहिने बाल-बच्चा आ माल-जालक उपए सोचि आगू डेग उठबैए तहिना रघुनन्दनकेँ अपन भार परिवारक बीच उठबैक विचार भेलनि। फुरलनि, ‘संग मिल करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज।’ जाधरि नीक-अधलाक बीचक सीमा-सरहद नै बूझल जाएत ताधरि हारि-जीतक चर्चे बचकानी। मुदा समाजो आ परिवारोक तँ चलैक रस्ता अछिए। मनमे खुशी उपकलनि। खुशी उपकिते मुँह कलशलनि। मुदा पत्नी सुलक्षणीक मन महुराएले! किए ने महुराएल रहतनि? जेकरा मुँहमे ने थाल-कादो लगल अछि आ ने पसीनाक सुखाएल टगहार अछि ओ किए ने रूमालेसँ काज-चला लेत। मुदा जेकरा मुँहमे थालो आ तह-दर-तह सूखल पसीनोक टगहार छै ओ केना बिनु पानिए धोनौं चिक्कन हएत। की अपनो मन मानत?

सहमत भऽ परिवारक सभ सुलक्षणीकेँ बजैक भार देलकनि। सुलक्षणी बजली-

> “ओना साल भरि नै तँ छह मास, जौं सेहो नै तँ तीनिओ मास, जौं सेहो नै तँ एको पनरहिया नै रूकता तँ केना हेतनि। जौं से नै मानता तँ हमहूँ नै मानबनि।”

सासुक निर्णए सुनि अपन शक्तिक प्रयोग करैत भोगेश्वर बजला-

“अपन अधिकार क्षेत्रसँ अनचिन्ह भऽ बाजि रहल छथि। तँए...?”

भोगेश्वरक बात सुनि ज्योतिक हृदैमे तरंग उठलनि। तरंगित होइत मुँह तोड़ि उत्तर दिअए चाहलनि। मुदा इन्टर-भ्यू मन पड़िते ठमकि गेली। मुँह तँ

बन्न रहलनि मुदा मनमे तीन परिवारक टक्कर उठलनि। रूइ सदृश वादलक टक्करसँ ठनका बनि सकैए तँ तीन परिवारक तीन जिनगीक रग्गर केते शक्तिशाली भऽ सकैए! दिन-रातिक सीमा-सरहद तोड़ि ज्योति पतिकेँ कहलनि-

> ''अधिकार आ कर्तव्य हर मनुखक धरोहरि सम्पति छिऐ, नै कि खास- बेकतीक खास...?''

ज्योतिक विचार सुनि भोगेश्वरक देह सिहरि गेलनि। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत बजला-

> ''साते दिनक छुट्टी अछि। एक तँ अहुना आन-आन विभागसँ कम छुट्टी बैंकमे होइ छै, तहूमे एते सुविधा भेटै छै जे काज केनिहार ओहो छुट्टी काजेमे लगबए चाहैए।''

तैबीच ज्योतिक मोबाइलिक घंटी टुनटुनाएल। मोबाइलिक अनभुआर नम्बर देखि सावधानीसँ ज्योति रिसीभ करैत बजली-

> ''हेलो।''
>
> ''हेलो।''
>
> ''अपने केतएसँ बजै छी?''
>
> ''विज्ञान शोध संस्थानसँ। सात दिनक भीतर आबि ज्वाइन कऽ लिअ। ओना चिट्ठीओ पठा देने छी।''

ज्वाइनिंगक समाचार सुनि ज्योतिक मन ओहिना खिल उठलनि जहिना फूलक कली कोनो वस्तुसँ दबा तरेतर तँ खिलैत रहैत, जे समए पाबि फुडफुड़ा कऽ फूलक रूपमे आबि जाइत। अखनि धरिक विचार ज्योतिक तर पड़ि गेलनि आ नव दुनियाँक नव विचार ऊपर चढ़ि गेलनि। रघुनन्दनकेँ कहलनि-

> ''बाबूजी, अपन कर्तव्य जइ रूपे अहाँ निमाहलौं से बहुत कम लोक निमाहि पबैए। आग्रह करब जे केकरो जिनगीक रस्ताक बाधक नै बनिऐ।''

ज्योतिक बात सुनि जिज्ञासा करैत जेठ भाय प्रेमकुमार प्रश्न उठौलनि-

"की रस्ताक बाधा?"

"भाय साहैब, अखनि जवाबक उचित समए नै अछि। अखनि एतबे जे काल्हि चलि कऽ हमरा शोध संस्थान पहुँचा दिअ।"

ज्योतिक बात सुनि सुलक्षणी पुछलखिन-

"आइ तीनियेँ दिन बिआहक भेलह हेन, बहुत विध-बेवहार पछुआएल छह?"

"जे पछुआएल अछि ओ पाछू हएत। मुदा कोनो हालतिमे काल्हि जेबे करब। चाहे...?"

ज्योतिक संकल्पित विचार सुनि भोगेश्वर बजला-

"भाय-साहैब, काल्हिए हमहूँ चलि जाएब। सभ संगे चलब, हम हाबड़ामे उतरि जाएब आ ई सभ आगू बढ़ि जइहथि।"

सएह भेल। ज्योतिकेँ शोध संस्थान पहुँचा तीनू भाँइ प्रेमकुमार घूमि कऽ घर आबि गेला।

उर्वर भूमिक बनल परतीमे जहिना जोत-कोर आ नमीक संग बीआ पड़िते, किछुए दिन पछाति हरिआ उठैत तहिना ज्योतिक उर्वर शक्तिमे अनुसंधानक नव-नव अँकुर पानिक हिलकोर जकाँ उठए लगलनि। एक नै अनेक। जहिना पोखरिमे झिझरी जकाँ पानिक हिलकोर चलैत रहैत तहिना ज्योतिक मनमे सेहो चलए लगलनि। भूखल बेकतीकेँ अपन अन्नक भंडार भेने, वस्त्रहीनकेँ वस्त्र भेने, गृहविहिनकेँ गृह भेने जहिना विशाल जल-राशि पाबि नदी उफनि जाइत तहिना ज्योतिक मन उफनि गेलनि आइ धरिक दुनियाँ। नव दुनियाँ, नव-नव सुरूज-चान, ग्रह-नक्षत्र, नव-नव वस्तुसँ सजल दुनियाँ। ओ दुनियाँ जैठाम पहुँच मनुख सृजन शक्ति प्राप्त कऽ सृजक बनि सृजन करए लगैत। ज्योति ज्योति नै सृजक बनि गेली।

नन्दन बोनक माली जहिना अपन जिनगी ओइ बोनकेँ उत्सर्ग कऽ नव-नव फूल-फलक गाछ आन-आन जगहसँ जोहि आनि फुलवाड़ी सृजैत, जेकरा देखि माली पुत्र अपन भविस बूझि एक संग छिड़ियाएल जामंतो जिनगी लोढ़ि, फुलडाली सजा, देवमंदिर लेल रखए चाहैत तहिना ज्योतिकेँ, श्रृंगी ऋृषिक

विशाल उपवन भेट गेलनि। जइसँ ओइ माली पुत्र जकाँ अपन भविस देखए लगली। दू धारक बीच महारपर ठाढ़ भऽ, एक दिस तरा-ऊपरी गिरल मनुख तँ दोसर दिस जिनगीक खेलौना हाथमे लेने समुद्र दिस पीह-पाह करैत धारमे उधियाएल जाइत। उगैत-डूमैत देखलनि जे कियो मात्र पति-पत्नीक जीवन लीलाकेँ जिनगी बूझि तँ कियो अमरलत्ती सदृश वंश-वृक्षपर लतरबकेँ, कियो धार-समुद्रक बीच धरतीकेँ तँ कियो अकास-पतालक बीचक विशाल वसुदेवकेँ। देखैत-देखैत ज्योतिक मन बेसम्हार भऽ गेलनि। अपन जुआनीक खिलैत कलीक संग चढ़ैत तन, ऊफनैत मनकेँ सम्हारि धारमे कुदए चाहली। मुदा मनमे नचलनि माए-बाप! धरतीक प्रथम गुरु! जहिना शिक्षक सिलेटपर खाँत लिखि शिष्यकेँ सिखबैत तहिना शिष्यो ने लिखि शिक्षकसँ शुद्ध करबैत। शुद्ध होइते ओहो खाँत ने खॉत बनि जाइत। रील जकाँ माता-पिताक सटले पति देखलनि। मुदा किछुए क्षण धरि मनमे अँटकलनि। बिआहक विधो तँ पछुआएले अछि! लगले फेर माता-पिता आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेलनि!

राति-दिन ज्योतिक मन सौनक मेघ जकाँ उमड़ए-घुमड़ए लगलनि। धारमे चलैत नाह जकाँ डोलि-पत्ता हुअ लगलनि। आँखि उठा तकली तँ देखलनि जे माता-पिता छोड़ि कहाँ कियो छथि। फेर लगले मन घुमलनि तँ सभ किछु देखली। की नै अछि? मातृभूमिक संग पितृभूमि सेहो अछि। मनमे खुशी एलनि। होइत भोर कागत-कलम निकालि पिताकेँ पत्र लिखए लगली-

> ''माता-पिता, सहस्त्र कोटि प्रणाम।
>
> एक जिनगीक आखरी आ दोसरक पहिल पत्र लिखैत मन उमकि रहल अछि। तँए केतौ शुद्ध-अशुद्ध लिखा जाए, से माफ करैत सुधारि कऽ पढ़ि लेब। अपने लोकनिक सेवा, शिखर सदृश शिष्य जकाँ शिरोधार्य केने रहब। जहिना वादलक बून धरतीपर अबिते धरिया धार होइत समुद्र दिस बढ़ैत तहिना अपने दुनू धरिया देलौं। कुल-कन्या वा कुल-कलंकिनी बनब हमर कर्म छी। मुदा बेटी तँ अहींक छी। हमहूँ तँ एतै बसब। तँए ताधरिक छुट्टी असीरवादक संग दिअ जे बास बना बसए लगी।
>
> अहींक ज्योति''

पत्र पहुँचिते अह्लादसँ दुनू बेकती रघुनन्दन आ सुलक्षणी, बेटी-ज्योतिक पत्र पढ़ैक सुर-सार केलनि। पत्रपर नजरि दौगबिते दुनू बेकती अलिसा गेला। आगूमे अन्हार पसरि गेलनि। मुदा लगले मनक भक्क खोलि रघुनन्दन पत्नीकेँ कहलखिन-

> "पत्रक उत्तर देब जरूरी अछि मुदा की लिखब से फुरबे ने करैए।"

जेहने गर्म-ठंढ़क बीचक सीमा असथिर रहैत तेहने चित्ते सुलक्षणी पतिकेँ विचार देलखिन-

> "कोन लपौड़ीमे पड़ल छी। माए-बाप केकरो जनम दइ छै। जीबैले अपने ने रौद-वसात सहए पड़तै। आब अहीं कहू जे एहनो बात पत्रमे लिखि वेचारीकेँ पढ़ैक समए बड़देबै? रहल असीरवादक तँ एतैसँ दुनू परानी मिल दऽ दियौ।"



(ई कथा, युवा साहित्यकार- श्री आशीष अनचिनहार लेल)

मायराम

अमावास्याक राति, बारहसँ ऊपर भऽ गेल मुदा एक नै बाजल। डंडी-तराजू माथसँ निच्चाँ उतरि गेल। सन-सन करैत अन्हार। नअ बजेमे निन्न पड़ैवाली मायरामकेँ आँखिक नीन निपत्ता! कछमछ करैत ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत, अकछि केबाड़ खोलि बाहर निकलली तँ काजर घोराएल रातिमे अपनो हाथ-पएर नै सुझन्हि। जहिना करिछौंह दुनियाँ आँखिसँ नै देखथि तहिना दसो दुआरि बन्न मन खलियाएल बूझि पड़लनि। पुन: घूमि कऽ ओछाइनपर आबि ओंघरा गेली! दिन-रातिक बोध-विहिन मन तड़पि उठलनि-

''नैहर!''

पहिल सन्तान भेलोपरान्त सुदामा (मायराम) बाइसे बरखमे विधवा भऽ गेली। गत्र-गत्रसँ जुआनी, फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ छिटकैत! ओना सरकारी रजिष्टरमे जुआन भऽ गेल छेली मुदा बत्तीसीक अंतिम दाना नै उगल रहनि। साँपक बीखसँ करियाएल देह देखि अपनो मरनासन भऽ गेली। पथराएल आँखि टक-टक टकैत मुदा अन्हारसँ अन्हराएल। बगलमे डेढ़ बरखक बेटा उठैत-खसैत अँगना-घर घुमैत-फिड़ैत। तैबीच हहाएल-फुहाएल शंकरदेव (भाय) आँखिमे यमुनाक धार नेने पहुँचला। बहिन-बहनोइक रूप देखि अपन आँखिक नोर पोछि भागिनकेँ उठा छाती सटा, बहिन (सुदामा)केँ कहलखिन-

> ''बुच्ची होश करू। दुनियाँक यएह खेल छिऐ। अहीं जकाँ नानियोँकेँ भेल रहनि। मुदा आइ केहेन भरल-पूरल परिवार छन्हि। एक ने एक दिन, ओहिना अहूँक परिवार दुनियाँक फुलवाड़ीमे फुलाएत।''

शंकरदेवक बात सुनि सुदामाक आँखि खूगल मुदा बकार नै फुटलनि। नर-नारीक करेजो तँ दू धारक दू माटि सदृश होइत बहनोइक जरबैक ओरियानमे आँगनसँ निकलि शंकर समाज दिस बढ़ला।

पनरहम दिन बहिनकेँ संग नेने अपना गाम विदा भेला। गामक सीमानपर अबिते गाममे कन्नारोहट शुरू भेल। बच्चासँ बूढ़ धरि सुदामाकेँ

छाती लगबए आगू बढ़ल। वेचारी निसहाय भेल पड़ल। जहिना चोंगरा परहक घर खसैत, तहिना। मुदा ताधरि गामक धरोहिक अगिला अंक पहुँच गेल। एक्के-दुइए ढेरो छाती सुदामाक छातीमे सटि, चारू दिससँ पकड़ि टोल दिस बढ़ल। सुदामाक मनमे उठलनि जौं अपने कानब तँ समाजक कानब केना सुनबै। से नै तँ समाजेक कानब सुनी जे आगूक जिनगी केना जीब। बीच आँगनमे माय ओंघरनिया दैत आ दरबज्जापर पिता भुइयेँमे पेटकान देने! अपन-अपन अथाह समुद्रमे सभ डूमल। के केकर नोर पोछत! दुनू पएर धोइ भतीजी गाराजोरी केने आँगन बढ़ली। दुरखापर पएर दैतै सुदामाक रूदनसँ बहराएल-

"हे मइया...।"

जहिना धड़सँ कटल अंग छटपटाइत तहिना कामिनीक (माए) मन छटपटाइत-छटपटाइत मनमे प्रश्न-पर-प्रश्न उठए लगलनि। मुदा कोनो प्रश्नक सोझ रस्ता नै देखि काँटक ओझरी जकाँ मन ओझराए लगलनि। एक ओझरी छोड़बथि आकि बिच्चेमे दोसर लगि जाइन।

...की आगूक जिनगी लेल बेटीकेँ दोसर बिआह कऽ देब? फेर मन उनटि जान्हि, जिनगी लेल सहचर तँ आवश्यक अछि?

...की सहचर लेल पति आवश्यक अछि?

मुदा जेते असानीसँ गुंथी खोलए चाहथि ओते असानीसँ खुगबे ने करनि। तैबीच दोसर प्रश्न अकुँरि जाइन।

...बेटीक संग नातिओ अछि। जौं बेटी दोसर घरकेँ अपन घर बनौत तँ नातिक...?

पुत्र हत्याक पाप केकर कपार चढ़त? की कुत्ता जकाँ पछिलग्गू एहेन सुकुमार फूलकेँ बना देब। अखनि ओ दूधमुँह अछि, की बूझत? अपन भूमि आ आनक भूमिक मर्जादा एक्के रंग होइत। की दोसरो घरमे ओहने ममता माइक भेटतै? मनुक्खेक क्रिया-कलाप ने कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैए। घुरियाएल मनकेँ राह भेटलनि। सुफल नारी जिनगी तँ वएह ने छी जेकरा आँचरक लाल मातृत्व प्रदान करैए। जइसँ वीणाक झंकृत मधुर स्वर हृदैकेँ कम्पित करैए। से तँ भेटिए गेल छै। मुदा जहिना ठनकैत अकाससँ ठनका खसैत तहिना मनमे खसलनि-

“मुदा समाज?”

की मनुख-पोनगैक स्थिति समाजमे जीवित अछि?

सुदामाक सम्पन्न पितृ परिवार। अदौसँ श्रम-संस्कृतिक बीच पुष्पित-पल्लवित परिवार। जइसँ रग-रगमे समाएल अपन संस्कृति। ओना सम्पन्नताक सीमा असीमित अछि मुदा अपन आँट-पेट देखि अपन (परिवार) जिनगीक स्तर बना चलब सम्पन्नताक अनेको कारणमे एक प्रमुख छी। तँए सम्पन्न परिवार। ओना आर्थिक दृष्टिए सुदामाक बिआह दब परिवारमे भेल छेलनि मुदा बेवहारिक दृष्टिए बरबरिमे छेलनि। कम रहितो गोरहा खेत छेलनि जइसँ खाइ-पिऐक कोताही नै। किछु आगूओ बढ़ि ससरैत। सालक तेरहम मासमे घरक कोठी-भरली झाड़ि इजोरिया दुतियासँ भागवत कथाक संग हरिवंश कथा सुनि, भोज-भनडारा कऽ सामा-चकेबा जकाँ आगू दिस बढ़ैत।

बेटाक पालन आ धर्मक काज देखि अपनो गाम आ चौबगलीओ गामक लोक सुदामक नाओं मायराम रखि देलकनि। बच्चासँ बूढ़ धरि माइएराम कहए लगलनि।

सुदामाक पिता रविशंकरक परिवारमे चूल्हि नै पजड़ल। जखनि सुदामा आएल तखनि जे कन्नारोहट शुरू भेल, से भरि दिन होइते रहि गेल। कखनो बेसी तँ कखनो कम। चूल्हि नै पजड़ने टोल-पड़ोसक परिवारसँ थारी-थारी भात-दालि एते आएल जे राति धरि चलैत रहल।

सायंकाल रविशंकर आँगनक ओसरपर बैस, सुदामाक भावी जिनगी लेल पत्नीओ आ बेटो-पुतोहुकेँ बैसाए विचार करए लगला। विचारोत्तर निर्णए भेल जे काल्हिए शंकरदेव ओइठाम -सुदामाक सासुर- जा खेती-गिरहस्ती ताधरि सम्हारथि जाधरि बच्चा-सुदामाक बेटा जुआन नै भऽ जाए। संग-ईहो भेल जे छह मास सुदामा सासुर आ छह मास नैहरमे रहत।

अठारह बरख पुरिते राहुलक बिआह भऽ गेल। नव परिवार बनि ठाढ़ भेल। शंकरदेव अपना ऐठाम चलि एला।

तीन साल पछाति पिता रविशंकर आ पाँच साल पछाति माए शंकरदेवक मरि गेलनि। मुदा दुनूठामक परिवारमे कोनो कमी नै रहल। हवाइ-जहाज जकाँ तेज गतिए तँ नै मुदा असथिर सवारी -टायरगाड़ी- जकाँ परिवार आगू मुहेँ ससरए लगल।

मायरामक प्रति समाजक नजरिया सेहो बदलल। समाजक आन विधवा जकाँ नै, जे कियो अशुभ बूझि कनछी कटैत तँ कियो पशुवत बेवहार लेल मरड़ाइत।

तीर्थस्थान जकाँ मायरामक परिवार बनि गेलनि। साले-साल भागवत कथाक संग हरिवंश कथा आ भोज-भनडारा कऽ समाजकेँ खुआ सालक विसर्जन मायराम करए लगली।

पाँच बरख पछाति मायरामक भरल-पुरल नैहर-शंकरदेवक परिवार-कोसीक कटनियासँ धार बनि गेल। गामक बीचो-बीच सनमुख धार बहए लगल।

घटनो अजीब घटल। चारि बजे करीब बाढ़िक हल्ला गाममे भेल। किरिण डुमैत-डुमैत धारक कटनिया शुरू भेल। गामक सभ बाध नदिया गेल। उत्तरसँ दछिन मुहेँ बहए लगल। बाढ़िक बिकराल रूप देखि गामक लोक माल-जाल, बक्सा-पेटीक संग ऊँचगर-ऊँचगर जमीनपर पहुँचल। नट-बक्खो जकाँ नव बास बनि गेल।

लोकसभ बाढ़िक गूंगूआहटि सुनि-सुनि सभ किछु बिसरि परान बँचबैक बात सोचए लगल। चारू कात बाढ़ि पसरल। जइसँ ईहो डर होइत जे जौं कहीं अहूपर पानि चढ़त तखनि की हएत? अन्हरिया राति, हाथ-हाथ नै सुझैत। जीवन-मरनक मचकीपर सभ झुलए लगल। भूख-पियास मेटा गेल। जहिना दुखित नव बिआएल गाए-महिंस बेथित आँखिए बच्चाकेँ देखैत तहिना सभ माए-बापक आँखि बाल-बच्चापर। मुदा मनुख तँ मनुख छी नै कि जानवर। जेना जानवर हरिअर घास देखि बच्चो आगूक लूझि कऽ खा लइए तेना मनुखो करत? बाल-बच्चा लेल तँ मनुख अपन खूनकेँ पानि बनबैत, अपन सुआदकेँ छोलनी धिपा दगैत, अपन मनोरथ बच्चामे देखैए। अपन जिनगीकेँ बलिवेदीमे आहूत दइए।

भोरहरबामे हल्ला भेल जे बीस नमरी पुल कटि कऽ दहा गेल। पुलक समाचार सुनि सबहक छाती डोलए लगल। पूव दिसक रस्ता बन्न भऽ गेल। किछुए काल पछाति पुन: हल्ला भेल जे बेटा संग रोगही पानिमे डुमि गेल। किछु काल धरि तँ हल्लामे बाते नै फुटैत मुदा तोड़मारि हल्लामे विहिआति-विहिआति समाचार विहिआ गेल। भाँसि कऽ केते दूर गेल हएत तेकर ठेकान

नै तँए कियो आगू बढ़ैक हूबे ने केलक। जहिना एक टाँग टुटने गनगुआरि नै नेंगराइत तहिना एक गोटे मुइने समाज थोड़े नेंगराएत। सभ दिन होइत एलै आ होइत रहतै।
हल्ला शान्त होइते शंकरदेव पत्नीकँ कहलखिन-

"आब जान नै बँचत।"

पत्नी पुछलखिन-

"एते अन्हारमे केतए जाएब। भने ऐठाम छी।"

तैपर पति पुछलखिन-

"जौं अहूपर बाढ़ि चढ़ि जाएत?"

"सभ तूर संगे कोसीमे डुमि जाएब। कियो बँचब तखनि ने दुख हएत। जौं दुख केनिहारे नै रहब तँ दुख केकरा हएत।" पत्नी कहलखिन।

पौरुकी घुटकल। आन-आन चिड़ै सुतले रहए। पौरुकी अवाज सुनि शंकरदेवक मनमे दुबिक नव मुड़ी जकाँ, नव चेतना जगलनि। बजला-

"भिनसर होइमे देरी नै अछि। जँए एते काल तँए कनी काल आरो। दिन-देखार तँ असगरो लोक अमेरिका चलि जाइए। अपना सभ तँ बाधक थोड़े रस्ता काटब।"

किरिण उगैसँ पहिने ऊँचकापर पानि चढ़ए लगल। चढ़ैत पानि देखि हरविर्ड़ो भेल। गाए-महिंस, बक्सा-पेटी छोड़ि सभ अपन जान बँचबए विदा भेल। जहिना वैरागी दुनियाँकँ मायाजाल मानि, छोड़ि, आत्मचिन्तनमे लगि जाइत तहिना माल-असबाव छोड़ि सभ विदा भेल। तही बीच बाँसक झोंझमे मैनाक झौहरि भेल। जेना केकरो वोनबिलाड़ि पकड़ि नेने होउ, तहिना।

पूब दिस फीक्का गुलावी जकाँ अकासमे पसरए लगल। मुदा बिलटैत जिनगी आ डुमैत सम्पतिक सोग अन्हारकँ आरो बढ़बैत। सूखल जमीनपर पहुँचिते छोट-छीन आशा शंकरदेवक मनमे जगलनि। मुदा चारू बच्चो आ पत्नीओक मनमे दुधाएल चाटल दानाक खखरी जकाँ। बेर-बेर शंका खिहारैत

जे हो-न-हो फेर ने आगूएसँ बाढ़ि चलि आबए। मिरमिरा कऽ पत्नी शंकरदेवकँ पुछलकनि-

"एते लोकक गाममे एक्कोटा संगी नै देखि रहल छी?"

"सभ अपने जान बँचबै पाछू अछि तखनि के केकरा देखत।"

"जाबे लोक, भरल-पूरल रहैए ताबे दुनियाँ हरिअर बूझि पड़ै छै। मुदा...।"

"हँ, से तँ होइते छै। मुदा...।"

"हँ ईहो होइ छै। अखनि माए जीबैए, केतए बौआएब। बच्चो सबहक मात्रिके भेल, अपनो नैहरे भेल आ अहूँक सासुरे।"

पत्नीक बात सुनि शंकरदेव गुम भऽ गेला। मनमे चूल्हिपर खौलैत पानि जकाँ विचार तर-ऊपर हुअ लगलनि। बजला-

"कहलौं तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सासुरसँ नीक बहिन ऐठाम हएत।"

"केना?"

"जइ दिन बेचारीक ऊपर विपति आएल छेलै तइ दिन यएह देह अपन घर-परिवार छोड़ि ठाढ़ भेल छेलै। आइ, की हमरे गाम-घर मेटा रहल अछि आकि ओकरो नैहर।"

"अहाँकँ जे विचार हुअए।"

"विचारे नै, विपतिमे लोकक बुधि हरा जाइ छै। जइसँ नीक-अधलाक विचार नै कऽ पबैए। मुदा अहीं कहूँ जे सासुरमे कान्हपर कोदारि लऽ कऽ खेत-पथार जाएब से केहेन हएत। अपन जे दुरगति हएत से तँ हेबे करत मुदा दुनू परिवारक -सासुर नैहर- की गति हएत।"

बाढ़िक समाचार इलाकामे पसरि गेल। मायरामक कानमे सेहो पड़लनि। भाय-भौजाइक आशा-बाट तकैत मायराम बेटा राहुलकँ संग केने

आगू बढ़ली। मुदा किछु दूर बढ़लापर सोगसँ पथराएल पएर उठबे ने करनि। बाटक बगलक गाछक निच्चाँ बैस बेटाकेँ कहलखिन-

"बौआ, पएर तँ उठबे ने करैए। केना आगू जाएब? ता तूँ आगू बढ़ि कऽ देखहक।"

छबो तूर शंकरदेव ऐ आशासँ झटकल अबैत जे जेते जल्दी पहुँचब ओते जल्दी बच्चा सभकेँ अन्न-पानिसँ भेँट हेतै। रतुको सभ भुखले अछि। तैबीच राहुलक नजरि मामपर आ मामक नजरि भागिनपर पड़ल। नजरि पड़िते राहुल दौग कऽ ठाढ़े मामाकेँ गोड़ लागि मामीक कोराक बच्चाकेँ लऽ बाजल-

"माएओ अबैए मुदा डेगे ने उठै छेलै। आगूमे बैसल अछि।"

राहुलक बात सुनि मामी बच्चा सभकेँ कहलखिन-

"भैयाकेँ गोड़ लगहुन।"

बच्चाकेँ कोरामे नेने आगू-आगू आ पाछू-पाछू सभ कियो विदा भेला। सभसँ पाछू शंकरदेव अपने। मन पड़लनि रतुका दृश्य। केना छनमे छनाक भऽ गेल! जिनगी भरिक जोड़ियाएल घरक वस्तु-जात आगि लगने आकि बाढ़ि एने केना लगले नास भऽ जाइ छै। मान-प्रतिष्ठा, गुण-अवगुण, केना छनेमे केतए-सँ-केतए चलि जाइ छै। ठीके लोक बजैए जे दिन धराबे तीन नाम। अपने छी जे एक दिन बहिनक रक्षक बनि ऐ गाममे छेलौं आ आइ...। एक दिन गाड़ीपर नाह आ एक दिन नाहपर गाड़ी। माटि-पानिक खेल छी। गंगा-यमुनाक बीच केतौ माटिओ छै आकि पानिए-पानि छै!

किछु फरिक्केसँ भाय-भौजाइकेँ अबैत देखि मायरामक मन ओइ धरतीपर पहुँच गेलनि जे सात समुद्रक बीच अछि। एक ओद्रक रहितो एक भिखारी दोसर राजा! परोपट्टाक लोक सिनेहसँ मायराम कहै छथि मुदा भैयाकेँ की कहतनि? की भैयाक कर्म विगड़ल छन्हि? एक परिवारक बँचौल कर्म छन्हि। चान, सुरूज, धरती, ग्रह-नक्षत्र इत्यादि तँ अपना गतिए करोड़ो बरखसँ निअमित चलि रहल अछि आ चलैत रहत, की मनुखोक गति ओहन भऽ सकैए? आकि चाने-सुरूज जकाँ मनुखोक चलैक एकबटीए अछि? ब्रह्मक अंश जीव रहितो की फुलझड़ीक लुत्ती जकाँ नै अछि? जेतए जेहेन जलवायु

तेतए तेहेन उपजावारी! जौं केतौ वायु प्राणक रूपमे घट-घटकेँ आगू बढ़ैक प्रेरणा दैत तँ वएह विषाक्त बनि प्राण नै लैत?

गोलाक चोटसँ जहिना पोखरिक पानिमे हिलकोर उठैत आ आस्ते-आस्ते असथिर होइत चिक्कन आँगन जकाँ सहीट बनि जाइत तहिना मायरामक मन सहीट भऽ गेलनि। मुदा लगले नजरि उड़ि भतीजीपर गेलनि। भतीजीपर पहुँचिते मन तड़पए लगलनि। बाप रे बाप, एहेन दुरकालमे भैया केना इज्जत बँचौता। अपनो लग जमा किछु तँ नहियेँ अछि साले-साल हिसाव फरिया लइ छी। हे भगवान जौं केकरो दुखे दइ छिऐ आकि सुखे दइ छिऐ तँ तुलसी पात आकि दुबिक मुड़ी जकाँ खोंटि-खोंटि किए ने दइ छिऐ जे गुलाब-गेन्दा तोड़िए कऽ दऽ दइ छिऐ? लगले नजरि मायराम छिप्पा जकाँ छिहलि अपन मातृत्वपर पहुँच गेलनि। केना बेटाकेँ पोसि-पालि ठाढ़ केलौं आ ई सभ...। लुधकी लागल एकटा गाछ फड़बे करत तइसँ गामक सबहक मुँहमे थोड़े जाएत। जेते मनुख अछि ओकरा तँ धरतीसँ अकास धरि चाहिए। तखनि ने जीबैक आजादी भेटतै। मुदा लगले जहिना पानि ठंढ़ेने बरफक रूप लिअए लगैत तहिना दूधसँ उपजैत दही जकाँ मायरामक मन सकताए लगलनि। साँस सुषुमा गेलनि। मनमे खौललनि- नैहर मेटा गेल तँए कि सासुरो मेटा गेल। जहिना भैया नैहरमे भैया छला तहिना अहूठाम भैया रहता। भगवान अपन कोखि अगते लऽ लेलनि तँए कि ओकरा -भतीजी- अपन कोखिक नै बुझबै। ऐठाम जे अछि ओ की भैयाक नै छियनि? खेत-पथार, घर-दुआरि चलि गेलनि आकि हाथो-पएर चलि गेलनि?

गुमे-गुम, जहिना मृत्युक अवसरपर गुम भऽ स्मरण कऽ निराकरणक बाट जोहल जाइत, तहिना सभ घरपर पहुँचला। ताधरि पुतोहु-रोहितक पत्नी-हाँइ-हाँइ कऽ खिचड़ि आ अल्लूक सन्ना बना, बाट तकैत रहथि। सबहक आँखि सभ दिस हुलैक-हुलैक बौआइत। तैबीच राहुलक कोरक छोटका बच्चा, घर देखिते, बाजल-

"दीदी, बड़ भूख लगल अछि?"

बच्चाक बात सुनि मायरामक भक्क टुटलनि। अनासुरती मन पड़लनि बटोहीकेँ जहिना इनारपर ठाढ़े-ठाढ़ पानि पिऔल जाइत तहिना ने अखनि ईहो सभ छथि। नहाय-धोयमे अनेरे देरी किए लगाएब। बजली-

‘‘कनियाँ, भरि रातिक थाकल-ठेहियाएल सभ छथि तँए पहिने किछु खुआ कऽ आराम करए दिअनु। गप-सप्प पछाइतो हेतै। भोजन बादेक आराम तँ सोग कम करैक उपए छी।’’



गोहिक शिकार

बच्चासँ सिआन धरि, जाबे तीनू धाम-सिंहहेश्वर, कुशेश्वर आ जनकपुर नै देखने छेलौं ताबे अपनो बाबा आ समाजिको काका, बाबासँ सुनैत रहलौं जे तीनू धाम एक्के रंगक दूरीपर अपना सभकेँ अछि। ई भिन्न बात जे जैठाम पृथ्वीपुत्री सीता छथि तैठाम सिंह सदृश सिंहेश्वरबाबा सेहो छथि। मुदा आब जखनि तीनू धाम देखलौं तखनि जौं विचारै छी तँ स्पष्ट दूरी बूझि पड़ैए।

बान्ह-सड़कक अभावमे गामसँ गाड़ी-सवारी नै तँए नाहसँ कुशेश्वर आ सिंहेश्वर आ जनकपुर पएरे गेलौं। भलहिं अकास मार्गसँ एक रँगाह होइ मुदा जमीनी रस्तामे अंतर अछि। कहैले तँ कोसीओ धार तँ टपै पड़ैए मुदा सप्तकोसीओसँ बिकट रस्ता। ओना जखनि जाए लगलौं तखनि सात दिनक बटखरचाक संग धानक जुट्टी-चढ़बैले- लऽ नेने रही तँए चिन्ता नहियेँ जकाँ रहए। मुदा कोसीक लहरि देखि मन डराएल जरूर। जनकपुरक ठेही बाट तँए कच्चीओ रहने पएरे चलैमे सुगम अछि। जहिना छोट-छीन शब्द संगीक संग -संयुक्ताक्षर- नम्हर बनि ओझरी लगबैत जाइत तहिना कुशेश्वरक रस्ताक धार सभ केने अछि। कोन धार केतए मिल अपनो बदलि गेल आ दोसरोकेँ बदलि गंगो-ब्रह्मपुत्रसँ विकराल रूप बना नेने अछि। जइसँ टपब समुद्र जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा बिना टपने कुशेश्वर पहुँचब केना?

संयोग नीक जे धार सबहक बीच मातृक अछि। कातिक बितैत ममियौत भाय नाह बनबए अपना गाम पहुँचला। जे नाह चलनि ओ अहीबेर भँसियाएल अबैत एकटा ढेंगमे लगि फुटि गेलनि। हुनका सबहक ने गाछी-बिरछी बाढ़िक पानि एने सूखि गेलनि मुदा अपना सबहक तँ बँचल अछि। अपने जामुन गाछ देखा देलियनि। सुरेब गाछ देखि मन मुस्कीआ गेलनि। हलसि कऽ कहलनि-

> ''बौआ, नाहो भऽ जाएत आ हरिसो, पालो, चौकी भऽ जेतह आ साल भरिक जारैनो भऽ जेतह।''

जारनिक नाओं सुनि कहलियनि-

> ''भैया, माले-जाल तेते अछि जे ने जारनिक दुख होइए आ ने खेत सभमे बजरूआ खादक।''

जलखै करैकाल कहलनि-

“जखनि लकड़ीक गर लगिए गेल तखनि चलह बनौनिहारोकेँ कहि हाथ लगाइए देब।”

कहलियनि-

“हँ तँ बेजाइए कोन।”

पान-सुपारी मुँहमे दैते डेग बढ़ौलनि। पाछू-पाछू विदा भेलौं। बरहीक घर लगेमे तँए जाइमे देरी नहियेँ लागल। पहुँचिते राजिन्दर पूछि देलक-

“पाहुन कहाँ रहै छथि” कहि हाथेसँ चौकीपर ओछाएल ओछानिकेँ हाथेसँ झाड़ए लगल। दुनू भाँइ बैसलौं। बैसिते भाय पुछलखिन-

“मिस्त्री एकटा नाह बनाएब।”

भैयाक मुँह दिस राजिन्दर ठकुआएल टकर-टकर देखए लगल। किछु फुड़बे ने करै जे बाजत। ठेही परहक बरही हर, पालोक संग हँसुए-खुरपी बनौनाइ आ फाड़े पिटनाइ खाली बुझैत। राजिन्दरकेँ ठकुआएल देखि राजिन्दरक पीसा जे दू दिन पहिने आएल छला, पुछलखिन-

“केतेटा नाह बनाएब?”

भाय कहलखिन-

“तेरह हाथक।”

“घरैया आकि घटवारिबला?”

“घरैए।”

मने-मन नाहक पेटक हिसाब जोड़ि पिसा कहलखिन-

“पनरहिया लगि जाएत। दू दिन एनो भऽ गेल।”

पीसाक बात सुनि राजिन्दक मन हलसि गेल। जहिना हँसैत फूल सुगंध बना भाय वायुक संग वायुमंडलमे विचरण करैत तहिना हलसल मन राजिन्दरक बाजि उठल-

“पीसा, एक पंथ दू काज। अहाँक पहुनाइओ सुतरि जाएत आ हमरो एकटा लूरि बढ़ि जाएत। उपकार तँ नफ्फामे हएत।”

ओकर बात सुनि अपनो मन कलसि गेल जे भरि आँखि बनबितो देखब आ जाबे नाह रहत ताबे भैयौ गुण गबैत रहता। तँए स्टेशनक कुल्ली जकाँ, जे हैयौ, हैयौ कऽ सिमटीक बनल पुलक पायाकेँ ठेलैत तहिना ठेलैत बजलौं-

“भैया, अखनि ठरपर छी, ऐठीन जे काज हएत से नीक हएत। अनभुआर जगहमे पच्चीसटा बिहंगरा होइ छै?”

सह पाबि राजिन्द फुदकि उठल-

“पीसा, कमाइ अपन अपने राखब। खेनाइक चिन्ता नै करू।”

कमाइ देखि पीसा कहलखिन-

“भाय, जहिना अहाँ धारऽ कातक छी तहिना हमहूँ छी। पूवारि पार रहै छी।”

बनाइक गप-सप्प भेल। मुदा खेनाइक गप-सप्प भेबे ने कएल। किएक तँ हुनका दुनू गोटेकेँ बूझल। दोसर दिन जखनि काज शुरू भेल तखनि बुझलौं।

दोसर दिन जामुनक गाछ खसा, पाँगि-पुँगि, तेसर दिन चिराइमे हाथ लगि गेल। भरि दिन भैया गमछाक अराम कुरसी बना मिस्त्रीए लग बैस अपन देश-कोसक महाभारत सुनबए लगलखिन। खनि अँगना खनि खेत खनि भैया लग आबि-आबि हाजिरी पुरबए लगलौं।

बारहम दिन नाहक सकल ठाढ़ होइते भैयाक मन जेठुआ बाढ़ि जकाँ फुलाए लगलनि। जहिना धार फुलेने चरो-चाँचरमे फूल पकड़ि लइ छै तहिना अपनो मन फुला गेल। पथिया नेने माए तख्ताक छोलनि लेल पहुँचिले छेली आकि पछबारि बाधसँ घुमि पहुँचलौं। मुस्की दैत भैया कहलनि-

“बौआ, कुशेसर चलह।”

भैयाक बात सुनि माए कहलखिन-

“बहू दिन गेना भऽ गेल।”

भैयाक मनमे कि रहनि से तँ नीक नहाँति नै बुझलौं। मुदा अपना भेल जे भरिसक रस्तामे छीना-छीनी दुआरे बजला। संगीक जरूरति छन्हि। जहिना नाहक सभ काज भेलनि तहिना सुहरदेसँ गामो पहुँचाएब जरूरी अछि। के कहलक रस्ता पेरामे नाहक संग जानो चलि जान्हि। कहलियनि-

“कएक गोटेकेँ लऽ जेबनि?”

“सभ तूर तलह।”

सभ तूरक नाओं सुनि माए बजली-

“बौआ, सभ तूर जे जाएब से बनत। कोनो कि नोकरिया-चकरियाक घर छिऐ जे ताला लगा दियौ आ विदा भऽ जाउ। चारिटा माल अछि। धानक लड़ती-चड़ती अछि, तखनि?”

बिच्चेमे भैया कहलखिन-

“एको गोरे जौं पीठपोहू रहत तैयौ चलि जाएब।”

कुसेसरेक रस्तामे मातृक। मामा गामसँ चारिए कोस आगू-दछिन-कुसेसर। कहलियनि-

“भने कुसेसरो बाबाक दर्शन भऽ जाएत आ दू दिन मात्रिकोमे रहि जाएब।”

नाह बनि गेल। जेते छाँट-छुट, तख्ता उगड़ल सभ सेरिया कऽ रखि लेलौं। काल्हि भोरमे जाएब। पुछलियनि-

“भैया, रस्ता भँजियाएल अछि किने?”

हँसैत बजला-

“तूँ सभ ठेही परहक छह तँ रस्ता तकै छहक। हमरा सभ लिए जेहने धार तेहने डूमल खेत। सुपेन (सुपर्णा) मे होइत गहुमा पहुँचब। गहुमासँ भुतही कमलामे चलि जाएब। जखने कमला

पहुँचलौं तखने बुझह जे धाम पहुँच गेलौं। घुमती काल सिरा रहत तँ एक गोरे गुन खिंचब दोसर गोरे नाहपर रहब।''

माएकेँ कहलिऐ-

''खेबा-खरचा-बटखरचा- ओरिया मोटरी बान्हि दिहनि। जाइ बेरक आशा नै रखिहें। हड़बड़मे कोनो चीज छूटि ने जाए।''

माए कहलक-

''तीन सालसँ घीओ रखल अछि ऊहो नेने जइहऽ।''

''बड़बढ़ियाँ। मोटरीएमे बान्हि दिहनि।''

''हरा-तरा जेतह।''

''से की अखनि गरमी मास छी। ओ तँ अपने तेहेन जनमल हएत जे बिना मुन्नोक काज चलि जाएत।''

''मकैक नेरहाबला मुन्ना अछि। ओ छिछलाह होइए। कहीं नाहक झमारमे छिछैल कऽ खुजि जेतह तखनि तँ हराइए जेतह।''

''दोसरे मुन्ना लगा दिहनि?''

''बड़बढ़ियाँ। नेरहाबला बदलि कटकटा कऽ कोढ़िला लगा देब। ओ थोड़े छिछलाह होइए।''

जाड़क मास रहने भदबारि जकाँ ने धारे नचैत आ ने चरे-चाँचरक ओ रूतबा। भट्ठा दिस जाएब छल तँए मिसिओ भरि भैयाकेँ थकान नै बूझि पड़नि। जहिना ढलानपर गाड़ी तहिना सिरासँ भट्ठाक नाह। माथपर गोसाँइ देखि कहलियनि-

''भैया, पानि तँ अछिए केतौ खा लिअ।''

कहलनि-

''गर लगा कऽ ने नाह लगाएब।''

किछु दूर आगू बढ़लापर धारेकातमे एकटा पीपरक गाछ। खूब झमटगर। एक भागक (धार दिसक) अदहासँ बेसी सिर अलगल रहए। नाह

बन्हैक सुविधा आ छाहरिओ तहिना। धारक पेटेमे चहटी जकाँ। जैपर घास जनमि गेल। पवित्र जगह देखि भैया चपचपा गेला। बजला-

"बौआ, नीक जगह अछि। कनीखान अरामो कऽ लेब।"

कनी पाछूए रही आकि भैया कहलनि-

"बौआ, तूँ नाहेपर रहऽ, हम बन्है छी।"

कहि धाँइ दऽ मांगिसँ कूदि रस्सी पकड़ने हाँइ-हाँइ कऽ सिरमे लपटए लगला। नाह ठाढ़ भेल। उतरलौं। ओइठाम धार भकमोड़ नेने। एतेकाल दछिन मुहेँ आब पछिम मुहेँ भऽ गेल। उतरि कऽ आगू तकलौं तँ बूझि पड़ल जे मरकाठीक डेंगरी सभ छिड़ियाएल अछि। रहि-रहि कऽ गन्ह सेहो अबै। कहलियनि-

"भैया, ई तँ मुर्दघट्टीमे चलि एलौं। ऐठाम कन्ना रहब आ खाएब?"

मुस्कीआइत भैया कहलनि-

"ई सभ अधजरू डेंगरी नै गोहि सभ छी। रौद तापैले ऊपर आएल अछि।"

भैयाक बात सुनि डरे मन डोलि गेल। आँखि उठा-उठा निहारि-निहारि देखए लगलौं। मन पड़ल कलकत्ताक चिड़िया खानाक गोहि। बाप रे! ई तँ जीविते लोककेँ गीर जाइए। माघक जड़ाएल बच्चा जकाँ देह डोलए लगल। मुदा हुनका लेल धैनसन।

ओइ भकमोड़पर खूब नम्हर मोइन। जेहने नम्हर तेहने गहींर। जेठोमे अगम पानि रहैत। तैबीच भुक दऽ पारा जकाँ शोंश भुक दऽ उगल आ डूइम गेल। आरो डर बढ़ि गेल। कहलियनि-

"भैया, नाह पार केना करब। ई तँ तेहेन-तेहेन पनियाँ जानवर सभकेँ देखै छी जे एक्के हुड़कान मारत तँ नउए उनटा देत।"

मुदा ओ मुस्कीआ कऽ रहि गेला। जेना-जेना डर बढ़ैत जाए तेना-तेना आँखि निड़ारि-निड़ारि देखए लगलौं। कट्ठा पनरहेक मोइन। धारक पानि

चकभौर लिअए! कखनो-कखनो बुल-बुला सेहो निकलै। पछिया हवाक संग दुरगंध पसरि गेल। कहलियनि-

"भैया, कोनो सड़ैत मुरदाक गन्ह छी।"

भैया कहलनि-

"ऊँहू भरिसक मलेछ छी।"

अपन विचारकेँ मजगुत करैत पुछलियनि-

"जौं मरचर नै छी तँ मलेछ केतएसँ आएल?"

आब मुदा हुनको मनमे डर पैसलनि। बजला-

"एक बेर सुहतरिया घाटमे मलेछ नाहे उनटा देलकै।"

बजैकाल तँ बाजि गेला मुदा लगले बात बदलि बजला-

"बौआ, कोशिकन्हाक मलेछ की लोककेँ किछु कहै छै। देखबहक जे अपियारी सभमे एक दिस ओ माछ बिछैत रहतह आ दोसर दिस मलेछ सभ। तोरा इलाकामे परसौती स्त्रीगणकेँ मलेछ बेसी हरान करैए।"

अपनो मन मानि गेल। किएक तँ एक खुट्टापर गाए-बड़द पटका-पटकी करैए, मुदा दोसर खुट्टापर संगी पशु बनि दूधक धार बहबैए।
तैबीच लोकक सुन-गुन पाबि गोहि सभ धाँइ-धाँइ पानिमे कूदल। मोइनसँ कनियेँ हटि एकटा पीराड़क गाछ भीतापर। गाछ तँ बड़ नम्हर नै मुदा साहोरे जकाँ पकठाएल। गाछक निच्चाँमे एक गोटे ठाढ़। भैया कहलनि-

"हइ वएह मलेछ छी। ओकरे महक अबैए! अखने पीड़ारक गाछपर सँ उतरल।"

डरो हुअए मुदा देखैओक मन हुअए। लोके एतेटा। कहाँ दन लंकाक राछस जकाँ मलेछ बड़ी-बड़ी होइए। से कहाँ छै। ओना भूत-परेतकेँ नै मानै छी। किएक तँ मनुखक आत्मा पंचतत्वमे विलीन भऽ जाइ छै आ शरीरकेँ या तँ जरा देल जाइ छै वा माटिक भीतर आकि बाहर किड़ी-मकौड़ी, चिड़ै-

चुनमुनी खा लइए। तखनि भूत जनमत कथीक।
दुनू भाँइ हिआसि-हिआसि ओकरा देखए लगलौं। लोक रहैत तँ दोसरो संगी रहितै। से कहाँ छै। भूत-परेत तँ असगरो रहैए। ओकरा कि कोनो चीजक डर होइ छै। मुदा ओ मोइन दिस बगुला जकाँ धियान लगौने। सहसा ओ मोइनकेँ गोड़ लागि पानिमे पैस गेल। रस्सीक एकटा भीड़ी डाँड़मे बन्हने आ हाथमे मोटका तारक काँकोड़। रस्सीक एक ओर गाछमे बान्हल। मोइनमे डूमल। अनासुरती मनमे उठल जे भरिसक अहिना लंकाक मोती बाहर करैबला पनिडुब्बा, उत्तर सागरक सील ह्वेल आ बालरसक शिकारी जकाँ ईहो पानिक शिकारी छी।

किछु क्षणमे उक्-उक्क अवाज उठलै आ ओ लपकि कऽ डारि पकड़ि ऊपर आबि गेल। ऊपर आबि दोहरा कऽ गोड़ लगलक। ताबे बिसवास भऽ गेल जे ओ आदमीए छी मलेछ नै। मुदा मलेछे जकाँ गन्ह! पातर साँस बना लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे ओ आदमी दुनू बाँहिमे गोहिएक खलड़ीक खोल बना पहिने अछि। जाड़े थरथराइत! बेर-बेर हाँफी होइ। जेना थाकल हुअए। ''ओइ ओ! ओइ ओ''क अवाज तीन-चारि बेर लगौलक। अवाज सुनि लगले बीस-पच्चीस गोटे जमा भऽ गेल। जेना लगेक बोन-झाड़मे नुकाएल रहल हुअए। जमा होइते सभ रस्सा पकड़ि खिंचए लगल। आ बाजए लगल-

''ले जवान!''

''हैसा।''

''आगू बढ़ैत!''

''हैसा।''

रस्सा-कस्सी शुरू भेल। मोइनमे जेना बिहाड़ि आबि गेल! महजाल लगौला पछाति जेना माछ सभ तड़पैत, तहिना।

करीब डेढ़-दू घंटा रस्सा-कस्सी चलल। कखनो ऊपर दिस खिंचै तँ कखनो मोइन दिस। मोइन दिस खिंचते भड़भड़ा कऽ सभ खसि पड़ै।

करीब दस-एगारह हाथक गोहि ऊपर भेल। ऊपर होइत तीन-चारिठाम बाँसक टोन दऽ चरि-चरि, पँच-पँच आदमी बैस गेल। गोहिक ठोंठमे रस्सा कसाएल! तरूआरि जकाँ एकटा तेजगर अस्त्रसँ एक गोटे हाँइ-हाँइ चीर

देलक। मुदा अखनो धरि सभ दबनहि रहल। किछु काल पछाति प्राण छूटि गेलै। प्राण छुटिते बाँसक टोन हटा काटए लगल। काज अगुआएल देखि लग जा पुछलिऐ-

"केना-केना गोहि पकड़ै छहक?"

अनभुआर बूझि ओ अदमी हाथक इशारासँ गाछक छाहरिमे चलैक इशारा केलक।
गाछक छाहरिमे बैसिते हमर नाओं पुछलक कहलिऐ, हमहूँ पुछलिऐ तँ बाजल-

"भोला तीयर।" कहि गोहि केना पकड़ै छै से कहए लागल-

"पानिमे पैस गोहि लग जाइ छिऐ। नम्हर अन्दाजि कऽ ओकर नांगरिसँ बँचैत अपन केहुनी आगू केने रहलौं। आँखि ने तँ मुँह बौने रहल। जौं मुँह बौने रहल तँ हाँइ-हाँइ कऽ काँकोर मुँहमे दऽ दइ छिऐ। लोहाक काँकोर। लोकक देहक गन्ह गोहिकेँ मतिसून बना दइ छै। खाली नांगरिसँ अपन बँचाउ केने रहै छी। ओना सभ कमला माइक परतापसँ होइए। ने तँ लोकक बुत्ते हएत!"

हम पुछलिऐ-

"एकरा की करबै?"

भोला तीयर बाजल-

"मासु खेबै आ खलड़ी बेचबै।"

सुनि गुम्म भऽ गेलौं। देशक दृश्य आँखिपर लटकि गेल। जइ देशमे कियो भरि दिन भोग करै पाछू बेहाल रहैए तँ कियो जानक कीमतपर दुरगंध मासुक पाछू बेहाल अछि। हाय रे हाय!
हमरा गुम्म देखि ओ बाजल-

"कोन गाँ रहै छी?"

कहलिऐ-

"बेला रहै छी।"

कनी मन पाड़ि पुन: पुछलक-

"रौदी तीयरकैँ चिन्है छिऐ?"

कहलिऐ-

"ममियौत भायक गामक लोककैँ किए ने चिन्हबै। गाम की कोनो शहर-बजार छी जे अपनो समांग देखि कऽ मुँह घुमा लेत।"

"ओ सादू छिआ।"

"भैयारीए जकाँ अछि।"

भैयारी नाओं सुनि बाजल-

"तब केना जाए देब। गरीब छी तँए इज्जत नै अछि। एहेन शिकार केलौं आ अहाँ चलि जाएब। सादू की कहता। हुनका पता लगतनि तँ नै कहता जे खाइ डरे समाजसँ मुँह चोरबै छी। एकर मासु बड़ सुअदगर जहिना अंडाएल रोहू, तेलाएल खस्सी होइए तहिना।"

"मन तँ होइए मुदा कुशेसरक घी संगेमे अछि। ओतए जाइ छी।"

"तँ की हेतै काल्हि चलि जाएब।"

मने-मन डरो हुअए। तेतबेमे एक गोरे आबि कहलकै-

"भोला कक्का, पेटसँ चानीक हँसुली आ पइत निकलल।"

मुदा भोला लेल धैनसन। जेना कोनो नव बात नै। मुदा मन मानलक जे भरिसक लोककैँ गिरने अछि। हमरा मुहसँ अनासुरती निकलल-

"आब की करबै, एकरा?"

"मासु बना, सोना कमला माइक पवित्र पानिमे धोइ लऽ जाएब। अमैनियासँ साँझू पहर रान्हब। झालि-मिरदंग बजा कमला माइकैँ मासु-भात-परसादी चढ़ाएब। सौंसे टोलक बाले-बच्चे मिलि-जुलि कऽ खाएब।"

“चमड़ाकेँ?” हम पुछलिऐ।

कहलक-

“सुखा कऽ रखि लेब। जखनि बेसी भऽ जाएत तखनि वेपारीकेँ खबड़ि देबै। गाड़ी नेने औत, गिनती कऽ कऽ सभटा कीनि लेत।”

ओहो चलि गेल आ हमहूँ दुनू भाँइ नाहपर चढ़ि विदा भेलौं।

❍ ❍ ❍

मातृभूमि

जिनगीक अंतिम चरणमे आइ अपन मातृभूमिक दर्शन भेल। ओ भूमि जैठामसँ माए सदति नजरि उठा-उठा देखैत रहैत, ओ प्यारी, सिनेही, प्रेमी, जीवनदायिनी, जीवन रक्छिनी भूमि, मातृभूमि। दर्शन पबिते कमल मन कलपि उठल मुदा असीम उत्साहक संग उमंग संचारित भेल। काल्हि धरिक जिनगी आँखसँ छिपए लगल, ओझल हुअ लगल, मुँह नुकबए लगल। जइ दिन अपन जीवनदायिनी भूमिसँ विदा हुअ लगल रही पूर्ण जुवा रही। नस-नसमे नव खूनक संचार होइत रहए। समुद्री जुआर जकाँ जुआनी उठैत रहए। आशा-अभिलाशाक संग पकड़ैले उत्साहित रहए। बाट नै भेटने मातृभूमिक दर्शन लाखो कोस दूर दुर्गमे छिपल रहए। मुदा दर्शन पबिते सत्-चित्त-आनन्दसँ खेलैत देखि, नमन केलियनि।

डाक्टरीक डिग्री प्राप्त करिते बिआह भेल। नीक गाम, नीक कन्या नीक कुल-मूलक संग नीक दहेज भेटल। केना नै भेटैत, जइ डिग्रीक मांग देश-विदेशमे अछि ओइमे बेकारी केतएसँ औत। मुदा इंजीनियर जकाँ तँ नै जे डिग्री पेलोपर काज नै! तइले तँ साधनक जरूरति अछि से अछि केतए। जुआनीक उमंग उठिते गेल। संयोगो नीक रहल जे बाइस बरखक अवस्थामे ओइ फ्रान्समे जइमे महान्-महान् दार्शनिक, तत्व चिन्तक वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार, देशभक्त जनम लेने छथि, काज करैक अवसर भेटल। रंगीनी दुनियाँक स्वर्ग, जेहेन ओतए सड़क तेहेन एतए घर नै, ओइ पेरिसमे। बिसरि गेलौं अपन भूमि, अपन मातृभूमि। ओना सोलहन्नी बिसरि नै गेल रही, मुदा विचारक आलमारीक पोथी जाकमे, तर जरूर पड़ि गेलैं। अखनो मन अछि, गामक विद्यालयक देश वन्दना। हृदैमे नै पहुँचल छल गंगा सन पवित्र जलधाराक सरिता, नै जनै छेलौं माटिक सुगंध आ गाछी-बिरछीक फल-फूलक महमही।

अनुकूल हवा पाबि मन मोहित भऽ गेल। जी तोड़ि जिनगीक पाछू पड़ि गेलौं। करमेसँ जिनगी तँ हमरा किए नै। नीक स्तरक परिवार बनेलौं, नीक बैंक बैलेन्स अछि। अपनोसँ बेसी खुशी परिवारक सभ रहै छथि। कारणो स्पष्ट अछि। वाल-बच्चाक जन्मे भेल, पत्नी अनके घरमे रहैवाली। मुदा आइ मन वेकल किए लगैए। बौराइ किए अछि? एकाग्रचित्त सभ दिन

रहलौं तखनि बान्हल मन पड़ाए केतए चाहैए। की 'आएल पानि गेल पानि बाटे-बिलाएल पानि।' जइ मातृभूमिक गुणगान बच्चा, वृद्ध सभ करै छथि, तैठाम केतए छी। बढ़ैत-बढ़ैत जहिना धन बढ़ैए, गाछ-बिरिछ बढ़ैए तहिना ने विचारो बढ़ैए। मुदा एना किए भऽ रहल अछि जे आब ऐठाम, माने पेरिसमे नै रहि अपन मातृभूमिक रजकण बनब।

जहिना बाइस बरखक वएसमे अपन गाम, समाज, भूमि-मातृभूमि छोड़ि पेरिस आएल रही तहिना आइ छोड़ि अपन प्रेमी मातृभूमि, सिनेही मातृभूमिक कोरामे विश्राम करब। मुदा नहियोँ बुझैत रही तैयौ अबैकाल सभसँ असिरवाद लऽ लेने रही तहिना तँ एतौसँ असीरवाद लाइए लिअए पड़त। जरूर पड़त। मुदा केकरासँ? केकरोसँ नै! ने अपन गंगा-यमुनाक जलधारा, ने हिमालय-कैलाश सन पहाड़, ने गंगा-ब्रहमपुत्र सन धरती, ने समुद्र सदृश हृदए। जहिना पत्नीक संग आएल रही तहिना जाएब। जौं ओहो नै जाथि तखनि? ओ नै जाए चाहती तेकर कारणो तँ कहती। पुछलयनि-

"आब ऐठाम नै रहब।"

पत्नी बजली-

"तखनि?"

कहलियनि-

"अपन मातृभूमिक दर्शन भऽ गेल। ओतए जाएब।"

पत्नी उत्तर देलनि-

"सभ अपन-अपन मालिक होइए। जौं अहाँ जाएब तँ जाएब।"

पुन: पुछलियनि-

"अहाँ?"

कहली-

"अपन कारोबार अछि। बेटा-पुतोहु दुनू फ्रान्सक भऽ गेल। दुनियाँक स्वर्गमे रहि रहल छी। तखनि की?"

मन पड़ल ओ दिन जइ दिन जिनगीक हिसाब जोड़ि आएल रही। पत्नी संगे रहथि। मुदा आइ? जुग बित गेल। जिनका सभसँ असीरवाद लऽ आएल रही भरिसक मरि-हरि गेल हेता, गेलापर के हृदए लगौता। तखनि? तखनि की? किछु ने। मुदा जाधरि पहुँचब ता धरिक तँ उपए चाही। विदा भऽ गेलौं।

एक समुद्रसँ मिलैत दोसर समुद्रक विशाल जलराशिक बीच जहाजसँ मद्रास पहुँचलौं। मद्रास बन्दरगाहमे उतरि अपन धरती, अपन देश, अपन मातृभूमिकेँ हृदैसँ नमन केलियनि। मन पड़ल रामेश्वरम्। जखनि मद्रास आबि गेल छी तखनि बिनु दर्शने जाएब बचपना...। विदा भेलौं।

धरती-समुद्रक बीच बनल रामेश्वरमक मंदिर। एक दिस विशाल जल-राशिक समुद्र तँ दोसर दिस खिलैत-इठलाइत मातृभूमि। ऊपर शून्य अकास। समुद्रेक लहरिमे स्नान कऽ दर्शन केलौं। मंदिरसँ निकैलिते खजुरीपर गबैत एकटा साधु मुहेँ सुनलौं, ‘‘अवगुन चित्त न धरो।’’ जेना भूखकेँ अन्न, पियासकेँ पानि खिहारि दैत, तहिना मनमे भेल। जलखै कऽ गाम लेल गाड़ी पकड़लौं।

जंगल, पहाड़, नदी, मैदानकेँ चिरैत गाड़ी गाम लग पहुँचल। जे गाम कहियो नन्दन वोन सदृश सजल छल- लहलहाइत खेत, रस्ता-पेरा विद्यालयसँ सजल छल, धारक कटावसँ विरान बनि गेल अछि। ने एकोटा सतघरिया पोखरि बँचल अछि आ ने पीपरक गाछक निच्चाँक विद्यालय। घराड़ी, खेत बनि गेल अछि आ पोखरि-झाँखड़ि घराड़ी। मुदा तँए की, ने गामक परिवार कमल, ने लोक आ ने गामक नाओं। गामक दछिनवरिया सीमापर पहुँचिते एकटा नवयुवककेँ पुछलयनि-

‘‘बाउ, की नाओं छी, अही गाम रहै छी?’’

नवयुवक बाजल-

‘‘हँ। रमेश नाम छी।’’

पुछलयनि-

‘‘गामक की हाल-चाल अछि?’’

प्रश्न सुनि रमेश ठमकि गेल। किए नै ठमकैत। नमती भलहिं नै बढ़ल हुअए मुदा रंग आ चौराइ तँ जरूर चतरिए गेल अछि। भरिसक चेहरा देखि डरा गेल अछि। मुदा डर तँ ओतए बढ़ैत जेतए डरनिहारकेँ आरो डेराएल जाइत। से तँ नै अछि। मधुआएल मन मुस्कीआइत मुँह खोलि निकलल-

"बौआ, चालीस बरख पूर्व अही माटि-पानिक बीच डाक्टर बनि विदेश गेलौं...।"

मधुर बोली सुनि रमेश बाजल-

"गाममे के सभ छथि?"

कहलिऐ-

"कियो नै। जेहो हेता, हुनको छोड़ि देलियनि। जखनि छोड़ि देलियनि तँ वएह किए पकड़ता।"

तखनि रमेश पुछलक-

"रहबै केतए...?"

बजलौं-

"सएह गुनधुनमे छी।"

रमेश कहलक-

"हम तँ महिंसवारि करै छी, आन किछु जनै नै छी। चलु वस्तीपर पहुँचा दइ छी।"

वस्तीपर पहुँचा रमेश चलि गेल। हम ठमकि गेलौं। पूबारि भागक घरवारीक नजरि पड़िते, ओतैसँ पुछलनि-

"केतए जाएब?"

कहलियनि-

"ब्रह्मपुर।"

घरवारी कहलनि-

“यएह छी। इम्हर आउ।”

मनमे सबुर भेल। हूबा बढ़ल। अपन गामक चालि बढ़ल। लफरि कऽ दरबज्जापर पहुँचलौं। घरवारी कहलनि-

“थाकल-ठेहियाएल आएल छी, पहिने पएर धोउ। चाह बनौने अबै छी, तावत कपड़ा बदलि आराम करू। आइ भरिक तँ अभ्यागत भेलौं काल्हिक विचार काल्हि करब।”

कहि आँगन जा चाह अनलक। दुनू गोटे पिऐत कहलियनि-

“हमहूँ अही गामक वासी छी। नोकरी करए बाहर गेल रही। अपन घराड़ीओ अछि आ दस बीघा चासो।”

ओ बजला-

“हमहूँ आने गामक वासी छी। नानाक दोखतरीपर छी। तँए, ने गामक आँट-पेट जनै छी आ ने पुरना लोक सभकेँ।”

कहलियनि-

“हम डाक्टर छी।”

ओ बजला-

“तखनि तँ गामक देवते भेलौं। जाबे अपन ठर नै बनि जाइए ताबे एतै रहू। अतिथि-अभ्यागतकेँ खुऔने आरो बढ़ै छै।”

ठौर पाबि मन खुशी भेल। जीबैक आशा देखि पत्नीकेँ फोन लगेलौं-

“हेलो..”

पत्नी उत्तर देलनि-

“हँ, हँ, हेलो।”

कहलियनि-

“गामसँ बजै छी। पुन: घूमि कऽ पेरिस नै आएब। अहाँ जौं आबए चाही तँ चलि आउ।”

पत्नी कहलनि-

“चूक भेल जे संगे नै गेलौं। जाधरि अहाँ छेलौं ताधरिक आ अखनिमे जीवन-मृत्युक अन्तर आबि गेल अछि।”

कहलियनि-

“जखने मन हुअए तखने चलि आएब।”

ओ बजली-

“फोन रखै छी..?”

❍ ❍ ❍

भबडाह

चहकैत चिड़ैक चलमली कानमे पड़िते नित्यानन कक्काक नीन छिटकलनि। कोनो काज करैसँ पहिने तर्क-वितर्क ओहने महत रखैत जेहने निरजन आँखिए दिनमे चलब होइत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल नजरि आजुक समैपर गेलनि। काल्हि शनि, राखी पावनि छी। परसू रवि, विदेसर स्थानमे ठसम-ठस मेला हएत। हएबो उचित, एक तँ बैद्यनाथ बाबा सौनक पूर्णिमा विदेसरेमे बितबै छथि, दोसर कमलो उमड़ल अछि, एक संग दुनू काज। भैयारी रहितो जहिना भविसद्रष्टा युगद्रष्टासँ ऊपरक सीढ़ी होइत, तहिना ने औझुकेपर काल्हि ठाढ़ होएत। काल्हुक सुरूज केहेन उगत ई तँ प्रश्न अछिए। चारिम दिन पनरह अगस्त। भारतक स्वतंत्रताक चौसठिम वर्षगाँठ। साठि बरखक उपरान्त अनाड़ीओ-धुनाड़ी लोक वरिष्ठ नागरिकक उपहार पबैत तेहेनठाम स्वतंत्रता की आ देश केतए! मुदा लगले मन घूमि गाम दिस बढ़लनि। हिन्दु-मुसलमानक गाम। पनरहियासँ हिन्दु राधा-कृष्णक झुलासँ लऽ कऽ भोला बाबाक जलढरीमे बेस्त तँ तहिना मुसलमानो दस दिन ऊपरेसँ रोजा-नवाजमे। एको पाइ लोक नै बँचल। सभ धर्मक काजमे हृदैसँ जुटल। जखनि सोलहन्नी लोक पवित्र मने धर्मक काजमे जुटले छथि तखनि निश्चित गामक काल्याण हेबे करत! प्रेमिकाक आगू जहिना प्रेमी दुनियाँकेँ निच्चाँ देखि ऊपर भ्रमण करैत तहिना नित्यानन कक्काक मन कल्याणक संग टहलए लगलनि। उत्साह जगलनि! फुड़-फुड़ा कऽ ओछाइनसँ उठि कलपर जा माटिएसँ चारि घूसा दाँतमे लगा, आँगुरेक जीभिया कऽ हाँइ-हाँइ चारि कुर्ड़ा मारि चारि घोंट पानिओ पीब लेलनि। आँखि उठा वाड़ी दिस देखलनि तँ पत्नीकेँ मचानपर चठैल तोड़ैत देखलनि। आँखि उतारि गाम दिस विदा भेला। दरबज्जापर सँ आगू बढ़िते हिऔलनि तँ बूझि पड़लनि जे घर-दुआर छोड़ि लोक चौके दिस आबि गेल हेता तँए नीक हएत जे चौके दिस जाइ। सोचि नित्याननकाका आगू बढ़ैक विचार केलनि। डेग उठिते मन सिहरलनि। भाए-बहिनक ओहन पर्व काल्हि छी जइमे दुनूक प्रगाढ़ प्रेमक, सिनेह-सिक्त जलक उदय हएत। आशाक संग जिनगीक बिसवासो जगलनि। डेग बढ़ौलनि।

पनरह-बीसटा डमहाएल चठैल खोंइछामे लेने सुचिताकाकी मुस्की दैत, गद्-गद् होइत जे महिना दिन तँ चलबे करत, तेकर पछाति ने दौंजी हएत।

सालमे जौं एक्को पनरहिया चठैलक तरकारी खा लेब तँ की चीनिया बिमारी हएत। लफड़ल आबि पछबरिया ओसारपर सूपमे चठैल उझलि पुतोहुकेँ पुछलखिन-

“कनियाँ, दोकानक काज अछि?”

डिब्बा-डुब्बी हड़बड़बैत पुतोहु कहलकनि-

“हँ।”

“की सभ लेब?”

“नोन, हरदी।”

पुतोहुक साँस किछु गर्म सुचिताकाकीकेँ बूझि पड़लनि। मुदा अनठा देलनि। नोनक पौकेट दस रूपैआमे देत, हरदीओ की कोनो सस्ता अछि। ओकरो पौकेट दस रूपैआसँ कममे कहाँ दइ छै। हाथमे तँ पनरहेटा रूपैआ अछि। केना दुनू चीज लेब। मन फुनफुनेलनि। बड़बडाए लगली, केहेन बढ़ियाँ खुदरा-खुदरी नून बिकाइ छेलै, जेतबे जेकरा सकड़ता रहै छेलै से तेतबे लइ छेलए। आब तँ तेहेन पोलीथीनक पौकेटमे रहैए जे कमो रहत तँ बनियाँ कहत जे घमि गेल हएत। खाएर एक चुटकी नूने ने कम देत। एक-ने-एक दिन सैरियत दिअए पड़तै। जहिना बच्चा लगले कनैए, लगले हँसैए तहिना सुचिताकाकीकेँ मन लहरए लगलनि। जे नून हाथीकेँ गला दइए ओ प्लास्टिककेँ की नै गलबैत हएत। आब की कोनो नून खाइ छी आकि प्लास्टिकक रस पिऐ छी। हे भगवान तोड़े हाथ-बाठ छह। जेते दिन जीबए दैक हुअह से जीबह दिहऽ, नै जे लऽ जाइक हुअह तँ लऽ जहिहऽ। कहू जे प्लास्टिके कलमे पानि पिऐ छी, दोकानक चीज-बौस अनै छी, खाइ-पिऐक समान रखै छी। जूत्ता-चप्पल, कपड़ा-लत्ता पहिरै छी। मुदा...?

लगले मन पुतोहु दिस घुमलनि। कहू जे चारिटा गाछ घरोक दावापर हरदी रोपि लेब तँ साल भरि किनए पड़त? जाबे माल-जाल नै छेलए ताबे वाड़ी-झाड़ी करै छेलौं। आब तँ मालोक नेकरमसँ नहाइओ-खाइओक पलखति नै होइत रहैए। कनियाँ सहजे कनियेँ छथि। कोनो लूरि-ढंग बाप-माए सिखा कऽ पठौलखिन आकि सोलहो आना सासुरे भरोसे छोड़ि देलखिन। मुदा गलती बुढ़होक छन्हि। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेलनि चरिकोसी पारक पुतोहु

उठा अनलनि। एकेटा वस्तुक चरि-चरि, पँच-पँच तरहक विन्यास बनैए, जरूरतिक हिसावसँ रूप-बदलि उपयोग करब। तइ कालमे कहती जे खाली, अल्लूक, तरुआ, भुजुआ, भुजिया टा बनबैक लूरि अछि। अपसोच करैत बजली-

> ‘‘जा हे भगवान, जे पुत हरबाहि गेल, देव-पितर सभ से गेल। कोनो मनोरथ रहए देलह। जखनि मनोरथे नै तखनि सतयुग, त्रेता, द्वापरे की।’’

तैबीच मोख लागल ठाढ़ पुतोहु बजली-

> ‘‘आइ शुकरवारी छिऐ। जखनि चौक दिस जाइते छथि तँ अंगुरो आ केरो फलहार लेल लेने अबिहाथि।’’

पुतोहुक बात सुनि सुचिताकाकी छगुन्तामे पड़ि गेली। मनमे हुअ लगलनि जे एक हजार बात एक्केबेर कहि दियनि मुदा केतौ-केतौ नहियोँ टोक देब नीक होइत अछि। तँए, किछु नै बजैसँ परहेज केलनि। मुदा, जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बर्तनमे ताउ लगिते तरसँ बुलकारा उठए लगैत तहिना काकीक मनमे उठए लगलनि। कहू जे अखनि पनपिआइक बेर छै, पहिने तेकर ओरियान कऽ पुरुख-पात्रकेँ खुआएब अपने खाएब आकि सौझुका फलहारक ओरियान करब। बीचमे कलौ सेहो अछिए। भगवानो टेबिए कऽ पुतोहु देलनि। एहेन-एहेन गिरथानि बुते केते दिन घर-परिवार चलत। काकीकेँ चुप देखि पुतोहु दोहरबैत बजली-

> ‘‘नै सुनलखिन। जखनि चौक दिस जेबे करती तँ अंगुरो आ केरो नेनहि अबिहाथि।’’

पुतोहुक बात सुनिते काकीक मनमे तरंग उठलनि। तरंगि कऽ बाजए लगली-

> ‘‘अहाँ सभ कोन उपास करै छी जे सहैसँ पहिने फलहारेक ओरियान करए लगै छी। कहुना-कहुना तँ सातटा हरिबासय केने छी। कहाँ कहियो पहिने फलहारेक ओरियान करै छेलौं।’’

शब्द-वाण जकाँ काकीक बात पुतोहुक हृदैमे लगलनि। तीर बेधल चिड़ै जकाँ छटपटाइत पुतोहु कहलकनि-

"अपना जे मन फुड़ै छन्हि करै छथि से बड़बढ़ियाँ मुदा हमरा बेरमे भबडाह हुअ लगै छन्हि?"

भबडाह सुनि काकीओक मन बेसम्हार भऽ गेलनि। कहलखिन-

"कनियाँ, हम भबडाहि नै छी जे केकरोसँ भबडाह करब। अखनि आँखि तकै छी तँए चिन्ता अछि। अखने आँखि मूनि देब, घर सम्हारए पड़त। तखनि अहूँ यएह बात बुझबै।"

भनडार कोणक जेठुआ गड़ै जकाँ दुनूक बीच रसे-रसे अन्हर-विहाड़ि पकड़ए लगलनि। कियो पाछू हटैले तैयार नै। दुनूक सीमा-सरहद टूटि-एकबट्ट भऽ गेल। एक्के-दुइए धियो-पुतो आ जनीजातिओ सभ आबए लागलि। आँगन भरि गेल।

चौकसँ किछु पाछूए नित्याननकाका रहथि कि मनमे उठलनि, चौरंगी हवा बहैक समए अछि। कखनि कोन हवा केम्हरसँ उठत आ घर-दुआर खसबैत केम्हर मुहेँ चलि जाएत तेकर ठेकान नै। ठोर बिदकि गेलनि। हुलकी दैत मुस्की बहरेलनि-

"एह, अजीब-अजीब करामाती मनुखो सभ भऽ गेल। कनियेँ गलती विधातोक भेलनि जे सींग-नांगरि काटि लेलखिन।"

तहीकाल लाँडस्पीकरक अवाज कानमे पड़लनि। राधा-कृष्ण मंदिरपर झूला चलि रहल अछि। अवाज सुनि मन पसीज गेलनि। सौन मास। सुहावन। मन भावन। विशाल वसुंधरा, रंग-रंगक वस्त्र पहिरि मधुमय वातावरणक बीच, बिहुँसि रहल अछि। कृष्णक कदमसँ कदम मिलबैत राधा बिहुँसैत झूला झूलए कदमक गाछ दिस जा रहल छथि। असीम उल्लास। अदम्य साहस दुनूक बीच। कातेसँ गाछमे गोल-गोल, लाल-पीअर झुमका लगल फल-फूलसँ लदल देखि राधा कृष्णकेँ पुछलखिन-

"डोरी लगा डारिमे झूला लगाएब आकि डारिएपर बैस झूलब?"

राधाक प्रश्न सुनि कृष्ण आँखिएक इशारासँ उत्तर देलखिन-

‘‘जेहेन समए तेहेन काज।’’

चौकक गनगनाइत अवाज, नित्याननकक्काक धियान अपना दिस खिंचलकनि। तखने एकटा नवयुवककेँ स्कूलमे भेटल बहिनक साइकिलपर ‘रेशम की डोर’ गुनगुनाइत सुनलनि। चिप्पी सजल विदेशी वस्त्रमे युवक। जहिना दिन-रातिक मध्य, जाड़-गरमीक मध्यक संग जिनगीओक मध्य मधुआएल होइत, तहिना कक्काक मन सेहो भेलनि। युवककेँ पूछि देलखिन-

‘‘बाउ, परिवारमे के सभ छथि?’’

युवक कहलकनि-

‘‘बाबा, हिनका सबहक चरणक दयासँ सभ छथि। माएओ-बाबू आ दूटा बहिनो अछि। एक बहिन सासुर बसैए, जेतए जा रहल छी आ दोसर पढ़ैए। सोलहम बरख छिऐ। दू-तीन साल बाद बिआहो करब।’’

काका पुछलखिन-

‘‘अपने?’’

युवक कहलकनि-

‘‘बाबा, ई देवतुल्य छथि, झूठ नै बाजब। अपना खेत-पथार नहियेँ जकाँ अछि मुदा खेतबला सभकेँ बाहर गेने बँटाइ खेत पर्याप्त अछि। एक जोड़ा बड़द रखने छी। बाबू-माए खेते-पथारमे खटै छथि, अपने बम्बईमे रहै छी।’’

काका पुछलखिन-

‘‘राखी पावनि तँ काल्हि छिऐ, आइए किए जाइ छी?’’

युवक कहलकनि-

‘‘साल भरिपर बम्बईसँ एलौंहेँ। एको दिन पहिने जौं बहिनक ऐठाम नै जाएब, से केहेन हएत? भगिनो-भगिनीओ लेल आ बहिनो-बहनोइ लेल सालो भरिक कपड़ा नेने जाइ छियनि। काल्हि बेरमे घूमब

तखनि छोटकी बहिनक हाथे राखी पहिरब। अच्छा अखनि जाइ छी बाबा। काल्हि फेर घुमती बेर भेँट करब।''

काका कहलखिन-

''काजे जाइ छी। जाउ?''

जेना-जेना ओ युवक साइकिलसँ आगू बढ़ल जाइत तेना-तेना नित्यानन्दो कक्काक मन दौगए लगलनि। मनमे एलनि पछिला सालक मोबाइलिक घटना। कनी मन खुशी भेलनि। बुदबुदेलथि-

''अजीब-अजीब मदारी सभ अछि। गर लगा-लगा नचबैए।''

मन रूकलनि। पहिनेसँ ने लोक किए बुझैए जे एहेन-एहेन घटनाकेँ बढ़ैए नै देत। मुदा मन ठमकलनि। घटना भेल। राखी पावनि दिन, दस बजे रातिमे बम्बैसँ एक गोटेकेँ मोबाइलसँ समाचार आएल जे बौआ सबहक हाथक राखी जल्दी खोलि दियौ नै तँ अनहोनी घटना हएत! इम्हर मुहेँ-मुँह समाचार पसरब शुरू भेल, ओम्हरसँ मोबाइलिक समाचार दिल्ली, कल्कत्ता, बंगलोर इत्यादिसँ अकासमे गनगनाए लगल। हाँइ-हाँइ राखी हाथसँ उतरए लगल। भरि रातिक हलचल दिनक दस बजे धरि चलिते रहल। राति भरिक नीनो दिनेमे बौआ गेल। मुदा दस बजेक पछातिक तीखर रौद पाबि वातावरण शान्त भेल। मनमे उठलनि बाल-बच्चाक संग माए-बापक सम्बन्ध? केना मनुखक वंश आगू मुहेँ ससरत जेतए माइए-बाप दुश्मन बनि ठाढ़ भऽ रहल अछि। तहूमे जिनगीक अंतिम बेलामे नै, उदयक तीनियेँ मासमे हथियार लऽ आगूमे ठाढ़ भऽ जाइत अछि! मन तुड़छए लगलनि। थूक फेकि मन हल्लहुक केलनि। मन पड़लनि भाए-बहिनक ओ पुरान बात। भाए-बहिन ऐठाम पहुँचल तँ बहिन भायकेँ कहलकनि- भैया जखनि अकासक डगर उत्तरे दछिने हएत तखनि आएब। मन पड़िते उठलनि सालो भरि तँ प्राकृतक संग खेल होइते रहैए, जिनगीसँ केतेक लग धरि सम्बन्ध बनि सकैए, तेतबे ने।

जेना मेघौनमे हवाक सिहकी लगने घुसकैत-फुसकैत तहिना नित्यानन कक्काक मन घुसकलनि। देखलनि जे चकेबा कोन तरहेँ बहिन समाकेँ जरैत वृन्दावनमे संग दऽ रहल छथि। जे मनुख चित्ती कौड़ी फेकि नागसँ दोस्ती करैत, बाघ-सिंह, भाउल सहित गाए-महिंस, बकरीक संग मुनियासँ हंस धरि

प्रेमसँ एकठाम रहैत ओकरा मनुखसँ एते घृणा किएक छै। जे धी-जमाए-भगिना लेल कहल जाइत, ओइमे कियो अपन नै! तहिना भाए-बहिनकेँ महिंसक सींग सदृश कहल जाइत। एक जातिक संहार कऽ बगीचाक काँट हटाएब कहल जाइत अछि! मन तरंगि गेलनि। तखने एकटा बेदरा आबि कहलकनि-

"बाबा, अँगनामे बिर्ड़ो उठल अछि।"

बेदरासँ किछु पुछब उचित नै बुझलनि। उड़ैत अकासमे कौआ अपन टाँहि थोड़े दोहरबैए। ओ तँ समैक घड़ी छी। मन आँगन पहुँचलनि। पत्नीपर नजरि पड़िते विचार उठलनि। झगड़ी आकि रगड़ी ओहो छथि। बूढ़ भेलौं, एतबो होश नै रहै छन्हि। होशो केना रहतनि जइ परिवारकेँ फुलवाड़ी सदृश जिनगीक कमाइसँ बनौने छथि तेकरा जौं कियो उजाड़ए चाहत से केना उजाड़ए देथिन। मुदा रगड़ी रहितो एकटा गुण तँ छन्हि जे, ने रग्गड़ ठाढ़ करैमे देरी लगै छन्हि आ ने सीढ़ीक भीतर फरियबैमे। नजरि पुतोहु दिस बढ़लनि अजीब-अजीब लोको सभ फड़ि गेल हेन। कहत जुगे बदलि गेल। की जुग बदलल से कहबे ने करत आ कहत जे जुगे बदलि गेल। तहमे तेहेनठाम देखाएत जे अनेरे देहमे झड़क उठत। सासुकेँ उनटा-पुनटा पुतोहु कहथिन तैकाल जुग बदलि गेल। मुदा सासुक लगौल फुलवाड़ीकेँ केते समृद्ध बनेलौं तइ काल...। जहिना अपन बाप-माए लगसँ कानि कऽ एलौं तहिना अहू परिवारकेँ कनाएब। अनठा चौकपर पहुँचलथि।

चौकपर पहुँचिते चाहक दोकानमे गदमिशान होइत देखलनि। चाह पीबनिहार अपना धुनिमे आ दोकानदार अपन धुनिमे। चाहबला आगि-अगोंड़ा होइत जे सभटा फोकटिया आबि बैस पूजी बुड़बै पाछू अछि। गिलासपर गिलास चाह ढारने जाइए आ पाइक कोनो पते नै। मुदा खुलि कऽ ऐ दुआरे नै बजैत जे अखनि दोकानपर सँ थोड़े चलि गेल जे बुझबै पाइ बुड़ि गेल। तँए दम कसि लिअए। ओना भीतर शंका पुन: उठि जाइ। चेहरा मिलानी करै तँ वएह चेहरा बूझि पड़ै जे अदहासँ बेसी ओहन अछि जे सौ-पचास पीब-पीब कऽ दोसर दोकान पकड़ि लेने अछि। किछु जे अछि ओकरासँ कोनो नै कोनो काज हेबे करत। तँए पहुलके उपकार ने पछाति जुआ कऽ नम्हर भऽ जाइए। तँए मुस्की दऽ मन माड़ि लिअए।

मुदा चाह पीबनिहारक उत्साह भिन्ने रहए तँए चाहबला दिस कियो तकबे ने करैत। खाली एतबे कहैत जे दूध जरा कऽ स्पेशल बनाएब। गप्पोक धारा एहेन रहै जे, जहिना जुलुशमे लोक पएरमे लगैत गंदगीकेँ रस्तापर आरो चारि बेर रगड़ि आगू बढ़ैए। एक संग अनेको पर्व। लोक भलहिं लोकसँ जेते हटि जाए, मुदा पावनि थोड़े हटत। कम-बेसी भलहिं भऽ जाए। अजीब-सिनेहक संग राधा-कृष्ण बाँहि-मे-बाँहि जोड़ि झूला झुलै छथि। भाए-बहिनक बीच एहेन पर्व दोसर कहाँ अछि। भरदुतिया तँ भरदुतीए छी। कमलाक जल सेहो बैद्यनाथ बाबाकेँ विदेसरमे भेटबे करतनि। अजीब उमंग-उत्साहसँ हँसिते-हँसिते महिना दिनक संकल्प निमाहि लइ छथि। नित्यानन काकापर नजरि पड़िते प्रेम कुमार चाहेक दोकानपर सँ कहलकनि-

"काका, एतै आउ। सभकेँ-सभ छथि।"

मुस्की दैत नित्याननकाका कहलखिन-

"खाली लोकेटा नै ने फगुआक रमझौआ होइए। ऐमे की सुनब आ की बाजब। तइसँ नीक बाहरेमे आबह। चौसठिम स्वतंत्रता दिवसक बरखी छी, नै पान तँ पानक डंटीओ लऽ कऽ सुआगत करबे करबनि।"

तहीकाल अँगनाक समाचार नेने बेटा पहुँचलनि। हाथसँ आँखि मलि-मलि बलौसँ ललिया-करिया नोर बहबए चाहैत। बेटाकेँ बजैसँ पहिने पूछि देलखिन-

"किए मन मन्हुआएल छह?"

"दुनू-गोटे -सासु-पुतोहु- अँगनामे झगड़ा करै छथि।"

"झगड़ा शान्त करितह आकि कहए एलह?"

"हमर बात के सुनत।"

मुस्की दैत नित्याननकाका घर दिस विदा भेला। जेते घर लग आएल जानि तेते झगड़ो नरमाएल जाइत रहए। सुनै दुआरे कक्को छोटकी डेग

बनबैत रहथि। मुदा जहिना-जहिना डेग छोट होइत जानि तहिना-तहिना अछिआक मुरदा जकाँ झगड़ा शान्त भऽ गेल।

दुआरपर पहुँचिते देखलनि जे जहिना भारी काज केलापर वा रौदाएल एलापर छाहरिमे ठाढ़ भऽ नम्हर-नम्हर साँस लैत तहिना अँगना-दलानक कोनचर लग ठाढ़ भऽ साँस छोड़ि रहल छथि। आगू आँखि उठा देखलनि तँ पुतोहु थारी-लोटा मँजैबला ओचानि लग ठंठाइते साँस छोड़ि रहल छथि। बजैत कियो नै। जहिना मुकदमाक खलीफा मुद्दालह बनि लड़ैमे प्रतिष्ठा बुझैत, तहिना दुनू गोटे। मनमे उठलनि केकरो प्रतिष्ठाक सीमामे नै जेबाक चाहिऐ।



परिवारक प्रतिष्ठा

समाजमे सभकेँ छगुन्ता लगैत जे होइत भिनसर सौंसे गाम हड़-हड़-खट-खट शुरू भऽ जाइए मुदा कमलाकक्काक परिवारमे एको दिन नै सुनै छी, तेकर की कारण? जहिना रंग-बिरंगक लोक समाजमे रहैए तहिना ने रंग-बिरंगक रोगो-बियाधि आ क्रियो-कलाप रहैए। मुदा लंकाक विभीषण जकाँ यमुनाकाकी आ कमलाकक्काक परिवार केहेन हलसैत-फुलसैत कलशैए!

बहुत आँट-पेटक परिवार कमलाकक्काक नै। आने परिवार जकाँ अपन दसे कट्ठा जमीन। मुदा पनरह कट्ठा बँटाइओ करै छथि। जइसँ सहि-मरि कहुना साल लगि जाइ छन्हि। ओना आन परिवार जकाँ धिया-पुता झमटगर नै, सिरिफ चारिए गोटेक परिवार। दू परानी अपने आ बेटा-पुतोहु। डोरामे गाँथि जहिना फूलक माला बनैत तहिना परिवारोक डोरा सक्कत। अपन-अपन सीमाक बीच चारू गोटे कोल्हुक बड़द जकाँ चौबीसो घंटा चलैत रहैत। ओना गामक अदहासँ बेसी परिवारक समांग गाम-सँ-बाहर धरि रहि परिवार चलबैत, मुदा कमलाकाक्काक परिवारमे के बाहर जाएत तेकर अँटाबेशे ने होइत। कक्काक मनमे रहनि जे एक्केटा समांग अछि जौं ओ बाहरे चलि जाएत तँ बेर-कुबेरमे एक लोटा पानिओ के देत? मौका-कुमौकामे कोटो-कचहरी के करत? तेतबे नै, जौं कहीं किष्कारक समए बेमारे भऽ जाएब तँ खेती-पथारी के सम्हारत? जनीजाति तँ जनीजातिए होइत, खेत केना जोताएत? जौं खेते नै जोताएत तँ खेती केना हएत? जौं खेतीए नै हएत तँ परिवार केना चलत? अपनो कि आब ओ समरथाइ रहल जे बलधकेलो किछु कऽ लेब।

जहिना कमलाकक्काक मनमे अपन काजक ओझरी लगनि तहिना यमुनोकाकीक मन ओझराएल। मनमे उठनि जे मुँह-झाड़ि पतिकेँ किछु तँ नहियेँ कहि सकै छियनि मुदा पुतोहु लगा बेटाकेँ तँ कहि सकै छी। जखने बेटाकेँ कहबै तखने ओहो ने सुनता। कोनो की कानमे ठेकी थोड़े रहतनि।

रधवाक मनमे तेसरे बात उठैत। गिरहस्ती काज बेसी वरसातमे होइए। मिरगिसरा-अद्राक पानि तेहेन ने होइए जे हाथ-पएर सड़ा दइए। एक तँ हाथ-पएर घबाह भऽ जाइए तैपर सँ काजो बढ़ि जाइए। तइसँ नीक जे परदेशे खटब। मुदा विचार लगले रधवाक मनकेँ बदलि दइ। बरहम स्थानक

भागवत कथा मन पड़ि जाइ। ओना पनरहो दिन सुनने रहए मुदा एक्केटा बात मन रहलै। ओ ई जे 'माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैघ धर्म छी।'

पुतोहु लेल धैनसन। 'कोउ नृप होउ हमे का हानी।' एकटा गारजनकेँ के कहए जे तीन-तीनटा गारजनक तरमे छी। जेहने दिन तेहने राति।

पिताक पीठपोहू बनि रधवा कमलाकक्काक संग खेती- वाड़ीमे पूरैत। एते बात रधवा बूझि गेल रहए जे खेतीक भरिगर काजमे हरबाहि, कोदरबाहि आ करीनबाहि अछि। ओना धनरोपनीमे सेहो डाँड़ दुखाइ छै। तँए पिताकेँ ऐ सभ काजसँ फारकती दऽ देने रहनि। गिरहस्तीओ तँ अमरलत्ती जकाँ सघन होइए। काजक इत्ता नै। कलमसँ कोदारि धरिक काज। जेते समए तेते काज पसारि लिअ। तेतबे नै, किछु काज एहनो होइए जइमे कम तरद्दुत होइत आ किछु एहनो होइत जे तीन-तीन बेर केलोपर गड़बड़ाएले रहैत। तैपर सँ मेठनिओ बेसी। भरिगरकाज रधवा सम्हारिओ लन्हि तैयो कमलाकाकाकेँ सोहरी लागल काज रहबे करनि। जेते हाथ-पएरसँ करथि तइसँ कम बुधिओक नै। महिना, ग्रह, नक्षत्रक काज सेहो रहबे करनि। कोन नक्षत्रक धानक बीआ निरोग होइए आ कोनमे पाड़ने कललग्गू भऽ जाएत। कोन नक्षत्रमे कोन चीजक बीआ पाड़ल जाएत आ कोन चीज रोपल जाएत। बारहो मासक हिसाब कंठस्थ रखने छथि। जेकर खगता अखनि धरि रधवाकेँ भेबे ने कएल। जेते काल काजमे लगल रहैत तेतबे बुझैत। बाँकी समए ने मारी माछ ने उपछी खत्ता। बिना धैन-फिकिरक बितरागी जकाँ चैनसँ रहैत। कमेनाइ-खेनाइ आ सुतनाइक जिनगी। तीनूक गतिओ एकरंगाहे!

आँगनसँ बहराक काज जहिना दुनू बापूत कमलाकक्काक बीच अड़ियाएल चलैत रहनि तहिना अँगनाक भीतरक काज दुनू सासु-पुतोहुक बीच। चूल्हि-चीनमार बाहरब-नीपब, घर-अँगना बहारबसँ लऽ कऽ थारी-लोटा धूअब, भनसा-भात करब धरिक भार पुतोहुक ऊपर। जे पुतोहुओ आ सासुओ बुझैत, तँए ने केकरो चड़ियबैक जरूरति आ ने कियो अढ़बैक आशा करैत। तहिना यमुनोकाकीक काज रहनि। कोठीक अन्न केना सुरक्षित रहत, तैठामसँ लऽ कऽ माल-जालक थैर-गोबर केनाइ घास लौनाइ धरिक। ओना किसकारोक समैमे आ कटनिओक समैमे गिरहस्तीमे हाथ-बटबैत। चीनी मिलमे जहिना एकठाम कुशियार बोझिते, रेलबे टिकट लेनिहारक धाड़ी जेना

रसे-रसे आगू बढ़ैत, तहिना कमलाकक्काक परिवार। ने मुहाँ-ठुठी करैक कोनो जगह आ ने होइत।

ओना गाम नीचरस जमीनमे बसल तँए ऊँचरस जमीनक बारहो-बिरहिणीक खेती नै होइत। भीठ जमीन नै रहने भीठक उपजो नहियेँ! जइसँ गाममे बेख-बुनियादि सेहो कम आ गाछिओ-खरहोरि। तीन हीसमे बास आ एक हीसमे वाड़ीओ-झाड़ी। ओना तँ छह ऋृतु होइ छै मुदा गिरहस्ती लेल मूलत: तीन मौसम होइत। ऋृतु दुइए मासपर बदलैत, जखनि कि फसिल तीन मासक उपरान्ते बदलैत। किछु-किछु तीन माससँ कम्मो समैमे होइत मुदा बेसी तीन माससँ बेसीएमे। तँए मोटा-मोटी जाड़, गड़मी वरसाती फसिल होइत। तहूमे डंडी-तराजू जकाँ वरसात डंडी पकड़ने अछि। तराजूक पलड़ा जकाँ जाड़-गरमी। एक-दोसराक दुश्मनो। रहत कोनो एक्केटा रहत। सन्यासी जकाँ दोसर नै सोहाइत। मुदा बीचमे जौं पंच नै रहत तँ झगड़ेमे दुनू लगि जाएत, आगू की बढ़त। सालक वरसाते मौसम एहेन होइत जे सालो-भरिक भाग-तकदीर निर्धारित करैत। जहिना बेसी बर्खा भेने दहार होइए तहिना नै भेने रौदी! जे दुनू गिरहस्तीकेँ जान मारैए। हँ एहनो होइए जे, जइ साल समगम बर्खा भेल तइ साल सुभ्यस्त समए भेल। जइसँ निच्चाँ-ऊपर एक रंग फसिल उपजल। जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहने रहथिन तहिना मौसमो होइए।

जइ धरतीपर गंगा, सरस्वती, यमुना सन धार एकठाम मिलि कुम्भ सजबैए तैठाम दिन-दहार हत्या, बलात्कार अपहरण हुअए, बिनु बुधिक लोकक भरमार लगल रहए, मनुखकेँ मनुख नै बूझल जाए, तैठाम तीनू संगमक कोन उपकार? नमगर-चौड़गर आँट-पेटक तीनू धार जे हँसैत-झिलहोरि खेलैत समुद्रमे समाहित होइत, तैठाम...?

हमरा सभकेँ ईहो नै ओझल रखक चाही जे एकैसम सदीक स्वतंत्र प्रजातंत्रक बीच बास करै छी। अखनि धरिक इतिहासमे एते सक्षम मनुख ऐ धरतीपर नै भेल छल। तखनि दायित्व बनैए जे युगक संग पकड़ि युग-युगान्तरक धाराकेँ स्वच्छ बना चलए दिऐ। काल मनुक्खेटा केँ नै सभ किछुकेँ प्रभावित करै छै। जखने सभ किछु प्रभावित हएत तखने जीवन-पद्धतिमे धक्का लगत। ओइ धक्काकेँ निष्क्रिय करैले जीवन-शैलीमे बदलाव आनए पड़त! बितल युग तहिना बदलल। सत्युगमे जे क्रिया-कलाप छल ओ

त्रेतामे आबि सुधरल, जइसँ बदलाव आएल। युग-परिवर्त्तन भेल। तहिना त्रेतासँ द्वापर भेल। तँए जरूरी भऽ गेल अछि जे समयांकन इमानदारीसँ हुअए।

कहैले तँ कमलाकाका परिवारक गारजन छथि मुदा अँगनाक सीमासँ अपनाकेँ बाहरे रखने छथि। खेतक उपजावारी बाधसँ आनि पत्नीकेँ सुमझा दइ छथिन। यमुनोकाकी कि आब नव-नौताड़ि छथि जे परिवारक धक्का-पंजा नै बुझथिन। जिनगीक धक्का-पंजा जीबैक बहुत किछु लूरि सिखा देने छन्हि। सुभ्यस्त समए भेने काकीक मनमे खुशीक कोढ़ी शुरूहे आद्रा नक्षत्रमे जे पकड़लकनि से बढ़ैत-बढ़ैत अगहनमे भकरार भऽ फुला गेलनि।

धान दौन होइते, आने साल जकाँ यमुनाकाकी उसनियाँ करैसँ पहिने उपजाक हिसाब बेटो-पुतोहु आ पतिओक कानमे दऽ देब, आने साल जकाँ नीक बुझलनि। मने-मन बुदबुदेली-

“केते धान भेल, तेकर केते चाउर हएत आ केते दिन चलत?”

केते दिन चलतमे ओझरी लगि गेलनि। लोकक पेटक कोनो हिसाब अछि। देखैमे ने बीत भरिक बूझि पड़ैए मुदा हाथीओ खा-पी कऽ पचा लइए। फेर मन घुमलनि। जखनि अपने परिवारक बात अछि तखनि एना अग्गह-विग्गह किए सोचै छी। देखले परिवार नपले सिदहा। मुदा लगले मन आगू घुसुकि गेलनि। आन-आन परिवार जकाँ तँ अपन परिवार नै अछि। आन-आनमे आनो-आनो उपए छै अपना तँ से नै अछि। लऽ दऽ कऽ खेतीएक आशा अछि। तहूमे एते दिन घटबी पुड़बैले गाम-गाम महाजनो छेलए मुदा आब तँ ओहो ने अछि। ने ओ देवी आ ने ओ कराह। महाजनी मरैक कारणो भेल। राजे रोग जकाँ ने बाढ़िओ-रौदी छी। जे जेहेन तेकरा तही रूपे पकड़ै छै। जे जेते कम आँट-पेटक ओकरा ओते कम आ जे जेते नम्हर ओकरा ओते बेसी नोकसान करैत। तइ संग ईहो भेल जे गामक लोक बाहरसँ सेहो कमा-कमा आनए लगल। जइसँ महाजनीक बीच रोड़ा अँटकल। ओना बहरबैओ बाहरक बहुत बात तँ नहियेँ बुझैत मुदा जिनगीक किछु बात तँ जरूर बुझए लगल। नै बुझैक कारण रहए जे पढ़ल-लिखल नै रहने एको गोटेकेँ ने बैंकक नोकरी रहै आ ने करखन्नाक ऑडिटरी। जैठाम धनक

कँकोड़बा बिआन होइत से कियो ने बुझैत! मुदा रिक्शा चलौनिहार, ठेला ठेलिनिहार, गोदाममे बोरा उठौनिहारकेँ लगक महाजनसँ भेँट जरूर भेलै। जहिना छोट बच्चा हाथक ओँगरी मुँहमे लैत-लैत बाँहिओ पकड़ए लगैत, तहिना खुदरा महाजन लग एने भेल। ओना छोट महाजनी रहने साले भरिक लेन-देन चलैत मुदा पच्चीस हजारक सहयोगी तँ भेटल। बेटा-बेटीक बिआह, घर-घरहट आ बर-बिमारीक आशा तँ भेटल। गामक महाजनीसँ सूदिओ छोट। जेतए आसिन-कातिकक कर्ज एक्के-दुइए मासमे सवैया-डेढ़िया वृद्धि करैत तैठाम दस प्रतिशत बियाजक बदला पच्चीस प्रतिशत दिअए पड़त, तेतबे ने। मुदा तैयो तँ असाने भेल। दोसर ईहो भेल जे आध-मन, एक-मन कर्ज लेल जे भरि-भरि दिन साबेक जौरी खर्ड़ए पड़ैत छल सेहो बन्न भेल।

दुनू बापूत -कमलोकाका, रधवो- केँ यमुनाकाकी बुझबैत कहलखिन-

> ''एते धान भेल। एकर एते चाउर हएत। एते दिनक पछाति फेर अगिला अन्न हएत। एते दिनमे एते साँझ भेल, एतेटा आश्रम अछि। दिनमे एते सिदहा लगैए।''

यमुनाकाकीक हिसाव सुनि कमलाकाका विचारक दुनियाँमे बौआ गेला। जेहो सुनलनि सेहो रसे-रसे बिसरए लगला आ जे नै सुनलनि से तँ नहियेँ सुनलनि। अपन प्रस्तावक अनुमोदन लेल यमुनाकाकी आँखि नचबए लगली। कखनो पतिपर तँ कखनो बेटापर देथि। उनटि कऽ पाछू तकथि तँ टाटक अढ़मे बैसल पुतोहुकेँ देखथि। सभ अपने-अपने दुनियाँमे बौआइत। अपन प्रस्तावक उत्तर नै पाबि यमुनाकाकी पुन: दोहरौलनि-

> ''अखनि सोचै-विचारैक समए अछि तँ कियो कान-बात नै दइ छिऐ आ जखनि बेर पड़त तखनि थुक्कम-थुक्का करैत घिनमा-घीन करब?''

यमुनाकाकीक करुआएल बात सुनि कमलाकक्काक भक्क खुगलनि। मनमे उठलनि जे मुहोँ चोरौनाइ नीक नै। किछु तँ बजबे उचित। बजला-

> ''खेतसँ खड़िहाँन आनि तैयार कऽ आँगन पहुँचा देलौं आबो हमरे काज अछि। आकि ओकरा उसनब, रौद लगा कोठीमे राखब, की सेहो पुरुखे भरोसे छी।''

कक्काक उत्तरसँ यमुनाकाकीकेँ घरक लक्ष्मी मन पड़लनि। खुशीसँ मन नाचि उठलनि। मुदा लगले, जेना घुरमी लगैए तहिना लगि गेलनि। बजली-

> “जोड़ भरि धोती आकि जोड़ भरि साड़ी तँ कियो साले भरि ने पहिरत। साल भरिक पछाति ओ थोड़े पहिरै जोकर रहै छै। एकर अर्थ ई नै ने भेल जे वस्त्रक जरूरति मेटा गेल, साल भरि लेल मेटाएल, तोहूमे केते बिहंगरा अछि। कहीं चोरिए भऽ जाए की हराइए जाए, की कुत्ते बिलाइ दकरि दइ आकि आगिए-छाइक प्रकोप भऽ जाए।”

यमुनाकाकीक बात सुनिओ कऽ कमलाकाका अनठा देलनि। चुपे रहला! मुदा मनमे ओँढ़ मारए लगलनि जे माए-बाप अछैत बेटा-पुतोहुकेँ परिवारक चिन्ताक उत्तरी पहिराएब उचित नै। ओना काजक ढंग ओहन सिखा देब नीक, जइसँ जिनगीमे कहियो चिन्ता नै सतबै। आगूमे बैसल रधवा, जेना संस्कृत आकि अंग्रेजी सुनि कोनो बच्चाकेँ होइत, तहिना सुनबे ने केलक। मुदा तैयो मनमे घुरिआइ जे जे-गति सबहक हेतै से हमरो हएत। तइले अनेरे माथ-कपार पीटब आकि धूनब नीक नै। रमरटियासँ खढ़कटिए नीक! भरमे-सरम चुपे रहल।

अढ़मे बैसल पुतोहुक मन बजैले लुस-फुस करैत। लुस-फुस करैक कारण जे के नै घर आकि गामक मुख्यियारी चाहैए? मुदा वेचारीकेँ कोनो एहेन गरे ने भेटैत जे किछु बजैत। एक तँ नव-नौतुक कनियाँ, दोसर नैहरोमे माए भानसे-भात करैक लूरिटा सिखौने। घरक जुति-भाँतिक कोनो लूरि सिखेनैइ नै। केना सिखेबो करितथि? सभ गाम आ सभ परिवारमे किछु-ने-किछु भिन्नता होइते छै। जहिना कोनो नट ओहने बोल्टमे नीकसँ लगैत जे समतुल्य होइत। तहिना तँ परिवारो ने होइ छै। माइए-बापक परिवार जकाँ सासुओ-ससुरक परिवार हएत, से कोनो जरूरी नै। चाहिओ कऽ वेचारी किछु ने बाजि सकल।

ओना धानक ढेरी देखि कमलाकक्काक मन उमड़ैत रहनि। जहिना पानिमे भीजने किताबक पन्ना एक-दोसरमे सटि जाइत तहिना कमलोकाकाकेँ भेलनि। परिवारक सभ हृदैमे सटि गेलनि। मन उमड़ि आगू बढ़लनि। पतिकेँ रहैत जौँ पत्नीकेँ वा बाप-माएक रहैत बाल-बच्चाकेँ कोनो तरहक चिन्ता-

फिकिर हुअए तँ जरूर केतौ-ने-केतौ माए-बापक दोख छिपल अछि। दोखक कारण मनमे एबे ने करनि। ओछाइनपर जहिना नीन नै एने कछमछी लगैत तहिना मन कछमछाइत रहनि। मुदा लगले, जहिना सुतली रातिमे ओछाइनपर सूतल माएकेँ देखि जागल बच्चा सूति रहैत तहिना कमलोकाका केलनि।

काकाकेँ शान्त देखि यमुनोकाकी असथिर भऽ गेली। मनमे उठलनि जे चारि गोटेक आश्रममे तीन गोटे तँ एक्के परिवारक छी, खाली कनियेँटा ने अखनि दस-आना छह-आनामे छथि। ओहो दू-चारि सालमे रिताइत-रिताइत रिता जेती। मुदा अखनि तँ नैहरेक चालि-ढालि छन्हि। अखनि थोड़े ऐ घरक तीत-मीठ पचौती। नैहर गेलापर जखनि सखी-बहिनपा वा माए-पितियाइन पुछतनि जे बुच्ची अन्न-वस्त्रक ने तँ दुख-तकलीफ होइ छह, तखनि ओ थोड़े आगू-पाछू ताकि बजती। ओ तँ परिवारेक बँचौने बँचत। वएह ने परिवारक प्रतिष्ठा छी। जानियेँ कऽ तँ हमरा सबहक घरक छप्पर भगवानक डंगेलहा छी, तेहीमे ने बॅचि-खुचि कऽ घरक मर्यादाकेँ संगे लऽ कऽ चलैक अछि। अहीमे ने अपन इमान-धर्म बँचबैत परिवार चलाएब तखनि ने समाजक संग कुटुमो-परिवारक प्रतिष्ठा ठाढ़ रहत।



फागु

कौआ डकैसँ पहिने केतौ-केतौ गाछपर पौरुकीक बोल फूटल कि रघुनी बाबाक नीन टुटलनि। जहिना अर्द्ध-चेत अवस्थामे किछु बजा जाइत तहिना मुहसँ निकललनि-

> ''आइ फगुआ छी। राति भरिक हँसैत चान सुरूजक लालीमा धरि अरियाति आबि चुकल अछि। केते सुन्नर राति-दिनक संग मिलि रहल अछि। जे जीबए से खेलए फागु''

बजैत-बजैत चेतना चेत गेलनि। चेतिते मन दोहरौलकनि-

> ''जे जीबए से खेलए फागु।''

मुदा जीवित-मृत्युक बीच एहेन लट्टा-पट्टी अछि जे के मरल के जीबैए, बिलगाएब कठिन अछि। कियो जीवित-मृत्यु बुझबे ने करैत तँ कियो बुझितो मानबे नै करैत। कियो जौं बुझबो करैत तँ काते हटौने रहैत। शिवजीक सीमा खिंचब कठिन अछि। पौह फटिते जहिना सुरूजक आगमन हुअ लगैत तहिना रघुनी बाबाक अलिसाएल मन जिनगी दिस नजरि उठौलकनि।

जहिना कोनो विद्यार्थीक पहिल कलम कोनो प्रश्नमे अँटकि जाइत तहिना रघुनी बाबाक मन अँटकि गेलनि। ओछाइनपर पड़ले-पड़ल कर करोट फेरलनि। मनमे उठलनि, अनाड़ीओ-धुनाड़ीओ कोदारिसँ परती खेत तामि लइए। कहाँ ओकरा हर जकाँ लूरि सिखए पड़ै छै। मुदा बिना लूरिए तँ कोदारिओ नै पारल जा सकैए। अँटकल मनमे उठलनि, किछु लूरि देखियो कऽ भऽ जाइत, किछु हाथ पकड़ि सिखौल जाइत आ किछु रगड़ि-रगड़ि कऽ सिखए पड़ै छै। ठमकला। पुन: मनमे उठलनि, जहिना पानि माटिक ऊपर छिछैल धारा बनि आगू बढ़ैत, तहिना तँ सुरूजोक किरिण छिछलैत पूबसँ पछिम चलैए। अँटकै कहाँ अछि। हँ अँटकैए। खाधिमे पानि अँटकैए, तामल खेतक गोलामे सुरूजक किरिण अँटकैए। मनमे संचार भेलनि। दिनक सगुन उचाड़ए लगला। फगुआक दिन छी। फागुनक विदाइ सेहो छी। आइए रातिमे चैतक आगमन सेहो हएत। मन मधुएलनि। पावनिक दिन छी। वसन्ती

पावनि। पुआ-मलपुआ खाएब, रंग-अबीर खेलब, होलीक संग विरहा वसन्त, ढोल-डम्फाक संग गेबो करब आ नचबो करब। मन पसीज गेलनि।

"एक दिनक भोजे की आ एक दिनक राजे की।"

ठमकल मन पाछू बढ़लनि। वसन्तक मध्य, होली पावनि। माघक इजोरिया पंचमी होलीसँ एक मास बीस दिन पूर्व वसन्तक जनम भेल। मुदा चैत-बैशाखकेँ वसन्त मानने तँ पूर्व पक्षे हरा जाइत अछि। जौं मध्य मानब तैयो पचास-साठिक दूरी बनि जाइत अछि। ओझराएल मन मुड़छि कऽ तुड़ुछि गेलनि। भने दस बरखसँ होली मनाएबे छोड़ि देने छी। लऽ दऽ कऽ भोजने टा शेष बँचैए। सेहो दिनेक फल छी। मुदा फलो तँ अनेक तरहक होइए- मिठो होइए, खट्टो होइए आ षट-मधुर सेहो होइए। तीनू संगो रहैए आ अलगो-अलगो रहैए। जामंतो प्रकारक भोजनमे तीनूक अपन-अपन महत छै। भोजमे जएह अचार अपन विशेष मतह बनौने अछि, वएह असगरमे दाँतकेँ कोंतिया कात कऽ दइ छै। जे काज करैसँ हनछिन करए लगैए। मनकेँ घुमिते उपकलनि, वसन्तक आगमनक दिन। आइए सरस्वती पूजा सेहो छी आ हरबाह गृहस्तक हर परतीपर ठाढ़ करत। ठाढ़े नै करत अढ़ाइ मोड़ घुमबो करत। अढ़ाइए मोड़क बोइनो तहिना। सभ परानी खेबो करत आ जेते धानसँ हरक नाश डुमतै तेते लैयो जाएत। पसारी भाथीक आगिमे धान-मरूआ लाबा फोड़ि सालक समए गुनत। मुदा सेहो होइ कहाँ छै? हेबो केना करतै, गाए-महिंसिक मास एक्कैस-बाइस दिनक होइ छै आ मनुखक भऽ जाइ छै तीस दिनक। जहन कि दुनू संगे रहैए। संगे लक्ष्मी बनैए, संगे ऐरावत। रघुनी बाबाक मनमे उठलनि- अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छी। पावनिक दिन छी हँसी-खुशीसँ उठब खाएब-पीब मौज-मस्ती करब। जे गति सबहक से गति हमरो। तइले अनेरे एते मगज-मारी करैक कोन जरूरति। राम-श्याम करैत रघुनी बाबा ओछाइनसँ उठैक विचार केलनि। तखने गाम दिससँ पीह-पाहक अवाज कानमे पड़लनि। भोरहरबा नढ़ियाक अवाज जकाँ अकानए लगला जे की कहै छै।

रघुनी बाबाक मनमे उठलनि, ओह, अनेरे पावनि छोड़लौं। जाबे जिबै छी ताबेए ने। मरि जाएब तँ के देखत आ केकरो देखब। मनमे फेर उपकलनि, किए नै पावनि छोड़ी? जइ होली पावनिक नाओंपर इज्जत-

आबरूक, धन-सम्पतिक लूट हुअए ओ पावनि किए करब। मुदा भुताहि गाछ बूझि कियो आमक गाछ तर जाएब छोड़ि देत तँ आम केना खाएत? जामुनपर सहजे जम बैसलै अछि। बेल फड़ने कौआकेँ की? खैर जानह जओ जानह जात। गामक बात गौआँ जानह। मुदा परिवार तँ अपन छी। परिवारक नीक-बेजाएक तँ जवाब दिअए पड़त। मुहोँ चोरा कऽ रहब नीक नै। केते दिन जीबे करब। आइसँ फेर फगुआ खेलब। मुदा खेलब केतए? परिवारक संग खेलब...।

रघुनी बाबाक मन नीक जकाँ असथिरो नै भेल छेलनि आकि दादी आबि टोकलकनि-

"सौंसे गामक लोक हर-बिर्ड़ो करैए आ अहाँले भोरो ने भेल। आबो उठब की सुतले रहब?"

जहिना नोनगर बिस्कुट खेलापर चाह पिऐक मन होइत तहिना रघुनी बाबाब मन भेलनि। घोकचल भौंहुक बीचक करिया तीर तनैत बजला-

"जखनि अहाँ आबिए गेलौं तखनि किए ने गाछक जड़िएमे पानि ढारी जे डारि-पात सगतरि पहुँचतै। अहीं संग फगुआ खेलब।"

बाबाक बात दादीक हृदैकेँ बेधि देलकनि। छटपटाइत उत्तर देलखिन-

"अखनि जे तीस-पैंतीस गोरेक फुलवाड़ी लगल अछि ओ केकर छिऐ? जहिना कृष्ण वृन्दावनमे फागु खेलाइ छला तइसँ कि कम हमर अछि।"

मुस्की दैत रघुनी बाबा कहलखिन-

"अखनो धरि मनमे बेइमानी अछिए जे अपन कहलिऐ आ हमर छोड़ि देलिऐ?"

अड़हुलक कली सदृश तीर साधि दादी दगलनि-

"अहाँकेँ आन बुझै छी जे फुटा कऽ कहितौं।"

“अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ। परिवारमे सभकेँ कहि दियौ जे दुपहर तक सभ कियो नहा-खा तैयार भऽ जाए। बेरू पहर दुनू गोरे केना जुआनी बितेलौं से सौंसे परिवारकेँ सुना देबै।”

बाबाक बात सुनिते दादीक आँखि मधुआ गेलनि। बजली-

“आबक लोककेँ निमहतै। मन अछि की नै जे दुरागमनक तेसरे दिन पटुआ काटए पू-भर गेल रही।। ऐठाम रौदी भऽ गेल रहै आ डेढ़ बरख पछाति आएल रही।”

दादीक बात सुनिते रघुनी बाबा उठि कऽ बैसैत बजला-

“अझुका लोकक मने बदलि गेल अछि। जेकर देखा-देखीसँ बालो-बच्चा प्रभावित भऽ रहल अछि।”

बजैत-बजैत जहिना दादी-दुनियाँ बिसरि गेली तहिना सुनैत-सुनैत कथा-वक्ता-श्रोता जकाँ रघुनी बाबा जिनगीक बोन्मे बोना गेला। एक मन औनाए लगलनि तँ दोसर मन गाबए लगलनि-

“सदा आनन्द रहे अही दुआरे मोहन खेले होरी हो।”

दादी दरबज्जासँ आँगन दिस गुनगुनाइत बढ़ली-

“कियो लुटाबए अपन महिमा।”

जुआनीक रंगमे रंगि रघुनी बाबा गाम दिस विदा भेला। दरबज्जाक बाट टपि गामक बाटपर पहुँचिते मनमे उठलनि- देखा चाही, केते नवतुरिया सभ देहपर रंग फेकैए आ केते जुआन-जहान अकाससँ अबीर उड़बैए। मुदा लगले मनमे उठि गेलनि, लोको लाज तँ छी। धिया-पुता केना रंग देत? किए ने देत, खेलाएत तँ अपनामे, मुदा छिच्चा उड़ि जे पड़त ओकरा की कहबै। एका-एकी दादी परिवारक सभकेँ अपने मुहेँ कहलनि। बाबाक समाद दादी भरि मन बँटलनि। नीक-बेजाए दुनूक समीक्षा हुअ लगल। अन्त-अन्त यएह सभ बुझलक जे कहियो ने से पावनि दिन। बूढ़-पुरानक हुकुम छियनि, तँए यादि स्वरूप सुनि लेब नीके हएत। के कहलक अगिला होली देखता आकि नै। जौं देखबो करता तँ के कहलक जे पाँखि तोड़ि कऽ देखता आकि

ओछाइन धेने देखता तेकर कोन ठेकान। मुदा ईहो बात मने-मन उठैत जे वएह देखता हमहीं नै देखिऐ। कम-सँ-कम तँ ई हएत किने जे सौंसे परिवार एकठाम बैस पवनिक दिन बिताएब। दादीकेँ पोती कहियो देलकनि जे आइ भानसो तोरे करए पड़तौं।

समैसँ किछु पहिने परिवारक सभ कियो दरबज्जापर पहुँचल। बाबा-दादीक बात तँए महादेव-पार्वतीक फागु सबहक मनमे घुमैत सबहक मुँह बन्न। सभ बाबा-दादीक बात सुनैले कान पाथि नजरि अँटकौने। रघुनी बाबाक मनमे उठलनि जे तिल-तण्डुल जौं फेंटा जाए तँ बिलगाएल जा सकैए मुदा जौं पानि-माटि फेंटा जाएत तखनि केना बिलगौल जाएत। तीन खाड़ी बीच परिवार अछि। सबहक अपन-अपन स्तर अछि, अपन-अपन जिनगी अछि। जिनगीएमे खुशीओ अबैत जाइत रहैए। मुदा जहिना लोक अपन नीक लेल सभ किछु करैए तहिना ने परिवारो लेल करैए। भलहिं परिवार पैघसँ छोटे किए ने भऽ गेल हुअए। फगुआ दिनक उमकीमे मन उमकि गेलनि। जहिना बर्खा पानिमे धिया-पुता उमकैए तहिना बबो-दादीक मन उमकए लगलनि। दादीकेँ बाबा टीप देलखिन-

> ''जइ साल दुरागमन भेल रहए आ परदेश गेल रही, से मन अछि आकि बिसरि गेलौं?''

बाबाक प्रश्नक उत्तर दादी केना नै देथिन। बाबाक ने रोच (धाख) मुदा परिवारक तँ गारजने। निचलासँ ऊपर छीहे। सिनेमाक कलाकार जकाँ दादी पोजमे बजली-

> ''लोक सुख बिसरि जाइ छै, दुख मोने रहै छै। किए ने मन रहत।''

दादीक पोज देखि छोटकी पर-पुतोहु अपन हालक दुरागमन बूझि बाबाक प्रश्नपर जोर देलक। पुतोहुक टॉट बोली सुनि दादीक मनमे उठलनि जे मुँहजोर पुतोहु अछि एकटा उत्तर देबै तँ दोसर दोहरा देत। मुँह नोचि कऽ खा जाएत। तइसँ नीक जे अपने मुहेँ कहए दियनि।
दादीकेँ हारि मानैत बूझि रघुनी बाबा लपकि प्रश्न पकड़ि बाजए लगला-

“कनियाँ, नव-कबरिए रही। मोँछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। तीन सालसँ परदेश खटैत रही। जेठ मास दुरागमन भेले रहए। दुरागमनक तेसरे दिन मेड़िया सभ पू-भर जेबाक समए बनौलक। अपनो घरमे चूड़ा-भुसबा रहबे करए बटखरचा लऽ लेलौं। भाड़ा-भुड़ी लेल गोर लगाइबला रूपैआ रहबे करए। तेसरा दिन चलि गेलौं।”

जिज्ञासा करैत पुतोहु पुछलकनि-

“पएरे गेलखिन आकि गाड़ी-सवारीसँ।”

जेना गुड़ घावसँ पीज निकलै काल सुआस पड़ै छै तहिना बाबाक मनमे सेहो भेलनि। विह्वल होइत बजला-

“कनियाँ, निरमली तक रेलगाड़ीसँ गेलौं। तेकर बाद पूब दिसक रस्ता धेने कोसी घाटपर पहुँचलौं।”

“धार केना टपलखिन?”

“कनियाँ, जेठुआ समए रहै। धारक पेट खाली भऽ गेल रहै मुदा तैयो अगम पानि तँ रहबे करै। ओना फुलाइक समए भऽ गेल रहै मुदा फुलाएल नै रहए। बेसी नाव भदबरियामे डुमै। एक बेर अहिना भेल जे अपने गौआँक मेड़िया घुमैकाल डूमि गेलै।”

उत्सुक होइत पुतोहु पुछलकनि-

“केते गोरे रहथि?”

“तेरह-चौदह गोरे अपना गामक रहथि आर गोटे आन-आन गामक। चालिस-पैतालिस गोरे नावपर चढ़ल रहथि।”

“केते दिन पू-भर कमाइ लेल गेलखिन?”

मन पाड़ैत रघुनी बाबा कहलखिन-

“तेकर ठेकान अछि। मुदा तैयो बीस-पच्चीस बरख तँ गेलै हएब।”

''कएक दिने पहुँचै छेलखिन?''

''ऐबेर तीनियेँ दिनमे रंगैली पहुँच गेलौं। बजारसँ थोड़बे हटि कऽ पकड़ा गेल। चिन्हरबे गिरहत रहए।''

''जौं ओइठीम काज नै पकड़ैतनि तखनि की करितथिन?''

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक जुआनी मनमे उठलनि। जोशमे बजला-

''की करितिऐ! कोनो कि ओतबे देखल-सुनल रहए। मोरंगमे नै काज भेटितए तँ आगू बढ़ि जैतिऐ। सिलीगुड़ी असाम, ढाका तक ठेका दैतिऐ। मुदा काज केने बिना नै अबितिऐ।''

''कोन काज करै छेलखिन?''

काजक नाओं सुनि बाबाक मन बौरा गेलनि। कहलखिन-

''कनियाँ, काजक कोनो ठेकान अछि। गिरहस्तौआ सभ काजक लूरि अछि। ओना धन रोपनी-कटनी आ पटुआ कटैले जाइ छेलौं।''

''केते दिन रहै छेलखिन?''

''सालमे दू-बेर जाइ छेलौं। घुमा-फिरा कऽ छह मास लगि जाइ छेलए। धन कटनीमे तँ एक-लगना काज रहै छेलै। मुदा पटुआ समैमे काज छिड़िया जाइ छेलए।''

मुँहपर एकटा आँगुर लैत पुतोहु पुछलकनि-

''एक-लगना काज केकरा कहै छथिन?''

पुतोहुक प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक गुरुमन जागि उठलनि। नजरिपर नजरि दैत कहए लगलखिन-

''एक-लगना काज ओ भेल जे क्रमबद्ध चलैए। एकक बाद एक काज अबैए। जेना भानस करै काल चूल्हि पजारि बरतन चढ़बै छी। अदहन दइ छिऐ। पानि गरम होइए तखनि सिदहा लगबै छी।

यएह क्रम एक-गलना भेल। मुदा जखनि रोटीओ पकाएब रहत, तरकारीओ बनाएब रहत आ भातो रान्हब रहत तखनि ओ काज छिड़िया जाएत। छिड़ियाएल काजमे अधिक भनसीओ आ चुल्हिओक जरूरति पड़ि जाइ छै। नै जौं भनसिआ असगरुआ रहल तँ छिगड़ी-तानमे पड़ि गेल।''

''एक-लगना काज केना करै छेलखिन?''

''पटुऐक कहै छी। पहिने ओकरा कटलौं। काटि कऽ जमा कऽ देलिऐ। ती-चारि दिनमे पत्ता झड़ि जाइ छेलै। तखनि ओकरा अँटियाहा बोझ बनबै छेलौं। पानि ठेकिना उघि कऽ लऽ जाइ छेलौं। पानिमे बाँसक खुट्टी पाटि कऽ, तीन-चारि छल्ली लगा दइ छेलौं एक-दोसराकेँ दबबो केलक आ ऊपरसँ माटिक चेका चढ़ा दइ छेलौं। पानिक तरमे सभ डुमि जाइ छेलै। गोरलाक बीस-पच्चीस दिनमे सीझ जाइ छेलै। तखनि ओकरा मुंगरीसँ झाड़ि-झाड़ि साफ करै छेलौं।''

''पटुआमे भरिगर काज की होइ छै?''

प्रश्न सुनि रघुनी बाबाक आँखि ढबढबा गेलनि। आँखि ढबढबाइते पानि पड़ल खजुरी जकाँ मधुर भऽ गेलनि। कहलखिन-

''कनियाँ, अखनि अहाँ बाल-बोध छी। दुनियाँक तीत-मीठ नै बुझलिऐए मुदा कहै छी। काजे जिनगी छी। तँए काजसँ सटबाक कोशिक हरिदम करी। हरिदम करैक मतलब ई नै जे भरि दिन देहे धुनी। जहिना राजमिस्त्री मकानक नक्शा बना मकान बनबैए तहिना काजोक छै। छोटे-काज नम्हर लग लऽ जाइ छै आ आगू मुहेँ टुस्कीएबो करै छै।''

''प्रश्न छूटि गेलनि बाबा?''

''कनियाँ, की कहब? तरकारी तँ ओलो छी जे गाछमे एकेटा होइए, जा कऽ खट दे उखाड़ि लेब। उखाड़ैमे जेते समए लगल ओइसँ कम समैमे सजमनि तोड़ल जा सकैए। मुदा सैकड़ो फड़ैबला

सजमनि बिना देखने-सुनने टेबि केना सकै छी। टेबब असान काज तँ नै। मनमे दूटाक तुलना करब छी। तहूमे किछु एहेन होइत जे कमे उमेरमे फुफुआ कऽ नम्हर भऽ जाइत आ किछु लुलुआ कऽ बौना भऽ जाइत। जौं छोट जानि, छोड़ैत जाएब तँ ओ तरेतर जुआ जाएत, मेहनति डूमि जाएत। तँए हल्लुको काज भारी होइए।''

''बाबा, फेर भँसिया गेलखिन?''

''नै कनियाँ, भँसियाइ कहाँ छी। होइए जे हृदए फाड़ि अहाँ सबहक बीच छिड़िया दी आ अहाँ सभ तितिर जकाँ सभ पीब ली। मर्द बनि जखनि काज करए निकललौं, तखनि भरिगर की आ हल्लुक की। मुदा एकटा बात धियानमे जरूर रखक चाही जे कोन काजमे केते जोखिम उठबए पड़त। जइ काजमे जेते जोखिम होइ ओइमे ओते सतर्क रही। तर्के रस्ता बनबैए। पटुआ काजमे सभसँ भरिगर अछि पटुआ झाड़ि सोन बनौनाइ। जहिना एक-दोसर जिनगी पबैत तहिना डाँड़ भरि सड़ल पानिमे जइमे जोंक-ठेंगीक संग विषैला साँप सेहो रहैत। चानिपर टहटहौआ रौद, निच्चाँ डाँड़ भरि पानि। सर्द-गर्मक बीच शरीर। तैपर एक-लगना ठाढ़ भऽ कखनो एकटंगा ठेहुन बना पटुआ जड़ि जोड़ल जाइत, तँ कखनो वामा हाथमे उठा दहिना हाथे मुंगरीसँ झाड़ल जाइत। माछी-मच्छड़क तँ ठेकाने कोन।''

सिनेहासिक्त होइत पुतोहु पुछलकनि-

''केते दिनक पछाति घुमलखिन?''

''डेढ़ बरखपर घुमलौं। ओइ साल रौदी भऽ गेल रहै। रूपैआ पठा दिऐ आ अपने कमाय।''

''अनदिना, बिना सिजनक समैमे कोन काज करै छेलखिन?''

''कनियाँ, वएह समान सभ जेना- पटुआ, तोरी, धान इत्यादि देहातमे उपजै आ तैयार भऽ कऽ बजार अबै छेलै। बजारोमे काज बढ़ि जाइ छेलै। उठा काज करै छेलौं।''



लफक साग

गाममे खेतीक चर्च उठिते लाल काकीक लफक सागक चर्च उठिए जाइत अछि। ओना चरचोक क्रम अछि, मुदा लाल काकीक अलग पहिचान रहने उपजासँ उठैत चर्चक संग बेक्तित्वक चर्च उठिते रामायण-महाभारतक प्रमुख पद्यक चर्च जकाँ हुनको होइते छन्हि। चरचोक भिन्न-भिन्न क्रममे एना होइत जे केतौ-केतौ खाली गहुमेक चर्च चलैत तँ केतौ अगबे धानक। केतौ खइहनक संग दलिहनोक चर्च चलैत तँ केतौ खइहन, दलिहन, तेलहनोक उठि जाइत। केतौ अन्नक संग तीमनो-तरकारीक उठैत तँ केतौ तीमन-तरकारीक संग फलो-फलहरिक। केतौ एहनो होइत जे खेतीक संग माछो आ दूधोक चर्च उठि जाइत। भनडाराक भजनमे जहिना केतौ साखीसँ भजन शुरू होइत तँ केतौ भजनक बीच-बीचमे, तँ केतौ साखीएसँ विसर्जनो होइत। तहिना लाल काकीकेँ सेहो छन्हि। लफ सागक संग लाल काकीक सिनेह खाली सिनेहे नै जिनगी सेहो ओहन छन्हि जेहेन वैवाहिक बंधन होइत। जहिना कनाह-खोरसँ लऽ कऽ दिबड़ा भीड़मे बसैबलाक संग एकसँ एक देवसुनरि अपन जिनगी समरपित कऽ अपन कुल-खनदानक संग समाजक पाग मुरेठा सम्हारि रखैत तहिना लालो काकी छथि।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तही दिनसँ लफ साग सेहो संगे-संग एलनि। दुरागमन भेलापर जखनि लाल काकी सासुर विदा हुअ लगली तँ सतरिया धान खोछिमे दइले जे रखल रहनि तहीमे लफ सागक बीआ छिपा कऽ ओही धानमे ई सोचि मिला लेलनि जे जौं कागतक पुड़ियामे वा लत्तामे बान्हि राखब तँ खोंछि भरनिहारि देखिए जेती, जखने देखती तँ खोलबे करती। जखने खोलती आ सागक बीआ देखती तँ हो-ने-हो डाइन-जोगिनक फसाद ने कहीं उठि जाए। निछोहैमे कनी समैए ने लगत मुदा कियो बूझत तँ नै। सएह केलनि। सागक बीआ नैहरसँ सासुर अनैक कारणो रहनि। जहिना हजारोक भीड़मे प्रेमीक नजरि प्रेमिकापर रहैत तहिना लाल काकीक प्रेमी साग तँए संग नै छोड़ए चाहथि। ओना मनमे ईहो होइत रहनि जे अनेरे किए सागेक बीआ लऽ जाएब, जइ गाम जाएब तोहू गामे तँ लफ साग होइते हेतै, मुदा मन नै मानलकनि। मनोक मानब तँ साधारण नहियेँ अछि। भलहिं साधारणो बात वा काज कहि मना लेब, ई अलग

अछि। लाल काकीक मन ऐ दुआरे नै मानलकनि जे गाम-गामवे जहिना धानक खेती होइतो एकरंगाहो धान होइत आ नहियोँ होइत। तहिना ने सागोक अछि, केतौ मतौना, ढेकी साग होइत तँ केतौ पालक-ठढ़िया। केतौ ललका ठढ़िया तँ केतौ हरिअरका। केतौ उजड़ा भुल्ला होइत तँ केतौ सतरंगा सेहो होइत। तँए जहिना गाम-गामक पानि, तहिना वाणि, तहिना खेती तहिना वाड़ी तहिना झाड़ी, तहिना फुलवाड़ी, तहिना ने आनो-आन होइत। तँए कोनो जरूरी नै अछि जे लफ साग ओहू गाममे होइते हेतै। जौं नै होइत हेतै तँ लल्लो-विहल्लो भऽ जाएब। लइए जाइमे की लगत बूझब जे धाने अछि। यएह सभ सोचि लाल काकी जहिना तीर्थस्थानक यात्री पनपीबा बर्तनक संग सिदहो-समर संगे लऽ चलैत तहिना लफ सागक बीआ सेहो लऽ लेलनि।

लफ सागक गुण लाल काकीकेँ बूझल रहनि। किएक तँ नैहरोमे बेसी काल खेबो करथि आ उपजेबो करथि। खेतीओ हल्लुक। जखनि सागक गाछ जुआ जाइत तखनि ओइमे फड़ल बीआ सेहो रसे-रसे पाकि जाइत। जहिना बूढ़-बुढ़ानुसक विचार बिनु पुछनौं फूटि-फूटि झड़ए लगैत तहिना सागोक बीआ गाछक आशा छोड़ि खापड़िक लाबा जकाँ चनकि-चनकि बहरा जाइत। केतबो पानि-पाथर बरसौ आकि ठनका खसौ पृथ्वीक कोरामे छह मसुआ बच्चा जकाँ माइक छातीमे सूति रहैत तहिना सागोक बीआ सूति रहैत। मुदा अचेतन रहितो चेतन भऽ ओइ दिन फुड़फुड़ा कऽ उठि जाइत जइ दिन उठैक समए होइत। तँए कियो बीआ जोगा समैपर खेतकेँ तामि-कोरि बागु करैत तँ नहियोँ बागु केने ओइ खेतमे अपनो उगि जाइत जइमे पछिला साल भेल रहैत।

लफक सागमे लाल काकी जहनिक कारण छन्हि जे ओ जनै छथि जे जैठाम लोक नून-भात आकि नून-रोटी खा जीवन बसर करैए तैठाम जौं चारिटा लफ सागक पत्ताकेँ एकलोटा पानिमे कनी नून दऽ मेरचाइक फोरनसँ फोरना देबै तँ तेहेन सिनेही भऽ भात-रोटीमे सटि ओहन गति पकड़ि लैत जेना खाली सड़कमे बाहन धड़ैत। चारिए पातक मेजनक संग अदहा किलो मीटर ससारि लिअ।

जिनगीक संग पुरनिहार साग अपन कथा-बेथा ललकारी छोड़ि केकरा लग बाजत। जे ओकरा दिस घुमिओ कऽ ने तकैए तेकरा कहिए कऽ की

हेतै। खेतक आड़िपर पहुँचिते भुखाएल नेरू-पर्डू जकाँ लालो काकीकेँ साग कहैत-

“काकी, आइ नै हजारो बरखसँ गेनहारी बथुआ-नोनी इत्यादि संगे-संग चलैत एलौं कियो हवाइ जहाजपर भोज-भात करैए मुदा हमरापर किए ने केकरो नजरि पड़लै। जौं नजरि पड़ल रहितै तँ अहिना धरती धेने रहितौं?”

सागक दुखनामा सुनि लाल काकी विह्वल भऽ कहलखिन-
“बहिन, कियो अपना भागे-करमे जीबैए-मरैए। तइले अनेरे किए दुख करै छह। जइ दिन उपटि जेबह तइ दिन बुझिहक जे या तँ ई धरती नै रहए दिअए चाहैए वा ई धरती रहै जोकर नइए।”

साग बाजल-

“लाल काकी, लोक बड़ कुभेला करैए। नै तँ कहू जे सिमटीक आँगन-घर बना कऽ रहैए आ हमरो जौं अखाढ़मे कनी माटि छिड़िया सिमटीक अँगनोमे आकि छज्जीओपर लगा देत तँ की आसीन-कातिक तक भाँज नै पुरबै। मुदा आने साग जकाँ जे फुटा दइए जे ई गरमीक छी तँ ई जाड़क। भदवारिमे साग खेबोक नै चाही से कहू जे ई होइ?”

सान्त्वना दैत लाल काकी कहलखिन-
“अइले किए दुख करै छह, तोहर तँ मान-मर्जादा एते छह जे बिनु तोरे अपन माएओ-बापक उद्धार नै कऽ सकैए। करह दहक जेते कुभेला करतह से करह।”

मिथिलांचलक भोज जहिना अदौसँ आइ धरिक भोजनक इतिहास अपना पेटमे समेटिने अछि तहिना गामो ने समेटिने अछि। एक दिस भात दालिक संग तरकारी, तइ संग संग पानिमे बनल अदौरी, तँ तेलमे बनल बर-बरीक संग, दही-चिन्नीक संग विसर्जन होइत। जे भोज्यक इतिहास प्रदर्शित करैत तहिना बाधक बनल रखबारक खोपड़ीक संग बहुमंजिला मकानक बीच आदिक मनुखसँ लऽ कऽ सभ्य -आधुनिक- मनुख तकक इतिहासक झलकी सेहो दैत अछि।

जइ दिन लाल काकी सासुर एली तइ दिन ओ पनरहे-सोलहे बरखक रहथि। आने-आन जकाँ दुइए बरखक पछाति पतिकेँ मुइने विधवा भऽ गेली। मुदा दुइए बरखक अभियन्तर लाल भौजी, लाल काकी, लाल दादीक माला समाज पहिरा देलकनि। एकोटा संतान नै भेल छेलनि। जइ दिन पति मुइलनि तइ दिन एहेन ओझरीमे लाल काकी ओझरा गेली जे भरि पोख कानिओ नै सकली। ओझरी लगलनि जे जइ समाजमे वैधव्य बान्ह एते सक्कत अछि जे ता-जिनगी वैधव्य धारण केने रहैत। तैपर अशुभक उपराग ऊपरसँ। मुदा, की समाज ई भार लइए जे ओकर जिनगी इज्जतक संग केना चलतै। जे समाज केकरो जीवन नै दऽ सकैए की ओइ समाजकेँ केकरो ओंगरी बतबैक अधिकार छै? विधवाक संग जे-जे किरदानी समाज करैत आएल अछि आ कएओ रहल अछि कि ओ समाज सामाजिक बंधन बनबैक अधिकार रखैए? नारी जागरण लेल ओकर सुरक्षाक पक्का बेवस्था सेहो हेबाक चाही जौं से नै तँ ने ओ परिवारक संग अपन प्रतिष्ठा बँचा सकैए आ ने बाहर बँचा सकैए।

पतिक परोछ भेलापर माएओ-बाप आ सरो-समाज लाल काकीकेँ केतबो हिलौलखिन-डोलौलखिन, मुदा लाल काकी अड़ि गेली जे समाजमे हमरा सन बहुतो छथि, जहिना हुनका सबहक जिनगी कटतनि तहिना हमरो कटत। जेते भोग-पारसमे छल तेते भोगलौं आ माँ मिथिलाक फुलवाड़ी छोड़ि केतौ ने जाएब। जखनि अपने हँसुआ, खुरपी कोदारि चलबैक लूरि अछि, तखनि केतौ रहि जीवन-यापन कऽ सकै छी। अपन मान-मर्यादा अपने नै बिगाड़ब।

> अस्सी बरख पार केलापर लाल काकीक नजरि ओइ दिस गेलनि जे नजरिसँ देखने रहथि। नजरि-सँ-नजरि मिलाएब, टकराएब दुनू होइत तहिना लाल काकीक मनमे सेहो उठलनि। एहेन निचेनसँ जिनगीमे कहियो बैसबो ने कएल रहथि जे बुझबो करितथि आ सोचबो करितथि। जइ जिनगीमे बुधि-विचार जौं जिनगीक संग नै चलत ओ जिनगीए केहेन? गुनधुनमे पड़ल एकटा मन कहलकनि-
> “हमरा सन-सन लोक लेल जे बेवहार चलि रहल अछि ओकर निमरजना के करत?”

दोसर मन उत्तर देलकनि-

“जे निमरजना करैबला छथि ओ अपने चालिए ओंघराएल छथि तखनि अनका की देखथिन। पछिम मुहेँक गाड़ी पकड़ि पूब मुहेँ जाए चाहै छथि, से केना हेतनि।”

मनक घोंघौज देखि लाल काकी काल्हिए जे ओराहैले बदाम अनने रहथि, ओराहैले विदा भेली।

❍ ❍ ❍

तिलकोरक तरुआ

जहिना नम्हर दोकानमे प्रवेश करिते जीवनोपयोगी वस्तु देखि मन उबियाए लगैत जे ईहो कीनि लेब, ओहो कीनि लेब। मुदा पाइयो आ विचारो तँ ओतै रहैए जेतए पहिनेसँ विचार भेल अबैए। इच्छा रहितो किसुनलाल डेरामे डाइनिंग टेबुल नै लगा ओसारेपर अपनो दुनू परानी आ अतिथिओ-अभ्यागतकेँ खुअबैत। कम दरमाहा साधारण जिनगी। शहरमे रहितो गामक चालि-ढालि बेसी, कारणो स्पष्ट जे शहरी बनैले शहरी जिनगी बनबए पड़ैत। जे ओहिना नै पाइक हाथे बनैत। पाइयक काज मुहसँ थोड़े होइ छै। भलहिं मुँहक आगू पाइक मोल जेहेन होइ। खास्ता कचौड़ी मुँहमे लाड़ैत-चाड़ैत गर लगबैत देवकान्त बजला-

> "आह, बुझलह किने किसुनलाल किछु होउ, दुनियाँ सात बेर किए ने उनटै-पुनटै मुदा अपना ऐठाम गामक जे तिलकोरक तरुआ अछि, ओकर तुलना केतए हएत?"

देवकान्त भायक बात सुनि किसुनलालक मनमे कनीओ हिलकोर नै उठलै। किएक तँ मनमे यएह नाच होइत रहै जे डेरामे गौआँ एलाहें तँए ई नै अजश हुअए जे खेनाइओमे ठकि लेलक। नीक कि दब भरि पेट कहुना खाथि। जौं से नै हेतनि तँ दसठाम बजता जे खाइओ लेल भरि पेट नै देलक। तही बीच मनमे उठलै जे पूछि-पूछि खुआएब नीक। जे कम-सँ-कम पहिल बेर तँ कहता जे हँ इच्छापूर्ण खेलौं आब कनी अराम करैक ओरियान करह आ तोहूँ सभ खा-पीअह, काज-उदम देखहक। दैन्य दृष्टिए देखि किसुनलाल बाजल-

> "भाय साहैब, खाइ जोकर बनल छै की नै। कहाँ खाइ छिऐ चारिटा आरो नेने आबी?"

पहिलक ढकार ढेकड़ैत देवकान्त उत्तर देलखिन-

> "अँए हौ, तूँ हमरा राक्षस बुझै छह जे आगूमे एते वस्तु ढेरिया देलह हेन आ तैपर सँ परसन लइले कहै छह?"

जहिना डारिमे लागल मचकीक पहिल आस होइत तहिना, मनमे आस जगिते किसुनलाल बाजल-

> ''भाय साहैब, कनियैँ-कनियैँ समान सभ परसै लेल घरवालीकेँ कहने छेलिऐ। जेना-जेना भोजन करैत जेता तेना-तेना परसि-परसि दैत जेबनि।''

तहसाना जकाँ तहिआएल भोजन पाबि देवकान्त भायक मन गदगदाएल। किसुनलालक बात अंतो ने भेल छेलै आकि बिच्चेमे देवकान्त बाजि उठला-

> ''अँए हौ किसुनलाल, तूँ अनठिया बुझै छह। अपन घर छी जे खगत आकि बेसी खाइक मन हएत ओ मांगि कऽ लेब। तइले तोरा मनमे किए होइ छह जे भुखले उठि जाएब। हम ओहन लोक नै ने छी जे खाइओ लेब आ दुसिओ देब।''

तखने किसुनलालकेँ पत्नी -सिंहेश्वरी- हाथक इशारासँ शोर पाड़ि कहलखिन-

> ''तिलकोरक तरुआ दे भैया की कहलखिन?''
>
> ''किए?'' किसुनलाल पुछलक।
>
> ''तिलकोरक साग आ चटनी तँ खाइ छी, बनबैओक लूरि अछि, मुदा तरुआ नै खेने छी।''

ओना सिंहेश्वरी देवकान्तसँ अढ़ भऽ कहैत मुदा बोलीमे एहेन टाँस देने जे देवकान्तो बुझथिन। साग आ चटनी सुनिते मनमे उठलनि जे साग तँ केते दिन खेने छी। तहूमे जखनि पेशाबक गड़बड़ी रहए तँ पथ्यमे यएह चलैए। मुदा चटनी तँ नै खेने छी। लाज-संकोच तँ ओकरा ने होइ छै जेकरा बूझि पड़ै छै जे भारी छी। मुदा हम कोन भारी छी जौँ भारी रहितौँ तँ बुझले रहैत। नै बूझल अछि तँ बूझि लेब कोन अधला हएत। जौँ कहियो खाइएक मन हएत, बुझलेहे ने काज देत। अचार मुँहमे लैत मुँहक कर समेटि कऽ घोटैत बजला-

''किसुन, ई की कोनो गाम-घर छी जे कनियाँ एते संकोच करै छथि। एतै आबह कनी एकटा बातो बुझैक अछि।''

देवकान्तक बात सुनि किसुनलाल तँ ससरि कऽ लगमे आबि गेल। मुदा सिंहेश्वरी किछु आगू बढ़ि, किछु पाछू दिस आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। जहिना कोनो बच्चोसँ कोनो गप बुझै बेरमे रंग-रंगक प्रश्न, पूरक प्रश्न पूछि संतुष्ट होइत अछि। तहिना देवकान्तोक मनमे होन्हि जे कोनो बात बुझैले सोझहा-सोझही नीक होइ छै लजकोटर तँ बहुत बात छोड़िए दैत अछि आ बहुत बिसरिओ जाइत अछि। दोखाह तँ दुनू भेल। अपनाकेँ निच्चाँ उतरि सिंहेश्वरीकेँ ऊपर चढ़बैत देवकान्त कहलखिन-

''कनियाँ, आइ ने किसुनलाल दू-पाइ कमाएल हेन तँ फुलपेंटो पहिरने देखै छिऐ, मुदा जखनि गाममे छल तखनि तँ वएह एकटा चरिहत्थी गामछा छेलै। डाँड़मे लपेटने रहै छल। गप-सप्प करैमे कोनो लाज-धाक नै हेबाक चाही। हम जे बुझै छिऐ से अहूँ पूछू आ जे नै बुझै छिऐ से हमहूँ किए ने पूछब। तइले लाज-संकोचक कोन काज छै।''

पत्नीकेँ चुप देखि किसुनलाल-

''भाय साहैब, कहैले तँ गाममे नै छी मुदा गामे जकाँ एतौ छी। ने ओते कमाइ होइए जे होटल घुमब, ज्वेलरी घुमब। बस, डेरासँ कारखाना आ कारखानासँ डेरा अबै-जाइ छी। अठबारे -छुट्टी दिन- कनी-मनी घूमि लइ छी सेहो पएरे।''

पतिक बात सुनि सिंहेश्वरी पाछूसँ ससरि कनी आगू बढ़ि तिरछिया कऽ ठाढ़ भऽ बजली-
''की कहलखिन?''

देवकान्त-

''कहलौं यएह जे तिलकोरक चटनी केना बनबै छिऐ?''

देवकान्तक प्रश्न सुनि सिंहेश्वरी बजली-

“भैया, हिनका कि कोनो नै बूझल हेतनि?”

देवकान्त ___

“कनियाँ, कोनो कि हमरा जँचैक अछि, धरमागती कहै छी नै बूझल अछि।”

तैबीच सामंजस्य करैत किसुनलाल बाजल-

“भाय साहैब, ओना हम तरूओ खेने छी, सागो खेने छी आ चटनीओ खेने छी। धिया-पुतामे पाकल तिलकोरक फड़ सेहो खेने छी। जाबे माए जीबैत रहए ताबे आन दिन तँ नहियेँ मुदा जुड़शीतल पावनिमे तिलकोरक तरुआ अबस्से तरए। बड़ खर्चाक चीज छी। ओते खर्च कऽ खाएब असान थोड़े छै।”

पतिक सह पबिते सिंहेश्वरी बजली-

“भैया, हमर माए-बाप बड़ गरीब छला। भरि पेट अन्नो नै भेटै छेलनि तखनि जे तरुआ-बगहरुआक सेहन्ते करितथि से पार लगितनि।”

सिंहेश्वरीक बात सुनि मुड़ी डोलबैत देवकान्त बजला-

“हँ, से तँ ठीके। हमहूँ की कोनो बेसी खेने छी। जहिया कहियो घरदेखीमे केतौ जाइ छी तखनि खाइ छी। सेहो आब उठाबे भेल जाइए। आब तँ सहजे लोक तेहेन चिकनिया भऽ गेल जे अल्लुऐक पाँचटा पूरा लइए। नवका तूर तँ खाइक कोन गप जे बुझबो ने करैत हएत। पात-पुत कहि थोड़े खाएत। अच्छा छोड़ू ऐ सभकेँ, असल बात तँ छुटले अछि।”

विचारक सामंजस्य पाबि सिंहेश्वरीक उत्साह जगलनि, बजली-

“भैया, साग तँ बुझले हेतनि जहिना कदीमा पात, अड़िकंचन पातकेँ कत्तासँ काटि भुजल जाइ छै तहिना तिलकोरो पातक होइ छै।”

हूँहकारी भरैत सिंहेश्वरीक बातकेँ मानि देवकान्त बजला-

“हँ-हँ, तिलकोरक साग तँ केत्ता दिन खेने छी। मुदा चटनी नै।”

जहिना नव काज केने, नव जगहपर पहुँचने वा नव लोकसँ दोस्ती भेने मनमे खुशी होइत तहिना दस बरख पहुलका खेलहाक चरचा करैमे सिंहेश्वरीकेँ मनमे खुशी उपकलनि। मुस्कीआइत बजली-

“भैया, जहिना अड़िकंचन पातकेँ कदीमा पात वा आन पातक तरमे दऽ पतौड़ा बना आगिमे पकौल जाइ छै, तहिना तिलकोरो पातकेँ पकौल जाइ छै। जखनि उपरका पात झड़कि जाइ छै तखनि बूझि जाइऔ जे तिलकोरोक पात सीझ गेल हएत। ओकरा चूल्हिसँ निकालि चाहे पानिक वर्तनमे दऽ दिऔ नै तँ कनीकाल सराइले छोड़ि दिऔ। जखनि सरा जाएत तखनि ओकरा पतौड़ासँ निकालि सिलौटपर थकुचि कऽ पीसि लिअ। बहुत मसल्लाक काजो नै पड़ै छै। चसगरसँ नून मिरचाइ दऽ दिऔ। बस भऽ गेल। ओना लोक भातोमे खाइए मुदा रोटीक तँ बुझिऔ जे जहिना भातक दालि तहिना रोटीक तिलकोरक चटनी छी।”

सिंहेश्वरीक बात सुनि तेसर ढकार ढेकरैत देवकान्त लोटा उठा पानि पीब बजला-

“किसुनलाल, बहुत खेलिअ समानक आगू खेनिहार थोड़े ठठत। बड़ ओरियान केने छेलह।”

जहिना नीक विद्यार्थी बोर्ड वा युनिवर्सिटीमे टॉप केलोपर झुड़झुड़ाइत जे दुइयो प्रतिशत नम्बर और रहैत तँ अस्सी प्रतिशत पूरि जइतए। तहिना किसुनलाल कहलकनि-

“भाय साहैब, कनीओ आर खाइऔ।”

आग्रह सुनि देवकान्त बजला-

“हम कि कोनो राक्षस छी जे केतबो खाएब तँ पेटे ने भरत। मनुखक जे भोजन छिऐ से तँ खेबे केलौं। तूँ नै अंदाज केलहक जे लोक केते खाइए। पेटेक कोन बात जे मनो भरि गेल। अच्छा एकटा बात कहऽ जे अपन गौआँ के सभ ऐठाम, बम्बइमे रहै छथि?”

देकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलाल मने-मन सोचए लगल बम्बइ सनक शहरमे के केतए रहैए ई भाँज तँ मात्र दुइए गोटोकेँ रहै छै। पहिल जे काज नै करैए, दोसर जे कोनो कम्पनीक एजेंसी करैए। बाँकीकेँ कोन जरूरति छै। अठबारे छुट्टी होइए तइमे कि सभ करब केते करब, कपड़ा-लत्ता खींचब आकि सप्ताह भरिक अधखरूआ नीन पुराएब, आकि दुनू परानी मिलि कोनो नव जगह देखि लेब, आकि भेँट-घाँट करब। तखनि तँ ओहुना कियो-ने-कियो दर्शनीय जगहपर भेँट-घाँट भइए जाइ छथि। गाम-घरक हालो-चाल बूझि लइ छी आ संग मिलि चाहो-पान कऽ लइ छी। अपन मजबूरीकेँ छिपबैत किसुनलाल बाजल-

> "भाय साहैब, अहूँक जेठजन तँ परिवारे लऽ कऽ रहै छथि, हुनकासँ सभ भाँज लगि जाएत। तखनि हम एते जरूर कहब जे जइ करखानामे काज करै छी तइमे तीन गोटे छी। कहैले तँ उठे काज अछि मुदा सभ दिन काजो लगैए आ एकेठाम सात दिनक पगारो भेटैए। तइमे रवि दिनक सेहो भेटैए।"

देवकान्त-

> "अझुका तँ छुट्टी लिअए पड़ल हेतह?"
>
> "किए छुट्टी लिअए पड़त। कोनो कि ओकर दरमाहाबला नोकरी करै छिऐ। अझुका बदला रवि दिन काज कऽ देबै। कोनो की स्कूल-आँफिस छी जे सोलहन्नी बन्न होइए। करखाना छिऐ ने। सभ दिन चलिते रहै छै।"
>
> "परिवार किए गामसँ लऽ अनलहक ऐठामसँ कमे खर्चमे गामक परिवार चलैए?"
>
> "भाय साहैब, अहूँ अनठा कऽ बजै छी। गाम-घरक लोकक किरदानी नै देखै छिऐ जे ताड़ी-दारू पीब-पीब कि सभ किरदानी करैए। अपन इज्जत अपने सोझहामे नीको होइ छै आ लोक बँचाइओ सकैए। तखनि देखियौ, मनमे तँ अछिए जे जखने गाममे रहै जोकर, कोनो काज ठाढ़ करै जोकर पूजी भऽ जाएत चलि जाएब।"

"केते महिना बँचै छह?"

"एते दिन तँ बूझू जे कहुना कऽ गुजर केलौं मुदा आब छह माससँ गोटे महिना हजार रूपैआ आ गोटे पनरहो सौ बँचि जाइए।"

"बैंकमे जमा करैत जाइ छह किने?"

"बैक जाएब से छुट्टी होइए। एजेंट-फेजेंट तँ ढेरी अबैए मुदा ओकरा सबहक भाँजमे नै पड़ए चाहै छी।"

"कमो पूजीसँ तँ गाममे काज चलै छै। बिनु पूजीओक चलै छै।"

"हँ से तँ चलै छै। जेकरा अपन कारोबार नै छै ओ दोसराक काज करैए। मुदा देखते छिऐ जे केते बोइन दइ छै। तहूमे आब कहुना-कहुना दुनू परानीमे आठ हजार महिना उठबै छी, ऐठाम महगी अछि तँए कम बँचैए। मुदा गाममे तँ कम-सँ-कम ओते कमाइ हुअए जे जहुना गुजर कटै छी तहुना पूरा सकी।"

"अपन की अन्दाज छह जे केते दिनमे पूरा लेबह?"

"जौं भगवान निकेना रखलनि तँ डेढ़-दू सालमे जरूर पूरि जाएत। अहाँक भाय-साहैब सबहक दोसरे दिन-दुनियाँ छन्हि।"

भाय साहैबक नाओं सुनिते जहिना भरल पेटक गरमी होइ छै तहिना देवकान्तकेँ फूकि देलकनि। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"सुथनी भाय-साहैब। मन भेल जे कनी बम्बै देखी, दरभंगामे टिकट कटेलौं चलि एलौं। तोहर नाओं-ठेकान लऽ लेने रहिहऽ। तँए तोरा डेरापर चलि एलौं। भाइए छिआ तँ कि ओइसँ सतरह-बर नीक तूँ छह। कम-सँ-कम समाज बूझि तँ सुआगत केलह।"

अपन प्रशंसा सुनि किसुनलाल विह्वल भऽ गेल। बाजल-

"भाय साहैब, ओते तँ कमाइए ने अछि जे अइल-फइलसँ खर्च करब मुदा समाजक जौं कियो डेरापर औता तँ अनका जकाँ मुँह नै घुमा लेब।"

किसुनलालक सह पबैत देवकान्त बजला-

''किसुनलाल, परिवारे सभ कोकणि गेल तँ समाज केहेन हएत। मुदा तँए सोलहो आना परिवार कोकणिए गेल सेहो बात नइए। जाबे धरतीपर धर्म नै छै ताबे चलै केना छै।''

किसुनलाल-

''भाय साहैबक भेँट करबनि की नै?''

''मन तँ एको पाइ नै अछि मुदा जखनि ऐठाम आबि गेलौं तखनि नहियोँ भेँट करब उचित नहियेँ हएत। तोरा तँ हुनकर मोबाइल नम्बर बूझल हेतह किने?''

''हँ से तँ लिखल अछि। मुदा मोबाइल अपना कहाँ अछि?''

''बुथपर सँ तोहीं कहि दहुन जे देवकान्त गामसँ ऐला अछि। जौं गप करए चाहता तँ अपने कहथुन नै तँ जानकारी तँ भेटिए जेतनि।''

भायपर बिगड़ल देखि सिंहेश्वरी देवकान्तकेँ पुछलकनि-

''भैया, एना खिसिआएल किए छथिन?''

देवकान्त-

''कनियाँ, की कहब कहैले तँ पाइ-कौड़ीबला कहबै छथि। तहिना घरक घरोवाली छथिन। अपना तँ कनी-मनी कुल-खनदानक लाजो होइ छन्हि मुदा घरवाली जे छथिन से तँ भगवाने देल छथिन।''

सिंहेश्वरी-

''जखनि अपने नीक छथि तखनि हुनका घरवालीसँ कोन मतलब छन्हि?''

देवकान्त-

''मतलब पुछै छी। की कहब, बजितो लाज होइए जे एके परिवारक छी तखनि एना किए बजै छी। मुदा नहियोँ बाजब सेहो तँ गलतीए

हएत। अपने जे भाय साहैब छथि से मरदे-ने-मौगीए, बलिगोबना छथि। जहाँ किछु बाजए लगता आ पत्नीक आँखिपर नजरि पड़तनि आकि बोलीए बदलि जाइ छन्हि।”



एकोटा ने

पुरमपुर गाममे पुरन कक्काक परिवारकेँ गौआँ आ अनगौआँ पुनचन परिवारसँ जनैत छन्हि। ओना अस्सी बरखक अवस्थामे कहियो पुरन काका कनमा-कनइ नै पढ़लनि मुदा कनमा-कनइ दुनूक किरदानी देखि-देखि सदिकाल क्षुब्ध रहै छथि। गरे ने बैसै छन्हि जे जे वस्तु तराजूपर रखि बटिखाड़ासँ तौलल जाएत, ओ जौं बँटैत-खोंटैत, पौआ-कनमा होइत रत्ती-माशामे चलि जाएत तँ चलि जाएत, मुदा दुनियाँक एते नम्हर धरती केना बँटाएत-खोंटाएत कनमा-कनइ-फनै दिस पहुँच जाइए। वादलक किरदानी की पतालक पानि सोंखि लेत? जौं सोंखए चाहत तँ राखत केतए? हवा-बिहाड़ि केत्तेकाल अँटका कऽ रखि सकैए। खैर जे होउ मुदा पुरन काका करैला लत्तीक मचान जकाँ अपना परिवारकेँ बनौने छथि। जहिना सक्कत-कड़गर बीआ धरती धारण करिते, दियारीक तेल-बत्ती जकाँ अपन तिल-तिल अर्पित करए लगैए तहिना ने करैलोक बीआ केने अछि। वएह अँकुर ने धरती धारण करैत ऊपर आबि लत्ती बनि लतड़ए लगल। भलहिं पातर-छीतर कड़चीक आलम संग मचानपर किए ने पहुँचल हुअए। तँए कि ओ अपन शरीरक रच्छा करैत मुँह बँचबैत नै पहुँचल? जरूर पहुँचल अछि।

पुरन कक्काक परिवारोक सभ तेहने छन्हि जे अपनामे जे घंघौज होन्हि मुदा काका लग पहुँचिते मन सकदम भऽ जाइत छन्हि, किएक तँ सभ बुझैत जे अगियाएलमे हँसीओ ही-ही-आ कऽ धड़ै छै। तँए जहिना रस्तापर ऐंठैत-जुठैत चलैत साँप बोहरिमे प्रवेश करिते सोझ भऽ जाइत तहिना कक्काक सोझमे परिवारक सदस्य। ओना, बिनु पएरक चलैबला साँप माटिपर चलि केना सकैए। मन-चित्त मारि पुरनो काका राति-दिन परिवारेक पाछू लगल रहै छथि। अखनो मनमे ओहिना ओ बात तड़गर बनल छन्हि जे वीर भोग्या बसुंधरा। जे ऐ धरतीसँ प्रेम करत ओकरे प्रेमी बनि धरतीओ चुम्मा लेत। कखनो माए बनि, कखनो भाए-बहिन बनि।

चेतनसँ बालबोध धरिक परिवार पुरन कक्काक छन्हि। तालो मेल अजीव छन्हि। चेतन सभ पुरन काकाकेँ गार्जन बूझि अपन छुट्टी नेने रहैए तँ बालो-बोध सभ अपन बाबा बूझि अपने सभ किछु बुझैए। परिवारक सभसँ छोट बच्चा चारि सालक छन्हि। तालो-मेल नीक छन्हि। अँगनाक सभ

समाचारक समदिया रहितो संवाद-बाहकक काज करिते छन्हि। एहेन चेला भेटबो मोसकिल। मुदा से तँ छन्हिए। नवका दोस्तीआरे तँए बेसीकाल एकठाम रहने चाहो-बिस्कुट संगे करै छथि। काका खुशी जे अपन बात पहिने उसारि, भरि दिन गप सुनैले तैयार रहैए। आ पोता दीनमा खुशी जे आँखि-कान तँ तखने काजक बनत जखनि ओकरासँ काज कराएब। नै तँ गमे-गमे गेड़ी बनि जाएत। मुदा से कहाँ होइ, एक काने सुनै आ दोसर काने उड़ि जाए। उड़ैत-उड़ैत सुतली रातिमे सभ उड़ि जाए।

वसन्तक आगमन भऽ गेल। किछु दिन पूर्व जे जाड़सँ जड़ियाएल छल, पालासँ पलाएल छल ओ फुड़फुड़ा कऽ उठल। सुखाएल-सड़ल लत्ती आ कुमही जकाँ पबिते वसन्ती हवामे उड़ए लगल। मुदा तैयो बेदरंग भेल धरती, घर-आँगन जकाँ बाहरै-सोहरै लेल इशारा दिअए लगल। रसे-रसे रस भरल हवाक रमकी रमकए लगल। जहिना सेवा निवृत्तिक समए कोनो अफसरकेँ स्वर्ग सुझैत तँ कोनोक आगूमे नांगट नर्कक नाच होइत अछि, तहिना शिशिर -सिरसिराइत समए- वसन्तक बीच होइत। मुदा से बात पुरन कक्काक परिवारमे नै छन्हि। कोल्हुक बड़द जकाँ परिवारक सभ अपने-अपने नाचक पाछू लगल रहै छन्हि।

दिन उगिते दीनमा, बाइस खा जत्ताक -माटिक बनौल- दुनू पट्टा दुनू हाथमे नेने दरबज्जाक आगूमे बैस, रस्ताक धूरा-गरदाकेँ जत्तामे पीसए लगल। बिनु देखनौं आशा बनले रहै जे बाबा दरबज्जेमे छथि। सूतल छथि कि जागल, तइसँ कोन मतलब दीनमाकेँ। ओ तँ अपन काजमे बेहाल। मनमे रहबे करै जे चाहक बेर भऽ गेल अछि माए चाह आनि देबे करतनि, हमहूँ पीबे करब। परिवारक बोझसँ दबल थोड़े रहै जे नून नै अछि तँ केसक तारीखपर जाए पड़त। जहिना तत्ववेत्ता तत्वचिन्तनमे रमल रहैत तहिना दीनमा अपन काजमे हराएल। कोन मतलब ओकरा रहै जे बुझैत, काजक हराएल अधखरूआ रहि जाइए।

माइक हाथक चाह देखिते दीनमा, जत्ता छोड़ि आगूए आगू दरबज्जाक ऊपर चढ़ल। दीनमापर नजरि पड़िते पुरन काका मुस्की दैत कहलखिन-

“की दीनबाबू, चाहो-ताहक बेर भेलैए आकि नै?”

तैबीच चाह नेने पुतोहु पहुँच गेलनि। दीनमाक नजरि देबालमे टाँगल हनुमान जीक छातीक रामपर पहुँच गेल। देबालमे सटल फोटो देखि दीनमा बाजल-

''बाबा, उ फोटो उतारि दिअ।''

दीनमाक बात सुनि पोल्हबैत पुरन काका कहलखिन-

''बौआ, पहिने चाह पीब लिअ, पछाति ई सभ हेतै?''

जेना बुझले रहै तहिना दीनमा बाजल-

''पहिने अहाँ पीब ने लिअ, पाछू हम पीअब।''

बहन्ना पकड़ाइत देखि पुरन काका कहलखिन-

''हमरा हाथमे गिलास अछि केना उतारल हएत?''

चाह पीब, खिड़कीपर रखल खुरपी उतारि पुरन काका वाड़ी-झाड़ी दिस विदा होइक विचार केलनि। हाथसँ खुरपी छिनैत दीनमा आगू-आगू विदा भेल।

दारीमक वाड़ी पहुँच काका हिया-हिया हियबए लगला। गाछक जड़िमे पानिक अभाव बूझि पड़लनि। मुदा गाछक डगडगी आ फूलसँ लदल गाछ देखि मन ललिया गेलनि। लाल-लाल फूलसँ लदल गाछ। सभ डारिमे फूल लागल। खुरपी नेने दीनमा खाधि खुनैक जगह हियबैत। हिया-हिया फूलकेँ देखैत हरियाएल-हरियाएल फड़ो देखलनि। मन भेलनि जे जेतबे- तेतबे जड़ि सबहक खढ़ उखाड़ि दिऐ। मुदा नजरि दारीमक काँटपर गेलनि। डारिए काँट भऽ जाइए। ऊपर-निच्चाँ सगतरि काँट। जखने अपने खढ़ उखाड़ए लगब तखने ईहो -दीनमो- किछु-ने-किछु करए लगत। तहूमे खुरपी हाथेमे छै। तेहेन झाड़ी अछि जे सुगबा साँप जकाँ माथमे गड़तै कि गरदनिमे तेकर कोन ठेकान। जखने काँट गड़तै की कानब शुरू करत। जखने कानत तखने ओकरा चुप करब आकि गाछक जड़िक खढ़ उखाड़ब। समझौता करैत काज मनमे एलनि। काज ई जे फड़क गिनती कऽ ली। दीनमा हाथक खुरपी आड़िपर रखि, कोरामे उठा दीनमाकेँ काका कहलखिन-

"बौआ, अहाँकेँ नेने हम टहलब आ अहाँ फड़ गनब।"

नव फड़क गिनतीक काज देखि दीनमाक मन खुशीसँ आरो खुशिया गेल। मुदा कट्टा भरि झाड़ीक बगानमे पचासोसँ ऊपर गाछक फड़ केना गनि लेब। तहूमे बीसे तक गनल होइए। गाछक सभ फड़ अपने हिया-हिया देखथि, जे फड़क बीच कीड़ोक असर भेल हेन आकि नै। अपने तँ एक्केटा गाछक फड़ देखि अन्दाजि लेलनि जे केते हएत। जहिना गोल-गोल, किछु नमती नेने लाल-लाल फूल हरिअर होइत अपन जिनगीक फल पकड़ि रहल अछि, तहिना तँ गोटि-पंगरा करुआएल आमक आकार सेहो पकड़ि रहल अछि। एकसँ दोसर गाछक फड़ गनैमे दीनमा बेर-बेर बिसरि जाए। कखनो गिनतीए छूटि जाइ तँ कखनो अंके बिसरि जाए। कखनो बीससँ ऊपर नै बढ़ल। अंतमे काका पुछलखिन-

"बौआ, केते फड़ भेलह?"

बाबाक प्रश्न सुनि दीनमाक मुहसँ निकलि गेल-

"दसटा।"

"अच्छा बड़बढ़ियाँ। आब एतए आबि कऽ खेलिहऽ। ओगरबाहिओ भऽ जेतह आ खेलबो करबह।"

नीक फसल भेलनि। खाइ जोगर फल हुअ लगल। फड़ फल बनि गेल। ओना सजमनि फड़क-फड़े रहि जाइत। मुदा दारीम, आम, लताम इत्यादि फड़सँ फल बनि जाइत अछि। अंतिम अवस्था अबैत-अबैत तूबि-तूबि फल अपने खसए लगल।

गाछक सभ फल समाप्त भऽ गेल। जहिना परसौती जनानाकेँ देख-भालक जरूरति पड़ैए तहिना ने वाड़ीओ-झाड़ीक अछि। ई सोचि पुरन काका दीनमाक संगे दारीमक गाछ लग पहुँचला। जे कहियो फड़-फूलसँ लदल छल ओ सून-सून भेल गाछ अपन बेथा सुना रहल अछि। बेथित मने दीनमाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, केते फड़ अछि?"

विचलित होइत दीनमा बाजल-

“एकोटा ने।”

“ऐ लेल विचलित किए होइ छी। जहिना समए आएल छेलै तहिना फेनो औतै।”

“केना औतै?”

“समए अनुसार एकर ताक-हेरि करबै तँ एबे करतै।”



धोतीक मान

जहिना तेहैया बोखार तरे-तर अबितो आ जाइतो रहैत तहिना लाल काकाकेँ तीन दिनसँ विचित्र सोग गहि कऽ पकड़ि लेलकनि। ओना जखनि कोनो काजक अनमेनामे लगि जाइ छथि तखनि छोड़िओ दइ छन्हि। मुदा काज बदलिते पुन: आबि जाइ छन्हि। मुदा कहबो केकरा करथिन, घरेलू सोग छियनि। सोगो तेहेन जे जहिना तिआरि जालमे माछ फँसि जाइत। ने बंशी जकाँ जे बोरक सुगंधसँ फँसि जान गमबैत आ ने सहतक ठनका जकाँ। मुदा तैयो तँ घाउ लगले छन्हि।

सोगक दोसरो कारण छन्हि। ओ ई छन्हि जे दुनू परानीक बीच कहियो वैचारिक संघर्ष, रक्का-टोकी नै भेल छेलनि, जे सद्य: सोझहामे देखि पड़ैत अछि।

बात किछु ने बुढ़िया फूसि मुदा सोग तेहेन जे रोगौने टा नै, सोगौने सेहो छन्हि। जइसँ कोनो काज करैमे मने ने लागए दइ छन्हि।
तीन दिन पहिने जखनि सढ़ुआरेसँ भरपूरा नोत एलनि तखनेसँ सोगक आक्रमण भेलनि जे गहिया कऽ धेने छन्हि। ने छोड़ैत बनै छन्हि आ ने पूरैत। साधारण जिनगी जीबैक अभ्यास तँए पाइ-पाइक हिसाब जोड़ि समुचित काज करैत जिनगी चैनसँ चलैत छन्हि। गतिक अनुकूल आमद-खर्च रहने भातक उजड़ा आँकर जकाँ दाँत तर खटखटाइत रहनि। ऑकर संग भातो फेकए पड़तनि। नजरि उठा कऽ देखथि तँ सोझहेमे देखि पड़नि जे भारमे धोतीक खर्च वाह्ययात अछि, किएक तँ धोतीक मान तँ ओइ समए सर्व सम्मति छल जखनि एकाधिकार वेपार जकाँ छल, मुदा जैठाम दू सए रूपैआक धोती लऽ जाएब, तैठाम कियो पहिरिनिहार नै अछि, मांगलिक काज छोड़ि धोती म्यूजियमक वस्तु बनि गेल अछि। अपन तँ दू दिनक कमाइ दहा जाएत। मुदा पत्नी तँ मानती नै। अपना सीमामे सभ बताह होइए, भलहिं आन सीमामे नांगरि पटपटबए आकि दाँत चिआरए। मानबो उचित नहियेँ। किएक तँ पत्नीक मान तँ परिवारमे दादीक छन्हि। बाबा-दादाक पकिया संगी। शुभ काजक शुरूहेमे खट-पट भेने कहीं अंत धरि ने खटपटाइते रहि जाए, तेकर डरो रहनि। विचारि लेब जरूरी बूझि लाल काकीकेँ पुछलनि-

“काल्हिए ने नोत पूरए जाएब। आइए ने सभ ओरियान-बात कऽ लेब?”

लाल काकी कहलखिन-

“घरक ओरियान ने हम करब आकि हाटो-बजारक करब?”

लाल काकीक चढ़ल तर्क देखि लाल काका दोहरौलखिन-

“बजारक काज की सभ अछि?”

“आर किछु ने अछि। खाली जोड़ भरि धोती आ अंगा आ गमछा कीनि लेब।”

लाल काकी आढ़ति सुनि लाल काका मने-मन जोड़थि तँ देखि पड़नि जे कियो धोती पहिरिनिहारे परिवारमे नै अछि, जखनि धोती नै तखनि कुर्ता आ गमछा तँ सूखल नून-चूड़ा भेल। केतबो हएत तँ जलखैइए। मुदा बेवस भेल रहथि। तैयो पुछलखिन-

“आब कि कोनो भार-दौर चलै छै जे ई सभ लऽ जाएब?”

लाल काकाकेँ चिलहोरि जकाँ झपटैत लाल काकी कहलखिन-

“चाउर दहीक बदला रूपैआ लऽ जाएब मुदा नव वस्त्र नै लऽ जाएब से केहेन हएत?”

कहैत नोर ढवढबा गेलनि। फटैत छातीक दर्द बाँसक झाँझन जकाँ झनझनाए लगली-

“बहिन मरमा मरिए गेल, मुदा अंतमे मुँह नै देखि पेलौं। भगवानो तेहेन जे सभटा दुख ओकरे घरमे देलखिन। चढ़ल जुआनी दुनू परानी मरल, अरहाइ बरखक मइटुग्गर-बपटुग्गर बेटाक बिआह छिऐ, तेकरा पाँच हाथ वस्त्र हम नै देबै, तँ दुनियाँमे के देतै?”



साझी

गामक पहिल घटना तँए गाममे विचित्र हलचल भोरेसँ उठि गेल। उठबो केना ने करैत, अखनि धरि तँ इतिहासो यएह कहलक आ समाजो सएह। मुदा घटना बदलने इतिहासक रस्तो बदलि जाइ छै आ वहिला समाज सेहो वाह पकड़ै छै। विचित्र हलचलक कारण भेल विचित्र घटना। विचित्रक कारण भेल चित्र विचित्र बनि गेल। तँए गामक सबहक मनकेँ कुचित्र-सुचित्र बनबए लगल। जेते जेकर रंग-गाढ तेहेन तेकर चित्र गढ़गर। तँए एक रंगाह नै भेने आरो बेसी हलचल। मनक प्रेम तँ तखनि ने बढ़ै छै जखनि अनुकूल प्रेमी भेटै छै। प्रेमीओ कि कोनो एक्के रंगक होइए जे ओहीपर नजरि पड़तै आ नजरि पड़िते धारक पानि जकाँ मोटाए लगतै। जौं से नै हेतै तँ जेहो छै तइमे सँ किछु रौदमे उड़तै, किछु धरती पीतै आ किछु लोको घटौतै। जहिना बिलंबसँ चलैवाली गाड़ी टीशने-टीशन विलमैते चलै छै, भलहिं कुमेल भेने रस्ता-बाटमे छोड़ि आन-आन दौगैत चलैए। ओना गामक विचित्र घटना देखि सबहक मन उड़ैत मुदा जिनगीक काज पकड़ि-पकड़ि हटबैत गेल। केतबो हटल तैयो तँ बाँकीए रहि गेल। सोलहन्नी नहियेँ हटल। नहियेँ हटल तँ कि हेतै? अदहासँ बेसी तँ रहिए गेल, तँए बहुमते सँ ने समाज देश सभ चलै छै। तखनि गामेमे कोन उनटन भऽ गेलै जे गाम-समाज नै चलतै। लेकिन गामो तँ सोलहन्नी नहियेँ मरि गेल जे कियो नामो लइबला नै रहतै। से तँ अछिए। सेहो तेहेन अछि जे हजार कानकेँ एक्के बेर भरि देत। जहिना पूजा करब काज छी तइसँ कि हल्लुक काज फूल तोड़ब छी। जखनि नै छी तखनि किए दुनू दू रंग हेतै।

चौबट्टी परहक इनारक चलती सभसँ बेसी भऽ गेल। नवकी पनिभरनी सभ थैर-गोबर छोड़ि-छोड़ि पहिने पानिए भरए इनारपर पहुँच गेली। मुदा तँए कि पुनियो दादी आ घुरनीओ दीदी ओहने अगुताएल जे पहिने पानिए भरए पहुँचती। एक तँ बेटा-पुतोहुकेँ डाकनि देती जे ऐसँ निपुत्रे नीक। ने तँ ऐ चौथापनमे अपने घैल उठाबी। तहूमे नवका आगि गाममे पजड़ल। माघमे अनको धधगड़ घूर भेटए तँ ओकरा छोड़ि देब बेवकुफीए छी, भलहिं अपनो धिया-पुता किए ने घरमे कठुआए जाए। ओना दुनू गोटेक घर इनारसँ बहुत

हटल नै मुदा लग-दूर कोन बात भेल? लगोक बाटमे दसटा गप करैबला भेटल तँ बेसीए समए लगत आ नहियेँ भेटने दूरो लग भऽ जाइ छै। सएह दुनू गोरे, पुनियो दादी आ घुरनीओ दीदीकेँ भेलनि। जवाबदेहीओ तँ कम नहियेँ छन्हि अनकर बातसँ ऊपर उठा अपन बात नै रखती तँ पुनिया दादी आ घुरनी दीदी कथीक। तइसँ नीक तँ नवकी जे कम-सँ-कम अपनो हित-अपेछित लग रसगर बात बजै छथि।

संजोग तँ संजोगे छी। चाहै काज करैक संजोग हुअए आकि भोज खाइक, नीके होइ छै। भलहिं ओ चालि बदलि कुसंजोगे किए ने भऽ जाए। पूबसँ पुनिया दादी आ दछिनसँ घुरनी दीदी पहुँचली। पुनिया दादी घुरनी दीदीसँ जेठ। तँए जेठक आदर करैत घुरनी दीदी इनारपर चढ़ैसँ पहिने स्वागत करैत पुनिया दादीकेँ टूसि देलखिन-

> "जहिना पावनि दिन परिवार हड़बड़ा जाइत तहिना दादीकेँ देखै छियनि?"

अपन स्वागत देखि पुनिया दादीक मन खुशीसँ खुशिया गेलनि। टुटल दाँतक मुहसँ मुस्की दिअए लगलखिन। अखनि धरि पुनिया दादीकेँ धेनहि जे गामक बात हमरा छोड़ि दोसर बुझबे ने करैए। भलहिं सात पुतोहु हाथे मारि-गारि किए ने खाइत हेती। पहिने तँ आँखि उठा इनार दिस तकली तँ बूझि पड़लनि जे जिज्ञासु बेसी अछि। घुरनी दीदी दिस देखैत बजली-

> "गै घुरनी, कहुना भेलैँ तँ बेटीए भेलैँ, आइ-काल्हिक नव-नौतुक हमर-तोहर बात सुनतौ। देह देखि सभ अपने मोटाएल अछि। मुदा तोरा नै कहबो से केहेन हएत?"

जिज्ञासा भरैत घुरनी दीदी मलसारि दैत बजली-

> "कोनो तेहेन गप छन्हि दादी?"

पुनियाकेँ सभ दादी कहैत आ घुरनीकेँ दीदी। ओना उमेरो हिसाबसँ उचिते छेलै। मुदा दुनू गामक पुतोहुए बनि गाम आएल रहथि। दीदीक आदरसँ दादी आरो अह्लादित होइत। जहिना संज्ञाक संग सर्वनाम, विशेषण आदि सभ अगुआ-पछुआ बनि रथकेँ खिंचैत तहिना दादीक मनमे सेहो उठलनि। सोझहे बजैसँ नीक बूझि पड़लनि जे अलंकार-छन्द बनबे किए

कएल जखनि ओकर बेवहारे नै हेतै? अलंकार शैलीमे गामक चौहद्दी बान्हि बाजए लगली-

> "एहेन अतहतह तँ एक गामक के कहए जे परोपट्टामे केतौ ने देखै छी, जे...?"

दादीकेँ विह्वल होइत देखि दीदीक जिज्ञासा तेज भेलनि। लपकि कऽ पुछलखिन-

> "से की, से की दादी?"

जहिना आमक गाछक डारिमे पाकल आम देखि झमाड़ि-झमाड़ि डोला पाकल आम खसबए चाहैत, मुदा डोलौनिहार ई नै बूझि पबैत जे पाकले खसत आ काँच नै खसत। हँ एहनो होइ छै जे बेसी पाकलक डंटीक रस सूखने असानीसँ खसैत मुदा जे डमहा पाकल छै ओ तँ ओहिना छै जहिना डमहा काँच होइ छै। तहिना दादीक मन छगुन्तासँ छनकैत जे एहेन तँ केतौ ने भेल से गाममे केना हएत। मुदा भऽ तँ गेल!

भेल ई जे ज्ञानचन काकाकेँ तीन बेटा आ दू बेटी छन्हि। तीनू बेटा पढ़ि-लिखि कऽ आने जकाँ नोकरी करए गाम छोड़ि देलनि। भीन भऽ गेलखिन कि साझीएमे से नै कहि। मुदा ज्ञानचन काकाकेँ एको पाइ मदति नै केलखिन। ओना तीनू भाँइ उपरा-उपरी पढ़लो-लिखल आ नीक नोकरीओमे। पहिल बेटी डाक्टर पतिक संग सेहो बाहरे रहै छथिन। छोट बेटी वैधव्य भऽ गेलनि। असमए बेटीकेँ विधवा भेने ज्ञानचन काकाकेँ जबरदस धक्का मनमे लगलनि। अपनोसँ बेसी काकीकेँ लगलनि। एहेन कोन माइक छाती हएत जे अपने सुहागिन आ बेटीकेँ वैधव्य देखए चाहत। मुदा उपाइए की? दुखक तँ सभसँ पैघ दबाइ नोर छी। जेते नोर झड़त तेते भारी दुख मेटाएत।
जहिना रेहीक संग मक्खन, छाहली मोहि आगिपर लोहियामे चढ़ा घी बड़कौल जाइत से दादीकेँ बड़कौले ने होन्हि तँए क्षुब्ध रहथि। बजली-

> "आब तँ अपनो उमेर ढेरी भेल तैपर नाना जनम एहेन काज नै देखने छेलौं से गाममे देखै छी।"

दादीक बात सुनिनिहारकेँ आरो जिज्ञासा बढ़ा देलकनि। एक्के-दुइए सभ पनिभरनी एक्के बेर दादीपर जोर देलकनि। थकथकाइत दादी बाजए लगली-

''ज्ञानचनक तीनू बेटा रूपचन, गुनचन विचारचनकेँ जखनि नोकरी छुटलनि तखनि गाम आबि साझी भऽ गेलखिन।''

दादीक उत्तरसँ संतुष्ट नै भऽ दादीक जवाबसँ दीदीकेँ संतोष नै भेलनि। पूरक प्रश्न केलखिन-

''तइसँ पहिने भीन भेल छेलखिन?''

दीदीक प्रश्नसँ दादीकेँ क्रोध उठलनि, बजली-

''जेना लोक केबाड़ चौकी काटि-काटि बँटबारा करैए तेना होइतै, तखनि ने बुझितहक। आकि मनुखकेँ इशारा होइ छै। मझिला बेटा अपन बेटीक बिआहमे चालीस लाख रूपैआ खर्च केलकै, मुदा छोटका भाएकेँ पाइ नै देलकै तँ नून-तेल लगा केलक। की यएह सझिया भैयारी छिऐ?''

दीदी बजली-

''तखनि तँ कमाइओ ने सबहक सभ रंग हेतै। ओ केना मिलौत?''

दादी कहलखिन-

''सएह ने देखहक। जेकरे बेसी छै सएह पहिने कहलकै जे हमरा एते अछि। सभ मिला कऽ परिवार चलौ।''



सतभैंया पोखरि

पोखरि कहिया खुनौल गेल, के खुनौलनि? मिथिलांचलक इतिहासे जकाँ अखनि धरि हराएले अछि, मुदा एते गामक सभ मानैए जे पोखरिक बतारी ने एकोटा गाछ-बिरिछ अछि आ ने आन कोनो। ओना पोखरि नम्हर रहने रंग-बिरंगक खिस्सा-पिहानी अछिए। कियो दैंतक खुनौल कहैए तँ कियो राजा-रजवारक। मुदा जे होउ, हजार बरखसँ ऊपरक पोखरि जरूर अछि जे सभ मानैए। शुरूमे पोखरिक महार वा अग्नेय जेहेन रहल हुअए मुदा अखनि महारो झड़ि-झुड़ि गेल अछि आ पोखरिक पेटो गदियाह भऽ गेल अछि। गाममे एकेटा पोखरि मुदा एहेन अछि जे एते सघन गाम रहितो पोखरिक अभाव गौआँकेँ नै हुअ दइ छन्हि। चाकर-चौड़गर पेट अखनो अछिए। मुनहर जकाँ दर्जनो ठेक-बखारी सदृश तँ अछिए।

गाममे सभसँ पुरानो आ झमटगरो परिवार मात्र सतभैंयाकेँ रहलनि। पोखरिओ हुनके सबहक छियनि। केना भेलनि से तँ नीक जकाँ किनको नै बूझल छन्हि मुदा जहियासँ देखै छी तहियासँ हुनके सबहक कब्जामे रहलनि अछि। ओना पोखरि तँ गामे-गाम अछि मुदा आन गामक पोखरिसँ अलग पहिचान अखनो अछिए। ने एते नम्हर कोनो गामक पोखरि अछि आ ने चौबगली महारक घाट छै। एक घाट रहने पारो नै लगैत जेना आन-आन गामक पोखरिमे अछि। आन गामक पोखरिमे बड़ बेसी अछि तँ एकटा दूटा घाट अछि। एकटा मरद आ दोसर जनाना लेल। तहूमे रंग-बिरंगक बेवहार बनल अछि। जइक चलैत जौं कहियो गाममे आगि-छाइ लगैए तँ गामे सुन भऽ जाइए, मुदा एकोटा पोखरि आइ धरिक इतिहासमे कहियो ऐ गाममे नै भेल अछि। ओना गामक बनाबटि आन गामसँ भिन्न अछि। केते गाम पूबे-पछिमे सूर्यमंडलक गढ़निक बनल अछि जइसँ पूर्बा-पछबाक झोंकमे, आगि लगने धुआ-पोछा जाइए।

बिनु जाठिक पोखरि रहने, अनगौआँ तँ पोखरि मानबे ने करैत मुदा पोखरिक सभ काजक पूर्ति होइत, तँए गौआँ लेल धैनसन। कियो अनगौआँक गपपर धियानो ने दैत। सभ यएह मानि चलैत जे कियो अपन मुँह दुइर करैए। नीककेँ अधला कहने थोड़े अधला भऽ जाएत आ अधलाकेँ नीक

कहने थोड़े नीक भऽ जाएत जौं एहेन बजनिहार अछि तँ ओ अपन मुँह दुइर करैए। सभकेँ अपन-अपन गुण-धर्म होइ छै से तँ अछिए। चारू महार घाट रहने सबहक काजो चलिते अछि। तहूमे आन गाम जकाँ कोनो रोक-राक अछिए नै जे ई घाट पुरुखक छिऐ तँ ई घाट जनानाक। ई फल्लांक खुनौल छियनि तँए दोसरकेँ नहाए देथिन आकि नै, ई हुनकर मन-मरजी छियनि। कियो जाठि गाड़ि पोखरिक पहिचान बनौने छथि तँ छथि। पोखरिक पहिचान भलहिं जाठि होउ मुदा झील, सरोवर आ धारमे जाठि कहाँ रहैए। तँए कि ओकरा कुमार कहि कात कऽ देबै। आम खेनिहारकेँ आम चाही आकि गाछ आ गाछी गनत। हँ, ई बात जरूर जे आमक गाछ केना होइ छै, केना लगौल जाइ छै, केना ओकर सेवा कएल जाइ छै एकर जानकारी रहक चाही। जइ जाठि लऽ लऽ अनगौआँ नचै छथि ओ तँ ईहो कहता ने जे जाठिक काज की होइ छै? जौं बीच पोखरिक पानिक नाप मानल जाए तँ जइ पोखरिक किनछड़िएमे उपयोग करै जोकर -नहाइ-धोइ-क पानि रहत ओकर बीचक नाप नपैक जरूरते की रहत। ओहन पोखरिक मानिए केते हएत जे एकटा घाट, जे भलहिं सिमटीए-ईटाक किए ने होउ, बना बाँकी भागमे मोथी रोपि खेत बना लेब। जौं कहीं आगि लागत तँ छूत-अछूत कहि गामे जरा देब, मुदा आगि लगबे ने करै से ने सोचब आ करब। जनियेँ कऽ पोखरिकेँ अघट बना दुइर कऽ लेब, नहाइ-धोइ जोकर नै रहए देब तँ ओइमे दोख केकर? खएर जे होउ मुदा चारू महार घाटो आ बिनु जाठिक पोखरि तँ अछिए।

शुरूहेसँ गामक सतभैंया परिवार जोतल-चौकियौल खेत जकाँ समतल रहल अछि। बीच-बीचमे बाढ़ि-भुमकममे थोड़-बहुत उभर-खाभर बनबो कएल तँ ओकरा पुन: सेरिया समतल बना लेल गेल। मुदा भविस दिस नै देखि, भूते दिस देखने तँ भूत लगबे करै छै। मुदा तेकरो भगबैक तँ उपए होइते अछि। बाबेक अमलदारीसँ सतभैंया अपन परिवारक पहिचान परोपट्टामे बनौने रहल अछि। ओना सात भाँइक भैयारीमे तीन भाँइक परिवार नावल्द भऽ गेलनि जइसँ अगिला पीढ़ी अबैत-अबैत सातसँ चारि भैयारी रहि गेल। सात भाँइसँ सतरह हेबाक चाहै छल से नै भऽ चारिपर उतरि गेल, तेकर कारण भेल जे एक भाँइ बेटीक बाढ़िमे दहा गेला। ढेनुआर नक्षत्र जकाँ बेटीक आगमन जोड़ा-पल्ला जे आबए लगलनि से ठीके सातसँ सतरह तँ नै मुदा

एकसँ एगारह जरूर भऽ गेलनि। मुदा एकसँ एगारह होइतो हुनकर मुँह कहियो मलीन नै भेलनि। मनक विश्वास अंत धरि बनले रहि गेलनि जे प्रकृतिकेँ अपन गति छै, ओ अपन निअम-निष्ठासँ चलैए। से नै तँ एक कम्पनीक वस्तु एक रंग होइ छै मुदा तइमे ओहन मेल-पाँच केना भऽ जाइ छै जे मेल-पाँच भेलोपर चारि-पाँच वा पाँच-छहसँ आगू-पाछू नै होइत अछि। भऽ तँ ईहो सकैत छल जे एक रंगाहे होइत वा एकसँ पाँचो होइत वा आरो अन्तर भऽ सकै छल। मुदा से कहाँ होइए। जहिना एकसँ सए धरि गनू आ सएसँ एक दिस गनू पचास तँ बिच्चेमे रहत। तँए बेटा-बेटीक बाढ़ि अबौ आकि रौदी होउ, मुदा अपन व्यासक अनुकूले रहैत आएल अछि आ रहबो करत।

दोसर भाए जे बच्चेमे कुभेला भेलासँ गाम छोड़ि परदेश गेला। से पुन: घूमि कऽ नहियेँ एला। बाल-बोधकेँ सेवाक जरूरति होइ छै, होइत एलैए आ सभ दिन होइत रहतै। मुदा जखनि वएह बाल-बोध चेतन भऽ जाइ छथि तखनि हुनक विवेक की कहै छन्हि से तँ आनक-आन नै बूझि सकत। ओ अपने अपन कर्तव्यकेँ निर्धारित कऽ जीवन-पथपर चलता। खैर जखनि धरतीए भूमि छी तँ जेतए बास करब ओकरे मातृभूमि बना लेब। तहूमे ओइ बच्चाक तँ अधिकार बनिए जाइए जेकर जनम जेतए बनि गेल हुअए। मुदा प्रश्न तँ अहूसँ आगू अछि। जौं धरती स्वर्ग वा वैकुण्ठ बनए चाहए तखनि अपनामे बँटि कऽ बनत आकि सम्मलित भऽ कऽ? जौं से नै तँ हम केतए छी, ई तँ देखए पड़त। मुदा मिथिलांचलोक भूमि तँ वएह भूमि छी जे सभ दिन प्रकृति प्रदत्त रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जौं से नै तँ कहाँ अरब करोड़पर लटकल आ करोड़ लाखपर। सभ दिन जहिना रहल तहिना अखनो अछि। भलहिं केतौसँ हमहूँ कहिऐ जे छीहे।

तेसर भाँइक परिवार ऐ लेल आगू नै बढ़लनि जे शरीरसँ निरोग रहितो मनसनक बच्चेसँ भऽ गेला। जइसँ ने बिआह केलनि आ ने कोनो भाँइक बात-विचारमे कहियो रहला। तहिना बाँकी भैयारी मिलि घरक मोजरे समाप्त कऽ देलकनि। मुदा तइले हुनको मनमे कहियो दुखो नहियेँ जनम लेलकनि। जखनि भाय सभ लगमे बैसथि तँ गरजि-गरजि बजथि जे मने सभ किछु छी। जे मनक मालिक ओ सबहक मालिक। मुदा भाएओ सभ बिना किछु

टोकारा देने चुपे-चाप सुनि लैत जे अनेरे टोकने आरो बरदियाएब। से नै तँ एक झोंक बाजि नारद जकाँ वीणा हाथमे लेता आ जेम्हर मन हेतनि तेम्हर विदा हेता। असगरूआ परिवारमे एककेँ बौरने परिवारेक उसरन होइए मुदा गनगुआरि जकाँ एकटा टाँग टुटनहि की हएत। एक तँ परिवार, टोल, समाज गढ़ि लइए। हम सभ तँ कहुना तैयो चारि भाँइ बँचल रहबे करब। बाँझी लगने डारि फड़ै नै छै मुदा तँए ओ गाछसँ हटल रहैए, एहेन तँ नै होइत।

पिताक अमलदारीमे चाकर-चौड़गर, चौघारा घरक आँगन हथिसार सन दरबज्जा, चन्द्रकूप सदृश इनार, सरोवर सदृश बिनु जाठिक पोखरिक बीच जिनगीओ संयमित तँए हर-हर खट-खटक प्रश्ने किए उठत। ओना सातो भाँइक सातो काज सात रंगक। जिनगी लेल सातो उपयोगी मुदा गुण, बेवहार आ उपयोगक हिसाबसँ छोट-पैघ। हर-हर खट-खट नै होइक कारण एकटा दोसरो छल जे अपन-अपन बुधिक उपयोग कऽ स्वतंत्र रूपसँ अपन-अपन काज सम्हारै छला। एक काजमे ने करैक बखेरा ठाढ़ होइत जे एना-हेतै, एना नै हेतै। मुदा एक विचारमे तँ से नै होएत। समटल बिछानक सुख जहिना सुतिनिहारकेँ होएत, तहिना ने समटल परिवारोकेँ होएत। छोट ओसार रहत आ बच्चा बेसी रहत तँ ओंघरा-ओंघरा खसबे करत। खाइ काल भिन्ने छिपली-बाटी फुटत, जहिना वस्तु वेपारक सहायक छी तहिना वेपार उपयोगक। जइ वस्तुक जेते उपयोग जिनगी लेल होएत ओ वेपार ओते चतरैए। मुदा प्रश्न अछि जौं सभ फूल फूले छी तँ देवताक बीच बँटाएल किए अछि? जौं देवताक परसाद परसादे छी तखनि महादेव किए बॉतर?

अखनि धरि सतभैंया परिवारमे घराड़ीसँ लऽ कऽ बाध धरिक जमीनमे दुइए बेर बँटबारा भेल छेलनि जे खूटे-खूट भेल छेलनि मुदा ऐबेर रूप बदलि गेल। भीतरिया गुमराहटि आबि गेल छेलनि। मुदा खुलि कऽ आगू भऽ बजैले कियो डेग आगू नै बढ़बए चाहैत। जहिना सूखल जारनिक बीच आगि हवा पबिते धधकि उठैए तहिना पोखरिक लहरि जकाँ सतभैंया परिवारमे उठए लगलनि। कारणो छन्हि जे कहिया केतए जे कँचका ईटापर खपड़ा घर बनौलनि सएह अखनो धरि चलि आबि रहल छन्हि। निच्चाँ जहिना मुसहनि माटि भरल तहिना अकासक तरेगन जकाँ फुटल खपड़ा लग इजोत होइत। शुद्ध किसानक घर। चाहे खेतमे रहि बर्खा हुअए आकि सुतली रातिक बर्खा हुअए कोनो अन्तर नै। जहिना गोनरिक दुनू भाग एक्के रंग भेने उनटा-

पुनटाक प्रश्ने नै, पहुलका चद्दरिक चारू भाग बरबैरे होइ छेलै आ जे बँचल अछि ओ अखनो अछिए! तहिना धोतीओक मुदा आजुक जे सिंह-मांगबला चद्दरि वा अन्य जे वस्त्र अछि ओ एकभग्गुए नै, संयुक्त परिवारक एकाकी रूप जकाँ बनि गेल अछि! जहिना जनमौटी बच्चा छोटसँ पैघ बढ़ैत सिरिफ मानवे नै महामानवो बनैए मुदा वएह मनुख मृत्युक पश्चात अछियामे जखनि जरबैले जाए लगैए तँ पैघसँ छोट बनैत-बनैत लोथरा जकाँ बनि जाइत अछि तहिना ने भऽ रहल अछि! ओना खूटे-खूट बँटनौं छुतकाबला केश कटबैकाल सभ बरबैरे भऽ जाइ छथि। बाधक जमीनमे कनी घटिओ-बढ़ी भेलनि मुदा घराड़ी आ पोखरिमे कोनो तरहक कमी-बेसी नहियेँ भेल छेलनि। अपन-अपन उपयोगक अनुकूल रहैत आएल छथि। मुदा सतभैंया परिवारकेँ गामक लोक एके परिवार बूझि ने कियो किछु बजैत आ ने किछु पुछैत। जइसँ पूर्बा-पछबाक कोनो लसरि नहियेँ लगल छेलनि। जखनि लसरिए नै तँ असरि किए । तेतबे नै, ईहो बुझैत जे जहिना गाछक डारि फुटने -छिटकने- फूल-फड़ थोड़े बदलि जाइ छै तहिना अनेरे देह रगड़ने तँ अपनो रगड़ा लगबे करै छै। मुदा से नै भेल, भऽ ई गेल जे सात भैयारीमे तीन भाँइकेँ सुखने गाछक डारि जकाँ चारिए टा रहि गेलनि। तहू चारिमे दूटा बँझियाइए गेलनि तँए फल-फूलक असे नै रहलनि। मुदा दुइओ भाँइ रहने चारि भैयारीक परिवार पसारै जोकर तँ भइए गेला। गड़बड़ एतबे भेलनि जे एक भाँइकेँ एक आ एक भाँइकेँ तीन बेटा भेलनि। एक रहितो मानवीय विचार आर्थिक विचारमे बदलिते रगड़ा-रगड़ी शुरू भेल। जखने तीन भाँइ एक दिस हएत आ दोसर दिस कियो असगरे पड़त तँ निश्चिते छह हाथ पएरक जगह दूटा हाथ-पएर झँपैबे करत। मुदा चद्दरि तँ ओइठाम ने झाँपि चारूकात अड़ियबैत जैठाम ओढ़िनिहारसँ डेढ़िया-दोबर होइत, से तँ परिवारमे भइए गेल छन्हि।

विचारवान परिवार सभ दिनसँ रहलनि जौं से नै रहलनि तँ आन-आन गाममे एहेन-एहेन परिवार मटियामेट भऽ गेल। मटियामेटे नै केते जहल भोगलक तँ केते अस्पताल, केते फाँसीपर लटकल तँ केते कपार फोड़ा मरल। मगर विचारेक चलैत ने परिवारकेँ ने कहियो सम्प्रादायिक आ ने जातिक हवा कनीओ डोलौलकनि। समैक प्रभाव तँ सभ किछुपर पड़िते अछि से तँ परिवारोमे भेलनि। ओना जेकरा समए कहै छिऐ -दिन-राति- ओइमे

ओते बदलाव कहाँ आएल, किएक तँ अखनो बारहो मास आ छबो ऋृतु होइते अछि। अपन-अपन गुण-धर्म तँ सभ बँचौने अछि। मुदा एकटा गड़बड़ तँ परिवारमे भइए गेलनि। ओ ई जे एक भाँइक बेटा श्याम, भैयारीमे असगरे छथिन। असगर भेनाइ तँ बड़ पैघ बात नहियेँ भेल मुदा पिताक भैयारीमे छोट भाएक बेटा रहने किछु गड़बड़क संभावना तँ जनैमिए गेलनि।

बाबाक अमलदारीमे सातो भाँइक बीच बँटबारा भेलनि मुदा ओ पुन: समटा गेलनि। कारण ई जे शुरूमे तँ बँटबारा भेलनि मुदा तीन भाँइक परिवार घटने फेर समटा गेलनि। केना नै समटाइत, तीनूकँ कियो पानिओ देनिहार तँ नहियेँ रहलनि।

चारू भाँइक बीच एहेन सम्बन्ध बनल रहलनि जे भीन-भीनौजीक परिस्थितिए पैदा नै लेलकनि। तेकर कारण भेल जे चारू भाँइक चारि तरहक कारोबार रहलनि। एक काजमे चारि गोटेकँ रहने वैचारिक मतभेद होइक संभावना रहै छै। किएक तँ एक्के काज केते ढंगसँ कएल जा सकैए। तहूमे जखनि समैक मोड़ अबै छै तखनि काजोमे मोड़ अबै छै। सभठाम भलहिं नै आबौ मुदा नहियेँ अबै छै सेहो नै कहल जा सकैए। चारू भाँइकँ परोछ भेने परिवारमे भीन-भिनौजक संभावना बनलनि। संभावनाक कारण भेलनि जे एक भाँइकँ एकेटा बेटा जखनि कि दोसरकँ तीनिटा भेलनि। दू भाँइ तँ मेटाइए गेलखिन।

छोट भाएक बेटा रहितो श्याम भैयारीमे सभसँ जेठ खाली भैयारीएमे जेठ नै पढ़ै-लिखै दिस विशेष झुकान रहनि। एक तँ पढ़ैक लगन दोसर सुभ्यस्त परिवार रहबे करनि। मुदा तीनू भाँइ घनश्याम खेलौड़िया बेसी। सदिकाल सिनेमे-पत्रिका आ खेले-पत्रिका उनटा-पुनटा देखैत। पढ़ैपर तँ ओते नजरि नै, मुदा फोटोपर बेसी नजरि पड़ैत। ओना अखनि धरि श्यामक विचारमे कोनो दूजा-भाव नै आएल छेलनि जइसँ कोनो तरहक नीक-अधलाक प्रश्ने नै उठल छल। जे किछु कारोबार छेलनि सामूहिक छेलनि। तहूमे एकटा जबरदस गुण श्याममे छन्हि जे घरसँ बाहर धरिक जे कोनो काज होइ छन्हि ओ तीनू भाँइ -अपना लगा चारू- कँ जरूर जानकारीमे दइए दइ छथिन। मुदा भैयारीक संग दियादनीओ तँ बरबरि भइए जाइत अछि। एक बाप-माए वा सहोदर पीती-पितियाइनिक बीच जे सिनेह रहैत ओ तँ चारि गामक चारि दियादनी एने तँ किछु-ने-किछु गड़बड़ भइए जाइत अछि। कारणो छै,

मिथिलांचलोमे एक सीमा कातक गाम आ दोसर सीमा कातक गामक बीचक दूरी खान-पीन, रहन-सहन, बोली-वाणीमे किछु-ने-किछु दूरी बनले आबि रहल अछि। तहूमे जइ इलाकामे बाढ़िक उपद्रव कम छै आ जइ इलाकामे बेसी छै, दुनूक जीवन शैलीमे बदलाब अबै छै। जखने जीवन-शैली बदलत तखने जीवन पद्धति बदलत। जखने जीवन पद्धति बदलत तखने जीवन लीला बदलए लगै छै। तहिना गाममे अखड़ाहा रहने किछु-ने-किछु लूरि कुस्तीक भइए जाइ छै।

तहिना मध्य मिथिलांचलक भाषामे पश्चिम भोजपुरी सीमा क्षेत्रक सुआसिन एने, भाषामे किछु-ने-किछु रूप बदलले रहै छै जइसँ, भाषा -बोली-वाणी- पर प्रभाव पड़ै छै। तहिना पूवरिया इलाका वा दछिनवरिया इलाकाक प्रभाव से पड़िते आबि रहल अछि। जहाँ धरि कुटुमैतीक प्रश्न अछि ओ तँ भागलपुरसँ मोतिहारी आ जनकपुरसँ सिमरिया धरि होइते आबि रहल अछि।

एकाएक श्यामक मनमे भैयारीक प्रति सिनेह किछु कमए लगलनि। सिनेहमे कमी एने काजमे कमी आबए लगलनि। जेना शुरूसँ परिवारक काजक जानकारी सभकेँ दैत अबै छेलखिन तइमे किछु कमी आबए लगलनि। तीनू भाँइ खेलौड़िया स्वाभावक रहबे करथि, तैबीच काजक आदेश कम पाबि आरो खेलौड़िया भऽ गेला। अखनि धरि घनश्यामक नजरिमे श्याममे कोनो कमी नै देखि पड़नि। हिसाबक जरूरते ने बुझथि। श्यामक मनमे सिनेह कमैक कारण भेल जे पत्नी सदति काल कानमे घोरि-घोरि पिअबनि जे सम्पति अपन आ सुख-मौज दियाद सभ करैए। पहिने तँ श्याम पत्नीकेँ सेवक बुझैत आबि रहल छला। ई नै बुझै छला जे दियादनीसँ दियादीओ ठाढ़ होइत अछि। मुदा विचारो तँ किछु छिऐ, अड़ि कऽ पत्नी पूजे करैकाल खिसिआ-खिसिआ बाजए लगलखिन-

> ''जइ पुरुखकेँ कोनो बात बुझैक ज्ञाने ने छै, ओ पुरुख नै पुरुखक झड़ छी।''

पत्नीक बात श्यामकेँ छातीमे धक्का देलकनि। मन कहए लगलनि जे झड़क अर्थ तँ ओ होइत जे कखनि अछि आ कखनि अपने झड़ि जाएत तेकर कोनो ठेकान नै। जे पाछू दिस ससरत ओ पौरुष केना पाबि सकैए।

मुदा अखनि मुँह खोलैक तँ समए नै अछि सिरिफ सुनैक समए अछि। जहिना बाल्टी भरि पानिमे नेबो आ चीनी रखिए देने तँ सरबत नै बनैए। नेबोकेँ काटि कऽ गाड़ि रस मिलौल जाइत अछि तहिना चिन्नीओक अछि। जहिना एक शब्द वा एक पाँति पढ़लासँ बूझिमे नै अबैत, या तँ दोहरा-दोहरा पढ़लासँ वा अगिला-पछिला पाँतिक मिलानसँ बूझल जाइत अछि तहिना अगिला बातक प्रतीक्षामे श्याम आँखि उठा पत्नीपर देलनि। नजरिक पानि देखि पत्नी बूझि गेलखिन जे अगिला बात सुनैक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। जहिना मधुमाछीक सभ छत्तामे एक्के रंग मधु नै रहैत, कोनोमे कम तँ कोनोमे बेसीओ रहैत आ संग-संग नव-पुरान -पहुलका-पछिला- सेहो रहैए। तँए ठिकिया कऽ ओइ छत्ताकेँ पकड़ब बुधियारी छी जइमे डगडगी भरल नवका मधु रहैए। पुरना तँ दबाइ-दारू लेल नीक, खाइले तँ नवके नीक, तहिना वकील जकाँ अपन पक्ष रखैत पत्नी बजली-

> ''अखनि धरि अहाँ एतबो ने बुझै छिऐ जे चारू भाँइक बीच पनरहटा बाल-बच्चा आँगनमे अछि। पनरहोक खर्च तँ सागिरदेमे सँ चलैए। एके रंग लत्ता-कपड़ा, खेनाइ-पीनाइ अछि मुदा ई बुझै छिऐ जे ऐमे अपन केते हएत आ दियाद-वादक केतबे छै?''

श्यामक नजरि धँसए लगलनि। पत्नीक विचारमे किछु तत्व बूझि पड़लनि मुदा स्पष्ट नै भऽ सकल। प्रतीक्षाक नजरि उठा आगू दिस तकला। अवसरक लाभ उठबैत पत्नी दोहरौकनि-

> ''पनरहटा बाल-बच्चामे अपन तीनटा अछि। बाँकी बारह तँ भैयारीएक भेल। तइ संग अपने दू परानी छी आ ओ छह परानी अछि। कनी जोड़ि कऽ देखियौ जे अदहा हिस्सामे अपन केते हएत आ केते हुनका सबहक।''

श्यामक मन सहमलनि। मन कहलकनि जे पत्नी अक्षरत: सत्य कहलनि। सम्पतिक अर्थ होइ छै सुख-भोग आकि परसादी बाँटब।

पूजासँ उठि भोजन कऽ श्याम घनश्यामकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

> ''घनश्याम, दुनियाँक तँ बेवहारे भैयारीमे भीन होएब रहल अछि। अपनो सभकेँ कम नै निमहल। गाममे देखै छिऐ जे केते छौड़ाकेँ

मोँछक पम्हो ने आएल रहै छै आ बापसँ भिन भऽ जाइए अपना सभ तँ सहजे धीगर-पूतगर भेलौं। भीन भऽ जाह।''

जेना धनश्यामो प्रतीक्षेमे रहए तहिना धाँइ दऽ बाजल-

''भैया, सभ दिन अहाँक आदेश मानैत एलौं, आइ नै मानब से उचित हएत। मुदा अहाँ जहिना जेठ भाय छी तहिना तँ रामो-बलराम अछि। भलहिं ओ छोट भाए छी, जे कहबै से करत। मुदा तैयो बिना पुछने किछु नै कहब।''

''बड़ बढ़िया, अखनि जा कऽ पूछि लहक। सुति कऽ उठै छी तखनि फेर गप करब।'' घनश्याम उठि कऽ विदा भेल।

तीनू दियादनीओ आ दुनू भाएओकेँ एकत्रित कऽ घनश्याम पुछलक-

''सबहक बीचमे कहै छी। भैया बजा कऽ कहलनि जे भीन भऽ जाह। से की विचार?''

बलराम कहलकनि-

''विचार की भैया, ओ असगर छथि तँ जीविए लेता आ हम तँ सहजे तीन भाँइ छी। हुनका जे मनो खराप हेतनि तँ ने कियो डाक्टरो ऐठाम लऽ जाइबला हेतनि आ ने बजारसँ दबाइ कीनि कऽ अनैबला हेतनि।''

घनश्याम कहलक बाँकी सभकेँ पुछलक-

''अहाँ सबहक की विचार?''

पहिल दियादनी कहलकनि-

''अपन परिवार बूझि नौरी जकाँ दिन-राति खटै छी तैपर जे पाँचो मिनट चाहमे देरी हेतनि तँ साँढ़-पारा जकाँ गर्द करए लगता। भने नीक हएत। जानो हल्लुक हएत।''

सुति उठि चाह पीब पान खा श्याम घनश्यामकँ सोर पाड़लखिन। अबिते घनश्याम लगमे बैस कहलकनि-

“जे विचार अहाँक अछि भैया, से हमरो अछि। अखने बाँटि लिअ।”

घनश्यामक बोली सुनि श्याम सहमला। मनमे उठलनि, हम जे बुझै छिऐ तइसँ भिन्न ने तँ बुझैए। मुदा बात तँ आगू बढ़ि गेल आब जौं पाछू हटब सेहो नीक नै। बजला-

“बँटबारामे कोनो बेवधान तँ छहे नै। सभ किछु अदहा-अदही भेलह। तखनि बाप-पुरुखाक बनौल जेठौंस होइए से तँ तोहीं बजबह?”

श्यामक विचार सुनि घनश्याम कहलकनि-

“अहाँ पितासँ हमर पिता जेठ छला। संयोग नीक रहलनि जे भिनौजी नै भेलनि। जखनि पिताक अधिकारक हिसाबसँ आइ बँटै छी तँ हुनकर जेठौंस केते हेतनि से तँ हमर हएत किने?”

श्याम कहलकनि-

“देखह, तमसा कऽ नै बाजह। सभ दिन अपन सतभैंया परिवार विचारक परिवार मानल जाइत रहल अछि, तैठाम कनी-मनी चीज लेल झगड़ब नीक नै।”

घनश्याम मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बात तँ बड़ सुन्दर आ बड़ सोझगर कहलौं मुदा एक वंशक सभ रहितो अहाँ अइल-फइलसँ रही आ हम सभ बँटाइत-बँटाइत एते बँटा जाइ जे घसाएल सिक्का जकाँ सभ किछु रहितो चलबे ने करी, से केहेन हएत?”

तैपर श्याम पुछलखिन-

“तोहर की विचार?”

घनश्याम कहलकनि-

"तीनू भाँइक विचार अछि जे घरसँ घराड़ी, खड़िहाँनसँ खेत धरि चारू भाँइ एकरंग कऽ लिअ। जौं से नै तँ...।"

श्याम प्रश्न केलखिन-

"तँ की?"

घनश्याम जवाब देलकनि-

"ई तँ माटिक चर्च केलौं। पोखरि सेहो तहिना बाँटब। जौं से दइले तैयार नै हएब तँ जमीनक फैसला जमीनपर हएत।"

श्याम पुछलखिन-

"सएह।"

घनश्याम कहलकनि-

"हँ, सोलहन्नी सहए।"

❍ ❍ ❍

न्याय चाही

झुनाएल धान जकाँ पचासी बरखक शंभु काकाकेँ ओछाइन छौड़ैसँ पहिने मनमे उठलनि जे आब तँ चल-चलौए छी से नै तँ जिनगीक अपन हिसाब-किताब दइए दियनि, सएह नीक। नै तँ शासनक कोन बिसवास केकरो दोख गारा मढ़ि सजा केकरो भेटै छै। मुदा सोझहामे एते तँ जरूर हएत जे अपन बात अपने रखि सकै छी। तैपर जौं नै मानत तँ हमहूँ नै मानबै। लड़ि मरी आकि सड़ि; शेषे कथी बँचल अछि। जहिना नम्हर काजमे समैओ अधिक लगैए आ छोट काजमे थोर मुदा काज तँ दुनू कहबैए। कियो काहू मगन कियो काहू मगन, मगन तँ सभ अछिए। गंभीर प्रश्नमे ओझराएल शंभु काका, तँए मन-चित्त-देह एकबट्ट भेल रहनि।
पत्नी कुमुदनीक मनमे उठलनि जे भरिसक सुतले तँ ने रहि जेता। लगमे पहुँच छाती डोलबैत पुछलकनि-

''अखनि धरि किए बिछान पकड़ने छी?''

पत्नीक स्वरलहरीमे लहराइत शंभु काका हलसि बजला-

''अखनि धरि यएह बुझै छेलौं जे अपने केलहाक भागी कियो बनैए, मुदा...?''

बजैत शंभु काका ओछाइनपरसँ उठि जहिना उगैत सुरूजक दर्शन लोक दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत करैए तहिना दुनू हाथ जोड़ि पत्नी-कुमुदनीक आगूमे ठाढ़ होइत दोहरा कऽ बजला-

''माफी मंगै छी। गल्ती भेल अछि मुदा दोसराक गल्ती ऊपर मढ़ल गेल अछि।''

अकचकाइत कुमुदनी, बिनु किछु सोचनहि बाजि उठली-

''से की, से की, एना किए भोरे-भोर पाप चढ़बै छी।''

''पाप नै चढ़बै छी जिनगीक जे घटल-घटना अछि, तइ निमित्ते मांगि रहल छी।''

“जखनि एते कहबे केलौं तखनि किए ने मनो पाड़ि देब। अहाँ तँ बुझिते छिऐ जे बसिआ भात खेनिहारि बिसराह होइए मुदा रतुका उगड़ल अन्न फेकि देब नीक हएत।”

पतालसँ अबैत बलुआएल पानि जहिना छन-छनाइत पवित्र भऽ अबैए तहिना कुमुदनीक विचार सुनि प्रोफेसर शंभु काकाकेँ भेलनि, बजला-

“अपना दुनू गोटेक एक जिनगी ऐ धरतीपर रहल अछि। आकि नै?”

“हँ से तँ रहले अछि। तँए ने अर्द्धांगिनी छी।”

“हमर देहक अर्द्धांगिनी छी आकि जिनगीक?”

“ई बात अहाँ बुझेलौं कहिया जे पुछै छी।”

पत्नीक प्रश्न सुनि प्रोफेसर शंभु काका सकदम भऽ गेला। मुदा लगले मनमे उठलनि जे टटको घटना बसिआ जाइ छै आ बसियो घटना टटका भऽ जाइ छै। ई निर्भर करैए कारीगरपर। जेहेन कारीगर रहत तेहेन टटकाकेँ बसिआ आ बसिआकेँ टटका बनबैत रहत। खएर जे होउ। पत्नीकेँ पुछलखिन-

“अपना दुनू गोटे एकठाम केना भेलिऐ?”

“एना अरथा-अरथा किए पुछै छी। जे कहैक अछि से सोझ डारिए कहू। एना जे हरसीकार दीरघीकार लगा-लगा बजै छी से नै बाजू। जेकरा नीक बुझबै तेकरा नीक कहब आ जेकरा अधला बुझबै तेकरा अधला कहब। अहाँ लग जे कनी दबो-उनार भऽ जाएत तँ हारि मानि लेब। सएह ने हएत आकि छाउर-गोबर जकाँ छिट्टामे उठा बाध दऽ आएब।”

जहिना पोखरिक पवित्र जलमे स्नान कऽ पूजाक मूर्ति गढ़ि मंत्र पढ़ैत दान कएल जाइत तहिना शंभु काका बड़बड़ाए लगला-

"जखनि हम चौबीस बरखक रही तखनि अहाँ चौदह बरखक छेलौं। दस बरखक अन्तर। आइ धरि कहाँ केतौ देखि पेलौं जे पुरुष-नारीक बीच उमरोक विभाजन भेल। जौं से नै तँ...? जौं एको औरूदे दुनू गोटे जीब तैयो तँ अहाँ दस बरख विधवे बनि रहब। ऐ विधवाक सर्जक के? समाजमे कलंकक मोटरी देनिहार के? की ई बात झूठ जे जइ घरमे जेते कम वस्तु रहै छै आगि लगलापर ओतबे कम जरै छै मुदा जइ घरमे अधिक वस्तु रहै छै, आगि लगलापर जरबो बेसी करै छै। पचास बरखक तपल-तपाएल जिनगीक अन्त केना हएत।"

दुनू हाथ जोड़ि पत्नीसँ माफी मंगलनि। मुदा जहिना बच्चाकेँ नव दाँत रहने अधिक-सँ-अधिक काज लिअए चाहैत, नव औजार हाथमे एने अधिक-सँ-अधिक काजो आ अधिक-सँ-अधिक समेओ संग मिलि बितबए चाहैत तहिना कुमुदनीक सिनेह आरो जगलनि। बजली-

"माँफी-ताँफी नै मानब? पति छी तँए पुछै छी। एहन गल्ती भेल किए, से जाबे नै कहब ताबे किछु ने मानब।"

पत्नीक प्रश्न सुनि शंभु काका स्तब्ध भऽ गेला। मन कछमछाए लगलनि। सत् बड़ कटु होइत अछि। मुदा जौं पत्नीओ लग सत्यक उद्घाटन नै कऽ सकब तँ दुनियाँमे दोसरठाम कइए केतए सकै छी। शम्भुकाका साँप-छुछुनरिक स्थितिमे पड़ि गेला। एहेन कोनो विचार मनमे उठबे ने करनि जइसँ मन मानि लइतनि जे ऐसँ पत्नी मानि जेती। अल्ल-बल्ल किछु बच्चाकेँ कहल जाइ छै, एक तँ सिआन कि जे सिआनोक अगिला खाड़ीमे पहुँचल छथि दोसर अर्द्धांगिनी सेहो छथि। कोनो विचारकेँ बलजोरी थोपि नै सकै छियनि, जौं थोपिओ देबनि तँ मानिए लेती सेहो नै कहल जा सकैए। जेते दबाब दऽ कऽ बजैक अधिकार हमरा अछि तेते तँ हुनको छन्हिए। जौं किछु नै कहबनि तखनि तँ आरो स्थिति बिगड़ि जाएत। जहिना हुनका मनमे गेंठी जकाँ जनमगाँठ पड़ि जेतनि तहिना तँ अपनो मन नहियेँ बँचत। जौं से नै बँचत तँ आँखि उठा देखि केना पेबनि। जौं से नै देखि पाएब तँ पति कथीक। सिरिफ रंगे-रभसटा तँ पत्नीक सम्बन्ध नै छी। जौं ओतबे मानि बुझबनि तँ पति-पत्नीक सम्बन्ध बूझब थोड़े हएत। पति-पत्नीक सम्बन्ध तँ ओ

छी, जहिना जनकक एक हाथ हवन-कुंडमे आ दोसर पत्नीक करेजपर रहै छेलनि, मुदा जहिना नव जीवनक दिशा विपतिक अंतिम अवस्थामे भेटैए तहिना शंभुओकाकाकेँ भेटलनि। थालमे गड़ल मोती जहिना जहुरी हाथमे देखिते नयन कमलनयन बनि जाइत तहिना कक्कोक नजरिकेँ भेलनि। मन मुस्कीएलनि। पतिक मुस्की देखि कुमुदनी मने-मन नमन केलकनि। जिज्ञासु छात्र जकाँ पत्नीक जिज्ञासु नजरिकेँ देखि प्रोफेसर शंभु कहलखिन-

> ''देखू, प्रश्न एकेटा नै घनेरो अछि, जौं एक-एक प्रश्नक उत्तरो दिअए लगब तँ प्रश्ने छूटि जाएत। जौं प्रश्ने छूटि जाएत तखनि उत्तरे केना देब। किछु नै, बुढ़िया फूसि।''

पतिक विचार सुनि कुमुदनी अधखिल्लू कुमुदनी जकाँ जइ अवस्थामे भौंरा फरिच्छ तँ देखैत मुदा अधखिल्लू कपाटसँ निकलि नै पबैत तहिना कुमुदिनी असमंजसमे पड़ि गेली।

पत्नीकेँ असमंजसमे पड़ैत देरी प्रोफेसर शंभुक मनमे उठलनि जे जहिना माटिक ढेपा, गोला, चेका जोड़ि-जोड़ि पैघसँ पैघ बान्ह बान्हल जाइए तहिना जौं बान्हि दियनि तँ जरूर ठमकि जेती। मुदा मन नै मानलकनि। पत्नीक बातमे तँ अखनि धरि ओझराएल रहलौं। जरूर माए-बापक काज मानल जाएत। मुदा, की हमरे टा परिवारमे एना भेल आकि दोसरो-तेसरो परिवारमे? जौं एक समाज नै, एक गाम नै अनेक समाज आ अनेक गाममे होइत अछि तँ जरूर दोषक जड़ि केतौ अन्तए छै। अन्तए केतए छै से कहि देबनि, मानती तँ मानती नै तँ आगू कहबनि नेति-नेति।

जहिना उगैत गुज्जर, उगैत कलशकेँ कहैत जे दुनू गोटे संगे-संग रहि दुनियाँ देखब। तहिना प्रोफेसर शंभु पत्नीकेँ कहलखिन-

> ''सुनू, सभ बात सबहक नजरिपर सदिकाल नै रहै छै, भऽ सकैए जे जे बात दस-बीस बरख पहिने कहि देबाक चाहै छल, से नै कहलौं। अपनो धियानमे नै रहल। जहिना असगरे धान तौलिनिहार गनि-गनि तौलबो करत आ उठि-उठि लिखबो करत तँ गिनती-गिनतीमे झगड़ा हेबे करैत, जे जोरगर रहैत ओ मन रहैत जे

अब्बल रहैत ओ हरा जाइत। तहिना ने अपनो दुनू गोटेक बीच अछि।''

''दुनू गोटे'' सुनि कुमुदनी कछमछेली। पाछू उनटि-उनटि देखए लगली। प्रोफेसर शंभु बूझि गेला जे शिकारीक वाण सटीक बैसल। जहिना बाल-बोधक उनटा-पुनटा काज देख सिआनकेँ हँसी-लगैत तहिना प्रोफेसर शंभुकेँ हँसी लगलनि। मुदा लगले मनमे उठलनि जे अपनो पछिला कएल काज मन पड़ने तँ से होइए। एकाएक मुँह बन्न भऽ गेलनि। आने-आन पुरुख जकाँ अपन पुरुषत्व देखबैत प्रोफेसर शंभु बजला-

''आइ धरि, अखनि धरि कहियो हमरा मुहसँ फुटल जे हम न्यायालयसँ दण्डित भेल जिनगी जीब रहल छी। कियो एको दिन पुछाड़िओ करए आएल जे केना जीबै छी। समाजमे जाधरि बूढ़-बुढ़ानुसक पूछ नै हएत, ताधरि समाजक पछिला पीढ़ी नागरि पकड़ि वैतरणी पार केना हएत। हँ ई जरूर जे साँपकेँ डोरी नै कही, मुदा विचार तँ हेबाके चाही।''

घरमे चौंकल बर्तनक ढनमनी जकाँ कुमुदनी ढनमनाइत बजली-

''जखनि अहाँ दुनियाँक नजरिमे दण्डित छी तखनि...?''

पत्नीक चिन्तासँ चिन्तित भऽ प्रोफेसर शंभु कहलखिन-

''अखनि धरि तँ छिपेने रहलौं जे अपन दोख अहाँकेँ किए दी।''

पतिक बेथासँ बेथित भऽ कुमुदनी बजली-

''कनी फरिच्छा कऽ कहू?''

प्रोफेसर शंभु कहलकनि-

''सेवा-निवृत्त होइसँ छह मास पहिने प्रिंसिपल बनौल गेलौं। कौलेजक भार बढ़ल। परीक्षा विभाग सेहो छै। सुननहि हेबे जे केते हो-हल्ला भेल। मामला न्यायालय चलि गेल। गोल-माल जरूर भेल रहए, जानकारीमे नै रहए। मुदा तैयो जवाबदेहक रूपमे फॅसलौं।''

कुमुदनी पुछलखिन-

“अहाँक किछु दोष नै रहए?”

प्रोफेसर शंभु कहलकनि-

“एकदम नै।”

कुमुदनी पुछलखिन-

“फैसला केना भेल?”

प्रोफेसर शंभु कहलखिन-

“सेवा निवृत्त लग देखि न्यायालय दोषी बना छोड़ि देलक।”

कुमुदनी पुछलखिन-

“आ हुनका सभकेँ?”

प्रोफेसर शंभु कहलखिन-

“कमो दोखबला बेसी सजा पौलक आ बेसीओ दोखबला कम सजा पौलक।”

तैपर कुमुदनी पुछलखिन-

“एना किए भेल?”

प्रोफेसर शंभु कहलखिन-

“जौं पहिने बुझितौं तँ ऐ भीर जेबो ने करितौं मुदा से नै भेल। जाधरि लिखित-मौखिक रूपमे बेवस्था चलत ताधरि अहिना हएत।”

❍ ❍ ❍

पनियाहा दूध

आँगन बहारि, बाढ़नि धोय पछबरिया दावा लगा रखि, सुनयना दरबज्जा दिस तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे मास्टर साहैब (पति) भरिसक सुतले छथि उठा देब उचित हएत मुदा मन ठमकि गेलनि। आठमे दिन गाम आएल रहथ तँ चारि बजे भोरेसँ हरविर्ड़ो केने रहै छला जे घरमे कोढ़ियाक बाढ़ि आबि गेल अछि, जे काजक बेरमे सूतल रहत ओकरा कहियो भाभन्स हेतै? मुदा आठे दिनक दूरीमे एना किए देखै छी। फेर मन घूमि कहलकनि उमेरोक दोख होइ छै, ओना सठिया तँ गेले हेता। तत्-मत् करैत सुनयना दरबज्जा आँगनक बीच ठकुआ कऽ ठाढ़ भऽ गेली, ने आगू डेग उठनि आ ने पाछू।

ओना जीवानन्दक नीन समैपर टूटि गेल रहनि, एक तँ ओहुना उमेर बढ़ने खूनो पनियाए लगै छै आ नीनो पतराए जाइ छै। नीन टुटिते जीवानन्दक मनमे उठलनि जे उठिए कऽ की करब? काजे कोन अछि जइ पाछू लागब। आँखि बन्न केने सोचैत रहथि। जहिना चिन्तक चिन्तन अवस्थामे निस्तेज भऽ जाइत तहिना भऽ गेला। ओना आँखिओ खुजैक आ बन्न होइक ढेरो कारण अछि मुदा हुनका से नै रहनि। मनमे केतेको रंगक विचार टकराइत रहनि, तँए अगिला रस्ता देखैमे एकदिशाह भऽ गेल रहनि। आलमारीक किताब जकाँ रंग-रंगक विषयक एकेठाम सैंतल रहनि, असल विचार परिवारमे गड़ल रहनि। मुदा परिवारसँ पहिने जे अपनापर नजरि पड़लनि तेतए गड़ि गेला। सेवा-निवृत्त भऽ गेलौं, जीवैक उपए भलहिं जे हुअए मुदा काज तँ हरा गेल। काजे की अछि जइ अनमेनामे समए गूदस करब। जखनि काजे हरा गेल तखनि जिनगी केना चलत। जौं जिनगी चलत नै तँ जीवित-मृत्युमे अन्तरे की भेल? मनमे लधले रहनि आकि दोसर उठि गेलनि जे करबो केकरा लेल करब? पछिला (पूर्वज) कियो छथिए नै अगिलो उड़िए गेल। बीचमे अपनाकेँ पाबि मन दहलि गेलनि। सेवा-नवृत्तिक तँ एक अर्थ ईहो होएत ने जे काज करै जोगर नै रहलौं। फेर मन ओझरा गेलनि। 'अंधेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा'क पइर भऽ गेल। काजो तँ दू रंगक होइत अछि, एक शरीरक शक्तिसँ कएल जाइत अछि दोसर बौद्धिक शक्तिसँ। हम तँ शरीरक शक्तिसँ नै बौद्धिक

शक्तिसँ करै छेलौं तखनि किए नै करैबला रहलौं। आमक आँठी जहिना कोइलीसँ धीरे-धीरे सक्कत बनि सृजन शक्ति प्राप्त करैत, से कहाँ भेल? जौं बौद्धिक शक्तिकेँ शरीरक शक्तिक सीमांकन कएल जाएत तँ केहेन हएत? खैर जे होउ, ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए। मुदा सेहो तँ नै भऽ रहल अछि। जे ठनका शरीरक के कहए जे घरो-दुआर आ गाछो-बिरिछकेँ तोड़ि-फाड़ि दइए ओइ ठनकाकेँ हाथ केते काल बँचा सकैए?

फेर मन ठमकलनि। मुइल धार जकाँ परिवारो भऽ गेल अछि, की हमरा बँचौने बँचत। बँचबो केना करत? ने पछिला घूमि औता आ ने अगिला आबए चाहत। लऽ दऽ कऽ दू परानी भेलौं, तहूमे तेहेन पाकल आम जकाँ भऽ गेल छी जे कखनि तूबि खसब तेकर कोन ठेकान अछि। खैर जे होउ, जाबे आँखि तकै छी ताबे तँ जीबए पड़त आ जाबे जीब ताबे जीबैक उपए करै पड़त। अपने जीने जिनगी आ अपने मुइने मृत्यु।

गुन-धुनमे पड़ल जीवानन्दक मन समाज दिस बढ़लनि। समाजे लेल की केलिऐ जे हमरा लेल करत। जहिना देवस्थान दस गोटेक सहयोगसँ ठाढ़ो होइत आ चलबो करैत तहिना तँ समाजो अछि। मुदा से तँ किछु ने केलिऐ। थकथकाएल मन कहलकनि-

> ''की ओछाइने धेने रहब आकि उठबो करब?'' मुदा लगले दोसर मन कहलकनि-
>
> ''उठिए कऽ की करब?''

मन आगू बढ़ि शिक्षक समाज दिस बढ़लनि। सभ सेवा-निवृत्ति होइ छथि। मुदा, की हमरे जकाँ सभकेँ हेतनि। भलहिं सभकेँ होन्हि वा नै किछु गोटेकेँ तँ हेबे करतनि। जखनि सबहक जिनगी एक वृत्तमे बितल तखनि किए सभकेँ सभ रंग हेतनि। परिवारो आ समाजो तँ सबहक सभ रंग छन्हि। से तँ छन्हिए। दीनानाथ बाबूकेँ देखै छियनि जे सेवा-निवृत्तिक उपरान्तो विद्यालय छोड़ि नै रहलनि हेन। जखनि कि सुखदेव बाबू सेवा-निवृत्ति होइसँ पूर्वहि जे तीन बरख ओछाइन धेलनि से अखनो धेनहि छथि। परिवारमे जौं केकरो किछु अढ़बै छथिन तँ मुँह दूसि कहै छन्हि जे भरि दिन कौआ जकाँ काँइ-काँइ करैत रहै छथि। मनुखकेँ जौं कौआ मानि लेल जाए

तँ बोलकँ की कहबै? जीवानन्दक मन आरो घुरिया गेलनि। फेर मनमे उठलनि जे अनेरे औनाइ छी। जेतबे रहए तेतबे टाँग पसारी नै तँ पओल जाएब। सुतले-सूतल पत्नीकँ सोर पाड़लखिन-

"कनी एम्हर आउ?"

आँगन-दरबज्जाक बीच जे सुनयना ठाढ़ छेली से आगू डेग बढौलनि। केबाड़ लग ठाढ़ भऽ हिया-हिया देखए लगली। पहुलका (सेवा-निवृत्तिसँ पूर्वक) अपेक्षा बदलल-बदलल रूप बूझि पड़लनि। एना केना भेलनि, अखनि धरि तँ किछु कहबो ने केलनि हेन। तखनि किए पानि उतरल बूझि पड़ै छन्हि। केबाड़क एकटा पट्टा खोलि देने रहथिन आ दोसर ओहिना लागल रहै। तही बीच जीवानन्दक मनमे उठलनि जे जाबे नोकरी करै छेलौं ताबे बाहरसँ कमा कऽ आनि पत्नीक हाथमे दइ छेलियनि, आ अपने अपनाकँ गारजन बुझै छेलौं। से तँ आब नै हएत। जौं से नै हएत तँ परिवार आगू मुहेँ केना ससरत? पाहुन जकाँ आठ दिनपर अबै छेलौं आ कमासुत बनि जाइ छेलौं।

पतिक बदलल रूप देखि सुनयनाक मनमे उठलनि जे अखनि धरि किछु करबो ने केलनि हेन आ तरे-तर फटि रहल छथि। नवकविरयाक चुटकीक अवाज जकाँ सुनयनाक आगमन बुझितो जीवानन्दकँ उठैक हूबा देहमे नै रहलनि। मनोक बोझ तँ माथकँ ओहिना भरिया दैत जहिना कोनो वस्तुक बोझ भरियबैत। मनकँ जिनगीक बोझ ऐ रूपे दबने जेना सवारी कसल घोड़ा वा खलीफा होइत। जाबे धरि बाहरसँ कमा घर अनै छेलौं, जइ बले परिवार ससरै छल ओ तँ टूटि गेल। ओहीपर ने अपनो छहर-महर आ घरो-परिवारक छल। मुदा से नै भेने तँ ओहिना भऽ जाइ छै जहिना माटिक बनल रस्ताकँ पानिक धार काटि अवरूद्ध कऽ दइ छै। की कमाइएपर गारजनी छल? पत्नीएकँ की सुख हमरासँ भेलनि? घर-गिरहस्ती सम्हारैमे दिन-राति एकबट्ट केने रहै छथि। एक तँ मिथिलांचलक किसान परिवारक अजीव गढ़नि अछि, जैठाम एलापर देविओ-देवता भोथिया गेला। सौंसे जनकपुरमे जनकेक दरवार जकाँ बूझि पड़लनि। नान्हिटा बात थोड़े छी। गाम-गाम व्यास भागवत बचै छथि, गाम-गाम कीर्तन-भजन, भोज-भनडारा होइत रहैए, तैठाम समाज विपरीत दिशामे बहि गेल, मुदा देखलनि कोइ ने। दरबज्जाक

सौभाग्य छल नीक-नीक बात-विचार करब। तैठाम दरबज्जा टूटि आँगन घरक कोठरी बनि गेल अछि!!! जैठाम कम-सँ-कम लोकक पैठ रहैए, जैठाम आनक सुख-दुख सुनैक आ सुख-दुखक दबाइ बुझैक अवसर नै भेटैए! तैठाम पति-पत्नीक सम्बन्धक आधार की बनि सकैए। देखा-देखीक दुनियाँमे चिन्ता चिन्तन किए रहत। जौं से नै रहत तँ मनक सुखक दिशाक धारा किए ने बदलत। जीवित-मृत्युक निर्णए के करत? केना हएत? कोनो मुसरा गाछ होइ आकि लतियाएल लत्तीक होइ, ओकर बाढ़ि ताधरि समीचीन होइत जाधरि ओकरा अनुकूल वातावरण भेटैत रहैत। ओना लाखो किड़ी-मकौड़ी कोमल किसलयकेँ नष्ट करैबला अछि मुदा प्रकृतोक तँ गजब गढ़नि अछि, एक-दोसराक नष्ट करैबला सेहो मौजूद अछि। बिनु मुँहक गाछ वा लत्तीक दशा तँ ओहने होइ छै जेहने साँपक मुँह थकुचेलाक पछाति होइ छै।

जीवानन्दकेँ एहसास भेलनि जे हमरापर नै, पत्नीपर घर-ठाढ़ अछि। जँए घर ठाढ़ अछि तँए समाजक परिवार कहबैक लाली अछि। मुदा समाज तँ ओहिना नै केकरो महत दैत? सेवाक अनुकूल केकरो महत दैत अछि। से हमरासँ की भेलै? जखनि किछु ने भेलै तखनि केते महत हेबाक चाही? मुदा जेकरा घर-परिवार गाम बुझै छी, तेकरा छोड़िए केना देब। मुदा ई प्रश्न तँ गामक छिऐ, अपन नै। परिवारमे जे छहर-महर भेल ओइमे हमरा कमाइसँ की भेल? यएह ने भेल जे बेटीक बिआह केलौं, बेटाकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं। अंतिम अवस्थामे अपन घर बनेलौं। मुदा बेटीक बिआह, पढ़ाइ-लिखाइ एते भारी किए अछि जे जिनगी भरिक कमाइसँ लोककेँ पारो ने लगै छै। जौं एतबेमे सभ ओझरा जाए तँ समाजक गति केहेन हएत? जौं समाज दुरगतिक चालि पकड़ि चलत तँ मनुखक पैदाइस केहेन हएत। जैठामक जेहेन मनुख तैठाम तेहने दुनियाँ।

करोट फेरिते जीवानन्दक मनमे उठलनि जे हारि मानी झगड़ा फड़ियाए। पत्नीसँ क्षमा माँगि लेब। जौं से नै माँगब तँ हुनकर विचार छियनि जे घरमे रहए दथि वा नै। समाजक संग तँ वएह रहली। पत्नीक प्रति जे प्रेम हेबाक चाही से कहाँ कहियो भेल। क्षण-पलक सम्बन्ध रहल जीवन-लीलाक सम्बन्ध कहाँ रहल। हुनकर दुनियाँ हमरासँ भिन्न रहलनि। मुदा आइ

तँ ओही दुनियाँक जरूरति हमरो भऽ गेल अछि। खंड विकसित देशमे जहिना जनता-सरकारक बीच सम्बन्ध रहैत, तहिना ने भऽ गेल अछि। जेना पति रूपमे ओ सेवा केलनि तेना कहाँ केलियनि। जौं से करितियनि तँ ओ ओहिना ओतै अँटकल रहितथि, जेतए नामो-गाम नै सीखि पेली। जतबो समए गाममे बितेलौं, हुनकर कमाइ खेलियनि, तेतबो तँ हुनका नै कऽ सकलियनि।
तेतबे नै, दरबज्जापर जे माल अछि, हुनका (पत्नी) देखि भूख-पियास कहए लगै छन्हि मुदा हमरा देखि घिरनी जकाँ नाचि भगबए चाहैए। अठबारैओ जौं अबैत रहलौं तैयो तँ अपन बूझि खाइ-पिऐले किछु ने केलिऐ। कोनो कि मनुख छी जे घड़ी-मोबाइल देखि मिनट-सेकेण्ड बूझत, ओकरा लेल तँ अठबारैओ सटले-दिन भेल। तहिना तँ गाछीओ-बिरछीक अछि। जुड़शीतल दिनसँ ओकरा जलढार हेबाक चाही से अनका तँ कहलिऐ, मुदा...?

... किए ओ अपन बूझत?

जहिना सासुरमे जमाए सासु-ससुरक आगू लाड़-झाड़ करैत जे ई नै अछि ओ नै अछि। तहिना जीवानन्द ओछाइनसँ उठि, बैसैत पत्नी दिस देखि बजला-

> "एते दिनक जिनगीमे कहयो निठूर दूध नै खेलौं? आब अहाँक दरबारमे छी, जेना राखी।"

पतिक बात सुनि सुनयना विह्वल भऽ गेली। अपन कर्तव्यक बोध भेलनि। पतिक सेवा पत्नीक पहिल दायित्व। लटारम्ह करैत बजली-

> "एना संस्कृतमे नै कहू, भखियौटीमे कहू जे की कहै छी?"

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन हरा गेलनि। जैठाम सुग्गा-मेना संस्कृत पाठ करै छल तैठाम मनुखक दूरी एते किए भेल? प्रश्नमे ओझराइते बुकौर लगि गेलनि। बोली नै फुटलनि।

आजुक शिक्षक जकाँ जीवानन्दक जिनगी नै रहलनि। शिक्षक समाजक प्रति समरपित छला। ओइ समाजक बीच पढ़ाइ-लिखाइ प्रतिष्ठाक मूल बिन्दु छल। ओ सभ मानै छथि जे जइ विषयक जरूरति विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़बाक होइ छै ओइ विषयक पढ़ाइमे कमी छै। विद्यार्थी लेल किछु सहज विषय होइत अछि किछु कठिन। मुदा जइ विषयक जे शिक्षक होइ

छथि हुनका लेल तँ ई समस्या नै भेल। जौं हुनकामे शिक्षण-कलाक पूर्णता हेतनि तँ विद्यार्थीकेँ किए समस्या ग्रस्त रहए देथिन। की वजह छै जे अपना ऐठाम अदौसँ लऽ कऽ अखनि धरि शिक्षण-संस्थानमे छड़ीक चलनि नै रहल मुदा तँए कि कियो पढ़ि-लिखि विद्वान नै भेला। भेला।

जइ हाइ स्कूलमे जीवानन्द शिक्षण कार्य करै छला ओइ विद्यालयकेँ अपन छात्रावास सेहो छै। जइमे पचाससँ ऊपर छात्रो आ अदहासँ बेसी शिक्षको रहै छथि। मेसमे भोजन बनै छै आ जएह विद्यार्थी लेल सहए शिक्षको लेल होइ छै। ओना शिक्षक सभ अलगसँ दूध कीनि रातिमे सुतै बेर पिऐ छथि। जीवानन्दो पिऐ छथि।

जहिना बाटमे हराएल बटोही दोसरकेँ पुछैत, मुदा उत्तर देनिहारो बटोही तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। कियो एहनो होइत जे अपने हरेबाक चर्च करैत तँ कियो हराएब छिपबैत आरो दोसरकेँ हराएल बाट देखा दैत आ कियो एहनो होइत जे कहैत जे संगे चलू। ऐ आशाक संग चलैक बात कहैत जे जौं किछु नै कहबै तँ गोंग कहत, मुदा बिनु बूझलमे की जवाबो देल जा सकैए। ओ संग केने ताधरि चलैत रहैए जाधरि आँखिगर नै भेट जाइत अछि। अर्द्धांगिनीक रूपमे सुनयना पुछलखिन-

''की सुच्चा दूध कहलिऐ?''

जीवानन्द बजला-

''पैंतीस सालक नोकरीमे कहियो सुच्चा दूध नै पीब सकलौं। पीलौं जरूर मुदा एकरा अदहासँ बेसी खाएब थोड़े कहल जेतइ।''

जहिना मृत्तासनपर चढ़ल राहीकेँ सर-समाज आ कुटुम-परिवारक लोक आबि-आबि जिज्ञासा करैत जे भैया, कि काका, आकि बाबा कथी खाइ-पीबैक मन होइए, तहिना सुनयना पुछलखिन-

''एते दिन जेतए अहाँ छेलौं छेलौं, हम छेलौं छेलौं। मुदा आब तँ ओतए अहूँ रहब जेतए हम छी।''

पत्नीक विचारक गांभीर्यसँ जीवानन्द आँखि पड़ल अजगर साँपक सोझसँ पड़ा नै पाबि, बजला-

> ''कहलौं तँ बेस बात मुदा मनुख तँ मनुखक बीच किछु बंधन निर्धारित कऽ रहैए। डोरी-पगहाक जरूरति तँ पशु लेल होइत। मुदा बान्ह तँ एकमुड़िया नै भऽ सकैए। ओकरा लेल तँ जाधरि दू-मुड़िया नै लटपटौल जाएत, ताधरि गीरह केना पड़तै। जाधरि कुशियारक गाछ जकाँ गीरह नै बनत ताधरि रस-जल केना समटाएल रहत।''

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जिनगीक ओझरी देखए लगला जे ई बन्धन छूटल कहिया। तड़सैत मन पत्नीक करेजमे पहुँचलनि। जहिना निशाँएल लोक अपने अड़-दड़ बजैत तहिना जीवानन्द बाजए लगला-

> ''कामिनी, सेविकाक रूप छोड़ि संगी कहिया बुझलयनि। ई दोख केकर। मुदा दोख तँ दुनू दिस देखए पड़त। पत्नी कोन रूप देखलनि। सभ दिन ओ पति बूझि सेवा करैत एली। कहियो किछु नै मंगलनि। अपन परिवारक स्तर बूझि अपनाकेँ सम्हारि रखली।''

बड़बड़ाइत पतिकेँ देखि सुनयना बजली-

> ''हारि मानी झगड़ा फड़ियाए। एके बेर बाजि जाउ जे जे हूसल से हराएल। जे जीबए से खेलए फागु।''

मरैत रोगी जकाँ जीवानन्द बजला-

> ''सुच्चा दूध आबो नै पीब सकै छी?''

> ''पीब सकै छी। जखनि गाए पोसैक लूरि अछि तखनि किए ने पीब सकै छी। मुदा जैठाम दिन-राति लुटनिहार लूटि रहल अछि तैठाम थनक दूध कंठ लग पहुँचत कि नै, तेकर कोन बिसवास अछि।''

पत्नीक प्रश्न सुनि जीवानन्द जी-जी कऽ उठला। बिसरल बात मन पड़लापर जहिना ओकर रूपो-रेखा सोझमे आबए लगैत तहिना भेलनि। बजला-

''शुद्ध-अशुद्ध दूध ने एक परिवारक समस्या छी आ ने एक गामक। दूधमे पानि देब चलनि भऽ गेल अछि। ओना जे अपने गाए-महिंस पोसि दूध खाइ छथि तिनकर संख्या कम छन्हि। जे बेचिनिहार छथि ओ दूध बेचि चाउर-दालि, तरकारी इत्यादि कीनै छथि, खाली दूधेटामे पानि नै देखै छथिन। आनो-आनो तहिना, तखनि कएल कि जाए। कुल-मिला कऽ देखलापर यएह ने देखि पड़ैत जे ताड़ी पीयाक गांजा पीयाककेँ गारि पढ़ि कहैत जे फोकटिया अछि। अहिना एक-दोसरमे सटल सम्बन्ध अछि। सभकेँ सभ गारि पढ़ैए आ सबहक सभ सुनैए। तहूसँ टपि अपने मुहेँ गरिया अपने सेहो सुनैए।''

विह्वल भऽ सुनयना टोकलकनि-

''तखनि उपए?''

''उपए एतबे जे जेते परिवारमे खर्च हएत कम-सँ-कम तेते उपारजन कऽ लेब तखनि परिवारक पार लगि जाएत। गाममे जेते खर्च अछि ओते गौआँ मिलि उपारजन कऽ लेता तँ गामक पार लगि जाएत। समाजेक कल्याण ने देशक कल्याण छी।''



कर्ज

जमीन निलामीक नोटिश पाबि बरिसलालक सभ आशा ओहिना झड़ए लगल जहिना वसन्तसँ पूर्व गाछक पतझर होइत वा फलसँ पहिने फूल झड़ए लगैत। हलसैत जिनगीक आशा देखि बरिसलाल खेती लेल, बैंकसँ कर्ज लऽ बोरिंग-दमकल करौलक। मुदा समैपर कर्ज अदा नै कए पाबि, जइले कर्ज लेलक सएह हाथसँ निकलैत देखि सोगसँ सोगाएल अखड़े चौकीपर पेटकान दऽ मने-मन सोचैत जे की करैत की भेल। सौनक मेघ जकाँ दुनू आँखि नोरसँ ढबढबाएल।

बीसम शताब्दीक आठम दशकमे हरित-क्रान्तिक हवा घुसकैत-घुसकैत गाम धरि पहुँचल। नव हवाक सुगंध नाके-नाक खेत-खड़िहाँनमे पहुँचल। गामक किसानक सीमांकन शुरू भेल। ओना सीमांक नाम-मात्रेक भेल मुदा भेल तँ। नाम-मात्र ऐ लेल जे सैद्धान्तिक रूपमे तँ सीमांकनक रूप रेखाा तैयार भेल मुदा जमीनक ओझरी कँटहा बाँस जकाँ ओझराएल। कड़चीसँ बेसी काँट। एक-एक कड़चीमे सएओ काँट। सोरगर-मोटगर पाकल देखि भलहिं आरीसँ जड़ि काटि दियौ मुदा झोझसँ निकालब तँ असान नै। जइसँ बेवहारिक पक्ष कमजोर पड़ल।

चारि श्रेणीक अन्तर्गत किसानकेँ रखल गेलनि। ढाइ एकड़सँ निच्चाँ एक श्रेणी, चारि एकड़सँ निच्चाँ दोसर श्रेणी, दससँ निच्चाँ तेसर आ तइसँ ऊपर चारिम। निचला किसान लेल सरकारी खजाना खूगल। रंग-रंगक प्रोत्साहनक घोषणा भेल। सरकारी घोषणा, तँए सभले भेल। मुदा बैंकक माध्यमसँ भेटत। जइ माध्यमसँ भेटत सएह नगण्य। एक दिस फौज जकाँ किसान दोसर दिस जैठामसँ भेटत, सएह नै। मुदा तैयो गोटि पंगरा तँ छेलैहे। सरकारी सुविधा सब्सिडीक रूपमे भेटत। तेकर कार्यालय भिन्न बनल। किसानक बीच प्रोत्साहनक घोषणासँ नव जागरणक संचार भेल। गाम-गाममे भी.एल. डब्लूक माध्यमसँ काजक सूत्र तैयार भेल। आने किसान जकाँ पाँचम किसान बरिसलालोक डेग बढ़ल। एक-तिहाइ सब्सिडी सुनि केना ने बढ़ैत। जखने किसानक हाथ पानि औत तखने चौमसिआ खेती बारहमसिआ बनि जाएत। जखने बारहमसिआ बनत तखने ने किसान डारि-

डारि झूला लगा बरहमासा गौत। नै तँ छह मासे, चौमासे ने गौत। जे चौमास किसानक बखारी छी, तेहीमे ने भाँग-धुथुर उपजैए!

वस्तुगत काज तँ नै मुदा चौरीसँ चौमास धरिक, चारि गुणा उपजाक नक्शा तँ किसानक मनमे बनबे कएल। बीघा-एकड़क हिसाब भलहिं अखनो धरि नै फड़ियाएल मुदा-एकड़-हेक्टेयर तँ आबिए गेल। किछु एनए किछु ओनए कऽ किसान हिसाब तँ बैसाइए लेलक।

अखनि धरिक जे छोट आ मध्यम किसान महाजनीक कर्जमे डूमल छल ओइमे पूजीपतिक प्रवेशक दुआर खूगल। कम सूदिक बात तँ आएल मुदा छह मास पछाति सूदि-मूरि बनि जाइत से एबे ने कएल। अखनि धरि सूदिक-सूदि प्रथा नै छल से आएल। भलहिं केतौ महाजन सप्पत खा केकरो घराड़ी लऽ लेने होइ आकि केतौ सप्पत खा कर्जा डूमल होइ, ई अलग बात। आजुक दहेज ओते भारी नै छल जेते माए-बापक सराध। ओना दहेजोक जड़ि मजगूत बनि रहल छल, किएक तँ शहरक आमदनी गाम दिस आबए लगल छल।

गाममे छोट -सीमान्त-माध्यम- पैघ लगा किसानोक संख्या बेसी मुदा बोनिहारक संख्यासँ कम अछि। ओना सभ गामक रूपो-रेखा एक रंग नहियेँ अछि। कोनो गाम एहेन जइमे पाँच प्रतिशतसँ कम जनसंख्या नवे-पनचानबे प्रतिशत जमीन पकड़ने, तँ कोनो गाम एहेन जइमे दस पनरह-प्रतिशतक अंतर। एहनो किसान जिनका अपन जमीनक अता-पता नै बूझल तँ एहनो किसान जे अपने सबतूर मिलि खेती करैत। तइ संग एहनो जे खेतक आड़िपर पहुँच जूति-भाँति तँ लगबैत मुदा अपने हाथे किछु नै करैत। गाछी-खरहोरि, बँसवाड़ि, घराड़ी लगा बरिसलालकेँ पाँच बीघा जमीन। दू बीघा बेख-बुनियादिमे फँसल बाँकी तीन बीघा जोतसीम। एकटा बड़द रखने। सफटैती कऽ खेती करैत। ओहू तीन बीघा जोतसीम जमीनमे तीन मेल। पनरह कट्ठा चौरीमे मलगुजारीक संग लगतो साले-साल डुमैत। मुदा छोड़िओ केना देत, आखिर खेत तँ खेत छी। रौदी भेने ओहीमे ने उपजा होइ छै। बाँकी सवा दू बीघा मध्यमसँ भीठ धरि। दसो कट्ठा भीठमे मरूआ, भदै-गदैरक संग कुरथी-तेबखा होइत। गहुमक खेती तँ आबि गेल मुदा खेती लेल पानि चाही। पटबैक साधन पोखरि, जइसँ करीनसँ किछु अगल-बगलक खेती

होइत। लोकक बीच ने पढ़बै-लिखबैक जिज्ञासा रहै आ ने सुविधा। गनल-गूथल विद्यालय-महाविद्यालय। बरिसलालो दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा खेतीए काजमे लगौने। मिथिलाक किसान खेतक ओहन प्रेमी बनल रहला जेहेन पतिव्रता नारी जे बाल विधव होइतो प्रतिष्ठाकेँ कमलक माला बना गरदनिमे लटका हँसि रहली अछि! तहिना किसानो! जौं से नै रहल छथि तँ भागि-पड़ा अर्थशास्त्री बनि किए अपन खेत-पथारकेँ सम्पति नै बूझि प्रतिष्ठाक वस्तु बूझि रहल छथि? की ओहिना खेतीकेँ उत्तम आ नोकरीकेँ मध्यमक विचार देलनि। जौं एकरा मुहावरा-कहावत बना देखब तँ मिथिलाक चिन्तनधारा धरि नै पहुँच पाएब! जैठाम खेतकेँ अपन अधिकारक वस्तु बूझि अपना हाथक हथिहार बना अपन स्वतंत्रताकेँ अक्षुण्य रखैक विचार सेहो देलनि। ई तँ अपन-अपन विचार होइ छै जे कियो हथियारकेँ बम-बारूद बुझैत तँ कियो हाथक यार माने प्रेमी बूझि विचारक बाट बनबैक विचार बेक्त करैत। तहिना अस्त्र शस्त्र सेहो अछि।

मध्यम किसान वा लघु किसानक जीबैक जिनगी ब्लौटिंग पेपर सदृश बनि गेल छन्हि जेकरामे लालो रोशनाइ सोंखैक शक्ति छै आ करियो रोशनाइक। बाढ़ि-रौदी एकैसम शताब्दीक ऊपज नै अदौसँ रहल अछि। भलहिं कहि सकै छी जे धार-धूड़क बान्ह-छान्ह दुआरे हुअ लगल अछि, भऽ सकै छै केतौ-होइत हेतै, मुदा प्रश्न धारेक पानिक नै अछि। तहिना रौदीओ रहल अछि। धारोक कटनी-खोंटनी कम नै अछि। मिथिलांचलमे कोसी-कमला तेखार कऽ दुब्बरसँ धोधिगर धरि अछि। पानिक एक साधन भेल, दोसर बर्खा भेल। ओहन-ओहन बर्खा होइत रहल अछि जे पनरह दिन हथियाक बर्खाक ओरियान कऽ कऽ पूर्वज रखै छला। हथिया मात्र एक नै जेकरा बर्खा ॠतुक अंतिम नक्षत्र कहि टारि देब। ओना पानिक कोनो ठेकान नै, माघोमे पाथर खसि उपजल उपजाकेँ नाश करैत रहल अछि। अंतिमक जनम ताधरि नै होइत जाधरि आदि नै होइत बर्खा ॠतुक आदि आद्रा छी। तँए ''आदि आद्रा अंत हस्त'' ई भेल बर्खाक आँट-पेट। पूर्वज सभ स्पष्ट विचार देने छथि जे बर्खाक कोनो बिसवास नै, केते हएत। १९७१ ई.मे बंगला देशक लड़ाइक लगभग सालो भरि बर्खा होइते रहल, ओहन-ओहन बर्खा होइत रहल अछि जइमे सएक-सए घर खसैत रहल अछि। घरमे दबल-बाल-वृद्ध, धन-सम्पति नष्ट होइत रहल अछि मुदा तैयो ब्लौटिंग पेपर

जकाँ सोंखि किए जीबैक बाट धेने आबि रहल अछि। दुनियाँमे ने साधकक कमी आ ने साधना भूमिक, मुदा मिथिलांचल श्रेष्ठ किए? केतौक जाड़क साधना तँ केतौक तापक तप, जइमे तपि तपस्या करैत, तँ केतौ पानिक सौभरी ऋृषि बनि करैत। मुदा मिथिलांचल साधनाक फुलवाड़ी लगा रखने अछि। ओइ फुलवाड़ीक फूल सजबै छेली सीता।

ने मिथिलाक भूमि बदलल, आ ने बदलल ऋृतु ऋृतुराज, बदलि रहल अछि खाली बोतलक रस। घरक समस्या कहाँ? समस्या तँ तखनि उठैत जखनि रहैक घरसँ घरभाड़ा असुलैक विचार जगैत। गाछक निच्चाँ सात-हाथ नौ हाथक घरमे जीवन-यापन कऽ वेद-पुराण सिरजलनि। की दुनियाँक देखिनिहार मिथिलांचल छोड़ि देखि रहला अछि, जौं से नै तँ समस्याकेँ कोन रूपे देखलनि। यएह ने सरकारी योजना जहिना कागतपर औषधालय बना साले-साल मरम्मतक नामपर योजना लूटाइत रहैत आ पान सालक बाद माटिपर खसा मलबा हटबैक खर्च होइत। खेतसँ उपजल खढ़, बाँस साबेक घर बना समस्याक समाधान करै छला। ओ सभ अपन विचारकेँ स्वतंत्र रखि स्वतंत्र जीवन बेतीत करै छला। पढ़ै-लिखैक ओते समस्या नै, जेहेन जिनगी रहत तेतबे बुधिक ने जरूरति। बेसी भेलासँ तँ लोक छड़पि-छड़पि अनको गाछक आम तोड़ए लगैए। भलहिं अपन पूर्वजक घराड़ीपर नढ़िया किए ने भुकए, मुदा दुनियाँकेँ मातृभूमि कहि सेवारत् रहै छी। ओही रूपक फूसिघर बना जिनगीक गारंटी केने छला। अखुनका जकाँ नै जे एक दिस लग्गी लगा भाँटा तोड़ैक बाट धेने छी आ दोसर दिस हजार-दस हजार जीबैबला ऋृषि-मुनिक दुहाइ दइ छी। एकैसम सदीमे कियो अपनाकेँ अगिला पीढ़ीक नजरिक पुतली बना रहल छी। जहिना बर्खा, तहिना जाड़ तहिना रौद-ताप, बाल जीवनसँ लऽ कऽ वृद्ध तकक अनुभव कऽ अपन जिनगीकेँ असथिर बना नीक-नीक उमेर पबैत रहला अछि।

पश्न उठैत जे की एहेन विचार मरि गेल आकि जीवित अछि? ने मरल आ ने स्वस्थ भऽ जीवित अछि। गाम-समाजमे लटपटाइत जीवित जरूर अछि मुदा...। जीवित ऐ रूपे अछि जे अखनो खेतीकेँ उत्तम मानल जाइत अछि। कृषि जिनगीकेँ थाहि चलबैए। तहूमे सामाजिक स्तरपर तँ आरो थाहल अछि। जौं जिनगीमे दोसराक जरूरति नै हुअए तँ ऐ सँ नीक जीवन

केकरा कहबै? आजुक हवा भलहिं जेते जोर मारए मुदा हवा असथिर वस्तुकेँ कहाँ किछु बिगाड़ि पबैए। अनभुआर धारमे ने नम्हर-नम्हर जलचरक भय रहै छै किएक तँ धुमैत धारमे जे गहींर-गहींर मोइन खुना जाइ छै तइमे ने डुमैक डर, जौं से नै तँ डुमैक डर केतए। तहिना ने धरतीओक बीच अछि। जहिना पानिमे गोहि, नकार आदि रहैए तहिना ने धरतीओपर बाघ सिंह, नाग बास करैए। थाहल जिनगीक अर्थ ई जे जौं तीन बीघा वा दू बीघा जमीनमे समुचित बेवस्था कऽ खेती कएल जाए तँ युगानुकूल मनुख बनब बड़ भारी नै। जिनगी तखनि भारी बनैए जखनि गरथाहमे जिनगी पड़ि जाइत अछि। किसानक जिनगीकेँ पंगु बना देल गेल अछि। जौं से नै तँ सरकारी बेवस्था कोन -किसान हितैषी- जिनगीक कोन जरूरतिकेँ पूरा नै कऽ पाबि सकैए, मुदा नीको-नीको -दस बीघासँ ऊपरबला किसान- परिवार ने अपना बेटाकेँ नीक शिक्षा दऽ पाबि रहल अछि आ ने जनमारा बिमारीक इलाज कऽ पाबि रहल अछि। जहिना सुति उठि सीता-राम, राधा-कृष्ण वा सतनामक नाम लेल जाइत तहिना ने आब टाटा-पापा लैत उठै छी। मुदा, की हम सभ नढ़रा मकै सदृश जिनगी नै जीबै छी जे भोगार गाछ रहितो अन्नक केतौ पता नै। कृषि तँ आमक बगीचा वा खीड़ाक लत्ती सदृश अछि। जहिना गाछक पल्लवक मुहसँ गिरहे-गिरहे पल्लव निकालि डारि बनैत रहैए, खीड़ा लत्तीक मुहसँ लत्ती बनि फुलाइत-फड़ैत रहैए तहिना ने जिनगीओ छी जे धरतीसँ जनमि फुलाइत-फड़ैत विसरजन करत। खेत तँ ओहन सम्पति छी जे जिनगीकेँ आगू-बढ़बैक शक्ति रखैए। केतबो शक्तिशाली किए ने आगि हुअए मुदा जौं ओइमे नव ज्वलनशील वस्तुक समागम नै हेतै, तँ केते काल ओ जीवित रहि सकैए। जाधरि धार टपनिहार वा सरोवरमे स्नान केनिहारकेँ पानिक थाह नै लगि जाएत ताधरि धार टपब वा स्नान करब तँ अथाहे अछि। जाधरि अथाह रहत ताधरि शंका रहबे करत। जाधरि आशंका रहत ताधरि विचार प्रभावित हेबे करत। मुदा एतेकक बावजूद हम किए...? की हम नै जनै छी जे जाधरि कृषिकेँ सर्वांगिन विकासक प्रक्रिया नै अपनौल जाएत ताधरि नचारी-सोहर केते काल सोहनगर हएत। हर आदमी हर परिवारकेँ ठाढ़ भऽ चलैक प्रश्न अछि, नै कि एक दोसराकेँ छिटकी मारि खसबैक।

पाँचटा किसानक संग बरिसलाल सेहो बोरिंग-दमकलक विचारकेँ आगू बढ़ौलक। प्रखण्ड कार्यालयसँ फार्म लऽ बैंकमे आवेदन केलक। संगीक जरूरति तँ पड़बे केलै किएक तँ जिनगीमे पहिल खेप प्रखण्ड कार्यालय आ बैंक पहुँचैक अवसर भेटलै। नव योजनाक काज बैंकमे आएल। ओना गामक आ गामक किसानक हिसाबे बैंकक संख्या दूधक डाढ़िए छल, मुदा छल तँ। बरिसलालक आवेदन स्वीकृति करैत जमीनक बौण्ड बना माइनर एरीगेशनकेँ काज करैक भार देलक। बैंक-कर्जक सूदि शुरू भेल।

माइनर एरीगेशनक आँट-पेट छोट। एकाएक काजमे बढ़ोत्तरी भेल। ने काज करैक औजार अधिक आ ने करैबला। तँए ठीकेदारीक चलनि। तहूमे एक अनुमंडलक बीच एकटा कार्यालय। लेनिहार हजार हाथ देनिहार एक। मुदा तैयो बरिसलालक आदेश पत्रकेँ फाइलमे लगा देल गेल। एक-तिहाइ सब्सिडी लेल सब्सिडी कार्यालयक जरूरति। सब्सिडी कार्यालय जिलाक अन्तर्गत। दौड़-बरहा करैत बरिसलालकेँ खर्चक संग-संग साल बित गेल। वरसातमे एक तँ धसना धूँसैक डर दोसर लोक खेती कहिया करत। बोरिंगक काज छोड़ि बरिसलाल खेतीमे लगि गेल। साल बितल दोसर साल शुरू भेल। ताधरि बैंकक कर्जक चक्रवृद्धि ब्याजक दरसँ एते मोटा गेल जे सब्सिडी उधिया गेलै।

दोसर साल शुरूहेसँ बरिसलाल काजक -वोरिंग-दमकलक- पाछू पड़ि गेल। आइ-काल्हि करैत माइनरो-एरीगेशनक काज आ सब्सिडीओ ऑफिसक काज लटकले रहलै। चढ़ैत बैसाख -दोसर साल- बरिसलाल रघुनन्दनकेँ कहलक-

> ''बौआ, छोड़ि दहक। बोरिंग नै भेल तँ करजो तँ नहियेँ भेल। बुझबै जे एते दिन घुमबे-फिरबे केलौं।''

बैंकक प्रक्रिया रघुनन्दनकेँ बूझल। बरिसलालक बात सुनि अवाक् भऽ गेल। मन कलपि उठलै बाप रे, सूदि-मूरि लदा गेलै, कोट-कचहरीक मुद्दा बनि गेलै। दोख केकरा लगतै। कोन मुँह लऽ कऽ समाजमे रहब। ग्लानिसँ मन बिसाइन भऽ गेलै। साहस बटोरि रघुनन्दन बाजल-

''काका, जँए एते दिन तँए दू मास आरो। बैसाख-जेठ बँचल अछि। काल्हि चलू या तँ अपन काज आपस लेब वा हाथ पकड़ि काज कराएब। तइले जे हेतै से देखल जेतै।''

रघुनन्दनक बात सुनि बरिसलाल ठमकि गेल। बाजल-

''बौआ, हम तँ तोरेपर छी, आगिमे जाइले कहऽ आकि पानिमे तोरासँ बाहर थोड़े हएब।''

बरिसलालक विचार सुनि रघुनन्दनक मनमे उत्साह जगल। दोसर दिन दुनू गोटे -बरिसलाल, रघुनन्दन- माइनर एगरीगेशनक कार्यालयसँ बोरिंग गाड़ैक सामान नेने आएल। गाड़ैक दिन तकबए गेल तँ आगूमे भदबा पड़ैत रहए। जोड़-घटाउ करैत आठ दिन पछाति बोर करब शुरू भेल। सिरिफ ठीकेदारे टा आएल बाँकी सभ काज गामेक मजदूर करत। ओना बोरिंगक काजमे गामक मजदूर अनाड़ीए छल मुदा अनाड़ीओ तँ केते रंगक होइ छै। जेते काज तेते जीवनी तेते अनाड़ी। जखने काजक लूरि भऽ गेल तखने जीवनी, जाधरि नै भेल ताधरि अनाड़ी। तेतबे नै, एक काजक जीवनी दोसर काजक अनाड़ी सेहो होइत। तँए जीवनी-अनाड़ीक भेद करब कठिन अछि। ओना काजक भीतरो जीवनी-अनाड़ी होइत। जहिना एकपर सए खड़ा अछि। कहैले तँ एक पहिल सीमा भेल आ सए दोसर सीमा मुदा दुनूक बीच अंतर ओते अछि जेते एक प्रतिशत आ सए प्रतिशत। तहिना काजोक अछि। एके काजक भीतर सएओ रंगक काजक अंश होएत। किछु अंशक बादे जीवनी मानल जाए लगैत मुदा जीवनी -लूरिगर- होइतो पूर्ण लूरिगर नै मानल जाएत। पूर्ण लूरिगर तखनि मानल जाएत जखनि काज समए सीमाक भीतर होइत। ओना काजोक सीमाक निर्धारन व्यास पद्धतिक अनुकूल होएत। जौं से नै होएत तँ किछु एहनो काज केनिहार होइत जे समैओ-सीमासँ पहिने कऽ लैत आ किछु एहनो होइत जे काज तँ कऽ लैत मुदा समए सीमा टपि कऽ करैत। तँए कि ओकरा अनाड़ी कहल जेतइ।

मुलाइम माटि रहने सबा साए फीट बोर आठे दिनमे भऽ गेल। लेयरो बढ़ियाँ। चालीस फीट लेयर। ओना जौं नीक लेयर होइत तँ पनरहो फीटमे पाँच हार्स पावरक इंजन पूर्ण पानि दैत, मुदा लेयरोक तँ ठेकान नै। नीक-अधला संगे होइत। कोनो बालु -सौतबी- एहेन होइत जइमे पानिक मात्रा

पनरह प्रतिशतक आस-पास होइत आ कोनो एहेन होइत जइमे अस्सी प्रतिशत धरि पानि रहैत। मुदा बरिसलालक बोरक लेयरक स्थिति किछु भिन्न छल। निच्चाँक तीस फीट लेयरमे अस्सी प्रतिशत पानि छल आ ऊपरकामे कम। तँए ठीकेदार बाजल-

> ''बरिसलालबाबू, अहाँक तकदीर नीक अछि। कहियो बोरिंग भथन नै हएत। किएक तँ तेहेन निचला बालु अछि जे सभ दिन पानि दनदनाइते रहत। तँए नीक हएत जे जहिना भीत घरमे ठेमा-ठेमा रद्दा पड़ैए तहिना किछु दिन जे बोर ठेमा जाएत तँ धँसना धँसैक संभावना समाप्त भऽ जाएत। ओना क्रेसिंग-पाइपसँ बोर कएल अछि, पाइप लोड करैमे कोनो दिक्कत हेबे ने करत, मुदा अहीं हितमे कहै छी।''

ठीकेदारक मुहसँ तकदीर सुनि बरिसलालक मन उधिया गेल। ठीकेदारक अगिला बात नीक नहाँति सुनबो ने केलक। अंतिम हितक चर्च सुनि बरिसलाल बाजल-

> ''ठीकेदार साहैब, अहाँ कि कियो बीरान थोड़े छी जे अधला करब। अहाँ तँ सद्य: इन्द्र भगवान छी, जेम्हर ताकि देबै तेम्हर ताड़ि देबै। जेना-जेना अहाँ कहब तेना-तेना करैले तैयार छी।''

ठीकेदार बाजल-

> ''हमरो गाम गेना बहुत दिन भऽ गेल। अखनि ऑफिसक छुट्टीक काजो ने अछि। किएक तँ बोर करैक सीमा जेते अछि तइ पूरैमे एक बेर गामसँ घूमि आएब। अहूँक काज नीक हएत आ अपनो काज भऽ जाएत।'' कहि ठीकेदार गाम चलि गेल।

पनरह दिन बित गेल। जेठ चलए लगल। रोहणि नक्षत्रक आगमन भऽ गेल। संयोगो नीक रहल जे अगते विहरिया हाल सेहो भऽ गेल। जहिना भक्त भगवानक मिलन होइत तहिना बरिसलालक मनमे भेल। अपनो हाथ पानि आबि गेल, ऊपरसँ भगवानो देता। पानिक धनिक बनि जाएब। जहिना

टिकुली अपन पाँखिक होश केने बिना हवामे उधियाइत ओतए पहुँचए लगल जेतए ओकर पाँखि बेकाबू भऽ टूटि जाइत। माटिक चुट्टी वा गाछक घोड़नकेँ पाँखि होइते मरैक दिन लगिचा जाइत, मुदा बूझि नै पबैत तहिना बरिसलालोकेँ हुअ लगल।

रोहणिया हाल जहिना धरतीक शक्तिमे नव उर्जा दैत तहिना बरिसलालोक मनमे आएल। पत्नीओ आ दुनू बेटोकेँ शोर पाड़लक। तेल विहिन बच्चाक मुँह लाली धरैत अनरनेबा जकाँ हरिअरसँ लाल होइत जाइत देखलक। तहिना पत्नीओक ओ दिन मन पड़लै जइ दिन हाथ पकड़ि जिनगीक भार उठौने रहए। मुदा, किए ने लोक भार उठौत? एकटा नव शब्द -word- ताधरि संग पूरैत जा धरि ओकर मथन होइत। नै तँ किए रहत। बड़ीटा दुनियाँ छै केतौ बौरु जाएत। पत्नीक नव रूप देखि बेटाकेँ सम्बोधित करैत बरिसलाल बाजल-

> ''बौआ, तोरा सभकेँ जहिना कोरा-काँखमे खेलेलिअ तहिना हँसी-खुशीसँ जीबैक ओरियान सेहो कऽ देलिअ।''

पतिक बात सुनि पत्नी सुशीलाक मन पहाड़क झरनासँ झड़ैत पानिक चमकैत रेत जकाँ चमकए लगलनि। बजली-

> ''सोझहे दीक्षा देने नै हाएत। एक-एक दिन, एक-एक क्षणक काजक बात बुझा दिऔ तखनि हएत?''

अखनि धरि बरिसलाल कोट-कचहरी करैत बहुत किछु सीख नेने छल। गाम-गामक खेती-पथारी, गाम-गामक माल-जाल पोसब, गाम-गामक फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक खेती, माछ पोसब इत्यादि सुनि चुकल छल। जहिना मिड़ल स्कूलक बच्चा हाइ स्कूलमे प्रवेश करैत नव-नव पोथी देखि ललाए लगैत तहिना बरिसलालक दुनू बेटाक जिज्ञासा जगल। जिज्ञासा देखि बरिसलाल बाजल-

> ''बौआ, माटिमे धन छिड़ियाएल छै, बीछिनिहार चाही।''

अखनि धरि दुनू भाँइ आमक टुकलासँ लऽ कऽ पाकल आम धरि बीछि चुकल छल तँए बीछैक बात सुनि जेठका बेटा महावीर पुछलक-

“केना बिछबै बाबू?”

बरिसलाल बेटाक प्रश्न सुनि खुशिया गेल। आजुक बेटा जकाँ नै जे नोकरीओ करैत आ नोकरो रखैत। जखनि अपने काज अछि तखनि अपनासँ जे समए बँचत सहए ने दोसरकेँ देब। बाजल-

> “बौआ, अखनि तूँ सभ भारी काज करै जेकर नै भेलह हेन। ओना कनी-कनी कऽ हेन्डिल मारब सीख लेबह तँ दमकलो चलाएल भइए जेतह। मुदा जौं दस कट्ठामे सालो भरि तरकारीक खेती करबह तँ ओते कोन परदेशिया कमाएत। हँ समए बदलने लोक रंग-बिरंगक वृत्तिओ बदलि लेलक हेन। जइसँ किछु अनाप-सनाप सेहो भऽ रहल छै। मुदा बुधिक संग पूजी आ पूजीक संग बुधि नै चलत तँ अनेरे दब-उनाड़ होइत रहत।”

जेठक पूर्णिमा दिन बोरिंग लोड भेल। लोड होइसँ तीन दिन पहिने अपन ऊषा मशीन आबि गेल रहै। बोरिंग लोड कऽ ठीकेदार-मजदूर मिलि माछक भोज खा, सोलह घंटा पानि चला काज सम्पन्न केलक।

अखाढ़ चढ़िते मानसून उतरि गेल। पहुलके दिन एहेन बर्खा भेल जे खेत-पथारमे पानि लगि गेल। नीचला खेती बुड़ैक लक्षण धऽ लेलक। तेसरे दिन बाढ़ि चल आएल। पोखरि-झाखड़ि, चर-चांचर भरि गेल। पानिपर पानि आ बाढ़िपर बाढ़ि केते बेर आबि गेल। दहार भऽ गेल। एहेन दहार भेल जे नवान पावनिओ लोक बिसरि गेल। मुदा कातिक अबैत-अबैत रब्बी-राय छीटब शुरू भेल। गहुमक खोती नै भऽ सकल। अन्नमे गहुमक खेती सभसँ महग खेती होइत। मुदा धान नै भेने किसानक स्थिति बिगड़ि गेल। एक तँ ओहिना बरिसलालक स्थिति दू सालक दौड़-बरहामे बिगड़ि गेल तैपर दाही आरो बिगाड़ि देलक। सालो भरि बोरिंग-दमकल बैसल रहि गेल।

तरकारी खेतीक ओहन दशा बनि गेल जे बजार नै! कच्चा सौदा, नष्ट होएत।

देखैत-देखैत सतासीक बाढ़ि आ अठासीक भुमकम आबि गेल। जर-जर बसीसलाल फड़-फड़ करैत फड़फड़ा गेल। तही बीच बैंकक पक्षसँ जमीनक निलामीक नोटिश भेटलै।

❍ ❍ ❍

परदेशी बेटी

उबानि होइते घटक काका दाँत पीसैत काकीपर बिगड़ैत घर छोड़ि विदा भेला। मनमे उठलनि जे एहेन पड़ाइन पड़ा जाइ जे दोहरा कऽ ने घरक मुँह देखी आ ने घरेवालीक। मुदा ओहन क्रोधे आकि हँसऽबे कि जे दोसरपर नै बिसाए। घरक बात (पति-पत्नीक बीचक) तँए अनका कहबो उचित नै। दुनियाँमे केकरो कोइ नै कहै छै। भलहिं बिनु कहनौं दुनियाँ किए ने बुझैत होउ। मने मन घटक काकाकेँ पकिया निर्णए भऽ गेलनि। लोकोकेँ कोन मतलब जे बताह जकाँ अनेरो अनका देखि हँसि देब आकि बिनु मतल्बोक घंटा भरि सोखर पसारि देब। आन जकाँ नै जे आँगनसँ निकलि डेढ़ियोपर सँ पाछू घूमि-घूमि देखैत, देखबो केना करितथि? कोनो कि अदी-गुदी विचारक चोट लागल छन्हि, पुरुखे छिआ जे अखनो धरि बरदास केने छथि नै तँ मूसक दबाइ पीब नेने रहितथि।

एक तँ ओहुना अखनि घटक काकाकेँ टोकैक लग्न नै, कारण लगनक समए नै छी, लगनक समैमे ने पतियानी लागल काज रहै छन्हि कुसमैमे तँ दुनियाँक निअमे छै जे अपनो लोक पुछैले तैयार नै होइत अछि, घटक काका तँ सहजे विदाइ लेनिहार छथि। बिनु रेटक आमदनी। जेहेन मुँह तेहने आमद। नै टोकैक ईहो कारण रहनि जे मध-असरेसक गिरहस्ती चलैत, जेते समए लोक केकरोसँ गप करत तेते काल जौं देहे कुरिया लेत तँ ओइसँ बेसी नीक। भगवान केकरो अधला बना पठबै छथिन, भलहिं रोगे-बियाधि किए ने होउ। जौं सभ अधले रहैत तँ किए कियो देह कुरियबैले सोनाक सिक्का बना-बना आगूमे रखैत। ओहिना पैघ शैरीकार कहै छथि-

''हौहटिमे मजा है कि कलकलि में है,

खुदा ने दिया खुजली, कुरियाने में मजा है।''

खैर जे होउ। ओना किष्कारक समए रहने देवीओ देवता अखनि छुट्टी लऽ लेने छथि, चौड़चनक पछाति ज्वाइन करता। जहिना फुलही थारीमे जेते काल दही रहैत ओते बेसी कसाइन होइत, तहिना घटक कक्काक मन कसाइन होइत जाइत रहनि। जहिना भरल पेटक प्रेम गीतक स्वर आ जरल

पेटक प्रेम गीतक स्वरमे मात्राक भेद होइत तहिना घटक कक्काक मनमे उठैत रहनि जे आइ धरि कहियो नै उठल रहनि। केना नै उठितनि? सभ दिन दस गोटेक बीच हँसि-बाजि समए खटियबैत रहला आब जखनि शिव लिंग, फूल जकाँ वा नारियल-ताड़ जकाँ, फड़ैबला भेला तँ आनक कोन गप जे जाँघतर बसैवाली पत्नीओ दुतकारि देलकनि। ई तँ हुनके चाबस्सी होन्हि जे जहर-माहुरक कोन गप जे केकरो लग बजौ नै चाहै छथि। कसाइन बीच बिसाइन घटक कक्काक मनमे उठलनि। जिनगी भरि घरे बसबैक काज करैत एलौं मुदा...?

बेटा, प्रेमसँ चाहे बिगड़ि कऽ आकि पड़ा कऽ परदेश चलि गेल तँ चलि गेल। सबहक बेटी सासुर बास करैए, ओहो करह। मुदा पत्नी तँ पत्नी छी। जौं घरे नै तँ घरवाली की, आ घरेवाली नै तँ घर केहेन। भाड़ा घर जौं अपना घर सन होइतै तँ मूसे किए घरमे घर बनबैत। ओकरो तँ पानिए पाथरसँ ने जान बँचबैक छै। मुदा किए? अपन घर कियो अपन विचार अपन आँट-पेट आ लम्बाइ-चौड़ाइ नापि बनबैत तँए बेसी सुरक्षित होइत। मुदा गणेशजी अपन वाहनकेँ ई बात ने किए बुझा देलखिन जे लोकक घरमे जे घर बनबै छँ, से अपने जोकर बनबिहेँ। जइ भीतपर घर ठाढ़ अछि ओकरे किए जंजल बना दइए। जखनि भीते-जंजल भऽ जाएत तखनि हथियाक झाँट केना बरदास करत। मुदा घर खसत घर बन्हनिहारकेँ मुदा ओ-मूस तँ बीलमे अन्नक ढेरीपर अरामसँ पड़ल रहत। अकाससँ धरतीपर घर खसत, मुदा ओ तँ पताल दिस बनौने अछि। किए ने ओकर जान बँचले रहतै। तैबीच घटक कक्काक मनमे एकटा घटकैती आबि गेलनि। मन पड़िते मुस्की आबि गेलनि। ठोर बरदास नै कऽ सकलनि। खापड़िक तीसी जकाँ चनचना उठलनि। कहू जे बेंगबा सन छौड़ाकेँ इन्द्रक परी सन कनियाँ केकरा किरतबे भेलै। मुदा कलयुगक उपकार हत्या बरबरि। जौं से नै तँ जौं ओकरा अपन उपकार मन पाड़ि देबै तँ कि ओ नै कहत जे पाँचो टूक कपड़ा आ दैछना कथीक लेने रहिऐ। ओ खुशनामा देने रहए आकि काज करैक बोइन। मन घूमि पत्नीक ओइ बातपर आबि अँटकि गेलनि जे कहू ई केहेन भेल जे मुँह फोड़ि दुसैत कहलनि जे आगू-पाछू किछु सोचै नै छी आ जहाँ कोसीकातक बकेनमा दूधक दही आ तिलकोरक तरुआ आगू पड़ैए आकि बुधिए बिगड़ि जाइए। जइ परिवार लेल जिनगी भरि झूठ-फूसि बाजि, नीक-अधला काजक विचार नै

केलौं तइ परिवारमे एहेन गंजन हुअए तँ मनुख केना रहत? खौंझ आरो तेज भेलनि। ओ (पत्नी) रस्तामे रोड़ा अँटकौनिहार के? दस गाम घूमै छी, दस लोकमे रहै छी हम आ उपदेश देती ओ? जे सभ दिन जाँघक निच्चाँ रहली, ओ छड़पि कऽ छातीपर चढ़ि मुक्का देखौती; एहेन पुरुष हम नै छी। जहिया जे हेतै से हेतै अखनि घरसँ नै पड़ाएब। भक्क खुगलनि तँ देखलनि जे किलोमीटर हटि दोसर टोल लग पहुँच गेल छी। घूमि कऽ आँगन केना जाएब? केतबो किछु भेल तँ भेल मुदा पुरुष अपन पुरुखपाना केना छोड़ि देत? नेरौल थूक केना चाटत? मुदा अपने फुरने घुमऽबो केहेन हएत? मरदक बात वाण समान होइए जे धनुषसँ निकलि गेल निकलि गेल। कहि दुनू हाथक तरहत्थी माथपर लऽ बैस रहला।

जहिना किसान, बिनु खुरपीओक गाछक जड़ि लग बैस चुटकीएसँ खढ़ उखाड़ि कमठौन करए लगैत, तहिना घटक काका घुमैक ओरियान सोचए लगला। मुदा लगले मन तुरुछए लगलनि। ई तँ धोबियो कुकुरसँ टपब हएत, जे ने घरक आ ने घाटक। जौं बलजोरी घरमे रहौ चाहब तँ पत्नी केते मोजर देती। मन घुमलनि। हमरो एते नै अगुतेबाक चाही छल। गल्ती अपनो भेल। एना जे लोक छोट-छोट बातपर घरसँ पड़ाएत तँ कहियो कुकुर-बिलाइ जकाँ अपन घर हेतै। साँझू पहर, जखनि लोक बाध-बोनसँ अबैए तखनि केकरा घरमे ने हर-हर-खट-खट होइ छै, मुदा कहाँ कियो हमरे जकाँ फूलि कऽ पड़ा जाइए। जौं एक रत्ती दब-उनार बात पत्नी कहबे केलनि तँ की हेतै। कोनो कि जड़ि भीरा कऽ टिक काटि लेलनि। अर्द्धांगिनी छथि, बाल-बच्चा आ परिवारपर जेते अधिकार पतिक होइत तइसँ कम की पत्नीओक होइत अछि। बेटा-बेटी तँ दुनूक छी। ई तँ समैक दोख छी जे कखनो गरमी रौदमे गरमा दैत अछि तँ कखनो ठंढाए दैत अछि। सौझुका झगड़ा राति खसैत-खसैत मेटाइए जाइए किने। आकि हमरे जकाँ दिन-राति धेने रहत। भोर होइते दुनू परानी घर-अँगनाक काजमे लगि जाइए। कहाँ एको मिसिआ मान-दोख मनमे रखैए। जहिना डिक्शनरीमे नवका शब्द अबितो अछि आ जाइतो अछि तहिना ने घरोमे किछु-ने-किछु अबैत रहैए आ किछु-ने-किछु जाइत रहैए। मन आगू घुसकलनि। मन पड़लनि बिआहक दिन? समाजक बीच सरियाती-बरियाती, तँ हमहीं ने हाथ पकड़ि जिनगी भरि

संगे रहैक वादा केने रही, से की भेल? जहिना कटही गाड़ी कुगरक रस्तामे कनी दब-उनार भऽ उनैटिए जाइए तँए कि गाड़ीवान गाड़ी रखनाइए छोड़ि देत। जौं छोड़ि देत तँ आगू केना घुसकत? औगुताइमे एहेन भारी गल्ती नै करक चाही। कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एना केलौं। एको रत्ती उम्रोक लेहाज-विचार केलौं? जुआन लोक जकाँ निर्णए केलौं। कहू जे आब हमर उमेर अछि जे संगी छोड़ि असगरे रहब। कोनो कि संयासी छी जे दोसर नै सोहाएत। अपने दिन-राति धीमे डूमल रहब मुदा दोसरकेँ कुत्ता जकाँ पचैए ने देब। भरि दिन शनियाही गुड़-चाउर चिबबैत रहब आ अनका देखबे ने करब। मुदा केतौ जाएब तँ पेट संगे जाएत। पेटक आगि जेहने परिवारमे तेहने तीर्थ-स्थानोमे जगितै अछि। ओकरा तृप्ति करब आवश्यक होइत। जौं से नै तँ भूखे भजन किए ने होइत। खाइले के देत? जौं देबो करत तँ एक मुट्ठी देत? एक दिन खेलासँ जिनगीक भूख मेटाएत? जौं से होइत तँ डिबियो लऽ कऽ तकलापर एकोटा भिखमंगा नै भेटैत। मन घुमलनि। हारि मानी झगड़ा फड़ियाए।

जहिना बाढ़िक तेसरा दिन पानि ठाढ़ भऽ उनटा-पुनटा दिशा पकड़ए लगैत तहिना घटक कक्काक मनमे सेहो भेलनि। अपन विचारक अनुकूल बात केकरा अधला लगै छै। संयोगो नीक रहलनि। मुदा मनमे खरौंच लगलनि। समाजो तेहेन भऽ गेल अछि जे केकरा के पूछत? जहिना भोजक जएह बारीक मिठाइ पड़सैए सएह माछो-मासु। कहू ई केहेन भेल? सभ तरहक पनचैती बड़के काका करता। जमीनोक पनचैती आ दुनू परानीओक झगड़ा हुनके चाही। जौं जमीनक पनचैती अमीन नै करत, अहिना सभ गुणक आधारक से आदमी नै करत तँ खीर-खिचड़ीमे कोनो भेद नै रहत? ई सभ गप मनमे नचिते रहनि, तखने सुनरलाल टोकलकनि-

"भाय साहैब, अहीं ऐठाम जाइ छी?"

अहीं ऐठाम जाइ छी सुनि घटक काका औना गेला। अपन ठर केतए अछि जे जाएत। कि कहबै, भरमे-सरम आँखि मूनि लइ छी जे बूझत हवामे अलिसा गेल छथि। उत्तर नै पाबि सुनरलाल दोहरा देलकनि-

"भाय साहैब झखाएल छी, भक्क खोलू।"

अकचकाइत घटक काका बजला-

"नै, नै! कनी आँखि लागि गेल। की कहलह?"

सुनरलाल कहलकनि-

"घरपर चलू। निचेनसँ बुझा देब। रस्ता-पेराक गप नै छी।"

एक तँ राकश दोसर नतल। घटक काका हरे-हरे कऽ घर दिस विदा भेला। मनमे उठलनि जे कोनो विचार दोहराइओ कऽ होइत अछि, किए ने दुनू परानी मिलि फेरसँ विचारि लेब। घर दिस विदा होइते घटक काका सुन्दरलालकेँ कहलखिन-

"गपो शुरू करह। जेते भेल रहत ओते तँ काजे ने भेल रहत?"

छुब्ध होइत सुनरलाल कहलकनि-

"देखिऔ भाय, बिआह भेल केकरो आ जहलमे अछि हमर बेटा।"

अकचकाइत घटक भाय पुछलखिन-

"से की, से केना?"

मने-मन महावीरजी केँ गोड़ लगलनि। निसाँस छोड़ैत, सोचए लगला जे बाप रे एकटा काजमे जौं एना भेल, हम तँ जिनगी भरि इएह केलौं। खुनी केसमे बेसी दिनक सजा होइ छै। मुदा खुदरो-खुदरी केश मिला तँ ओहूसँ बेसियाइए जाइ छै। हे भगवान रच्छ रखलह। आबो छोड़ि देबाक चाही। मुदा जइ इंजीनियरकेँ जइ मशीनक बोध भऽ गेल अछि, जौं मशीनक तकनीक बदलि जाएत तखनि की हएत? दोसर काजक लूरि कहिया भेल जे करब। हे भगवान जनिहऽ तूँ।

सुनरलाल कहए लगलनि-

"भैया देखियौ, हमरे बेटा फुलबाक बिआह बंगलोरमे करा देलकै। ओहन-ओहनकेँ गाममे के पुछै छै। मुदा ट्रन्सपोर्टमे नोकरी भेने दिन-दुनियाँ बदलि गेलै। भषो सीखि लेलक। अलगर्जा कमाइ हुअ लगलै। बी.ए. पास लड़की संग बिआह करा देलकै।"

घटक काका पुछलखिन-

''बी.ए. पास लड़की गछलकै केना?''

सुनरलाल कहलकनि-

''केहेन गप करै छी। जखने लोक कमाए-खटाए लगैए तखने ने सर्टिफिकेटक ओरियान करए लगैए। एम.ए. पासक सर्टिफिकेट कीनि लेने अछि।''

घटक काका पुछलखिन-

''लड़कीबला केतए कए छिऐ?''

सुनरलाल कहलकनि-

''नवटोलीक छिऐ। तीस-पैंतीस बरख पहिने गामसँ पड़ा कऽ गेल। नोकरी करए लगल। ओतै परिवारो रखैए, घरो-दुआर बना लेलक। अपन इलाकाक जाति बूझि कुटुमैती कऽ लेलक।''

घटक काका पुछलखिन-

''आब की भेल?''

सुनरलाल कहलकनि-

''बिआहक बाद लड़की जोर केलक जे गाम जाएब। एबो कएल। मुदा जहिना पढ़ल सुग्गा बौक होइत तहिना वेचारीकेँ भऽ गेलै। पनरहे दिनमे नाकोदम भऽ गेलै। जहिना सासु अल्हरि कहए लगलै तहिना ससुरो माथा पीटए लगलै। सर-समाजक तँ चर्चे कोन? ने भाषाक ताल-मेल बैसै आ ने खाइ-पिऐक वस्तुक।''

घटक काका टोकलखिन-

''जा, ई तँ भारी जुलुम भेल! तखनि की भेलै?''

सुनरलाल कहलकनि-

“लड़की पड़ा कऽ दरभंगामे गाड़ी पकड़ि बंगलोर चलि गेल। हमरा बेटापर केश कऽ देलक। जेलमे पड़ल अछि।”

डेढ़ियापर अबिते घटक काका बजला-

“एहेन खच्चरपन्नी गाममे चलतै। अच्छा कनी ओहू पार्टीक बात बूझि लेब तखनि कहबह। अखैन जाह, कनी हमहूँ औगुताएले छी।”

दरबज्जापर गल-गूल सुनि रेखा आँगनसँ आबि, खड़िहाँनक मेह जकाँ बीचमे ठाढ़ भऽ सोचए लगली जे केहेन पुरुख छथि जे थूक फेक पड़ाएल रहथि जे घूमि कऽ ऐ घरक मुँह नै देखब, से सालक कोन गप जे दिनो भरि नै निमाहि सकला। मुदा मन ठमकलनि। सप्पत-किरिया लोककेँ थोड़े टिक पकड़ि उखाड़ै छै, जौं से उखाड़ितै तँ भरि दिन लोक किए सभ बातमे जय गंगाजी आकि माटि उठा-उठा बजैए। जहिना लोक भात-रोटी खाइए तहिना ने सप्पतो-किरिया खाइक वस्तु भेल। खेलक पचलै, फेर खेलक फेर पचलै। रसे-रसे एहेन पचान पचि जाइ छै जेहेन झूठ-सच्चमे पचल अछि सच्च झूठमे। जौं तुकबन्दी करैक लूरि भऽ जाए तँ कवि, शायर बनबे करब आ जौं झूठ-सच्च पचबैक लूरि भऽ गेल तँ वक्ताकेँ के कहए सेसर अनुभवी वक्ता बनबे करब। तहिना तँ हिनको (पतिक) जिनगी तेहने रहल छन्हि। तहूमे समाज तेहेन लाइसेंस दऽ देने छन्हि जे साले-साल थोड़े रिनुअल करबए पड़तनि, ता-जिनगी लेल बनि गेल छन्हि। आँखि उठा घटक काकापर देलनि तँ देखलनि जे मुँह धुआँ केने लटकौने छथि आ जहिना कोयलाक धुआँमे चमकैत बिजली बनैत तहिना उपदेश झाड़ि रहल छथि। मन रोषा गेलनि। घरे परिवारक लोक किए ने होथि मुदा गलत गलत छी तहिना सहीओ तँ सही छीहे। गल्तीक कोनो पारावार छै? रावण जकाँ लाख-सबा लाख धिया-पुता जहिना त्रेतामे छेलै, जे घटि कऽ द्वापरमे सए-सैंकड़ापर चलि एलै, तहिना ने अखनो अछि। तहूमे कलयुग छी। पापेक युग। देवतो सभ पड़ा कऽ उनीकुटी चलि गेल छथि। जाए तँ चाहलनि समुद्र दिस मुदा भोर होइते लाजे सभ रस्तेमे रहि गेला। रोषाएल रेखा झपटि कऽ बजली-

''बौआ, अहीं सभ ने सर-समाज छी। जेहने समाज रहैए तेहने लोक काजो-उदेम करैए।''

रेखाक बात सुनि सुनरलालक मनमे पंचक एहसास भेलै। पंचक एहसास होइते अपन बात बिसरि गेल। बिसरि गेल बेटाक जहलक उपए। दमकलक चक्का जकाँ पहियाक रूप बदलि एक सुरे मुड़ी डोलबैत बाजल-

''हँ, से तँ छीहे। केकरो कटने समाज कटै छै। तेहेन लस्सा बनल छै जे केतबो कटतै तैयो सटिते रहतै।''

''नइ बुझलौं अहाँक बात?'' रेखा पुछलखिन।

जहिना नम्हर नागड़ि नम्हर जानवरक पहिचान छी तहिना ने काजक नागड़ि मनुखोक होइ छै। जौं से नै तँ रावणसँ पैघ आसन हनुमान कथीक बनौलनि। ओही नागड़िक बले ने सौंसे लंका जरा देलनि आ अपना किछु ने भेलनि। बूझल-बिनु-बूझल दुनियाँमे केहेन हएत जे नै हएत। कोनो प्रश्नक उत्तर दुनूक एक भऽ सकैए। मुदा होइ छै। बुझिनिहार संग बुझिनिहार रहैत तँ बिनु बुझिनिहारोक संग तँ बिनु बुझिनिहार हेबे करतै। जइ काजमे सुनरलाल अपने ओझराएल छल तही काजक ओझरी छोड़बैक भार लैत बाजल-

''भौजी, अहाँ-हमरामे कोन भेद अछि। नीक-अधला सभ गप तँ दिअर-भौजाइमे होइते अछि। से कि कोनो आइए अछि आकि अदौसँ आबि रहल अछि। देखियौ, जहिना करोटन फूलक पत्ता-पत्तामे गाछ पैदा करैक शक्ति अछि, तहिना ने समाजोकेँ बनबै-मेटबैक दुनू शक्ति छै।''

सुनरलालक विचारमे सूर-मे-सूर मिलबैत रेखा बजली-

''बौआ, पहिने कनी भैयाकेँ बुझा दिअनु जे रूसि कऽ जे भगला से कोन अनचित बात कहलियनि।''

नम्हर झगड़ा देखि सुनरलालकेँ नम्हर पंचक एहसास भेल। जहिना नम्हर लीब जाइत, तहिना सुनरलाल लीबैत बाजल-

“भौजी, केना कहबनि हम। सँए-बहुक झगड़ामे लबड़े टा पड़ैए। अहाँकेँ कहलौं से तँ भाइओ-साहैब सुनबे केलनि।”

जहिना एक चुरुक जलसँ सौंसे घरक वस्तु पवित्र बनि जाइत तहिना घटक काका अपन गनजन सम्हारैत बजला-

“हौ सुनरलाल, जहिना तूँ छोट भाए भेलह तहिना ओहो घरेवाली भेली। तँए बजैमे थोड़े कोनो धड़ी-धोखा हएत। जुआनमे मौगी घरसँ पड़ाइत अछि आ उमेर बढ़ने पुरुख। तँ तोहीं कहऽ जे कोन गल्ती केलौं।”

मुड़ी डोलबैत सुनरलाल बाजल-

“से के कहैए जे अहाँ अधला केलौं।”

पाशा बदलैत देखि रेखा बजली-

“बौआ, नौंए-कौंए कऽ भगवान एकटा बेटा देलनि। अपने दुनू परानी ने सोचब जे केहेन पुतोहु एने घरक गाड़ी ससरत। सिनेमा-नाटक जकाँ थोड़े मनुखक जिनगी क्षणे-क्षण बदलि सकैए आकि क्षणे-क्षण आगू-पाछू भऽ सकैए।”

रेखाक बात सुनि, मुड़ी डोलबैत सुनरलाल बाजल-

“हँ, से तँ होइते छै। अहीं कहू भौजी, केकरा चलैत हमहीं एते तबाह छी। उहए छौड़ा माने हमरे बेटा एहेन किरदानी किए केलक। जहिना बिआह भेने अनेरे लोक घटक बनि जाइए तहिना किए बनल। नै बनल तँ जहलमे किए अछि?”

रेखा टोकलखिन-

“अहाँ अपनापर नै लिऔ। बेटा केलहा काजक दोखी बाप नै होइए मुदा माए-बाप...। काल्हि भऽ कऽ जे कोनो दोख लगा बेटाकेँ कहबै तँ ओ नै मुँह दुसैत कहत जे केकर केलहा छिऐ। जहिना अपन

बेटीकेँ पोसि-पालि बिआह करै छिऐ तहिना ने सभ करैए। मुदा घरक मिलानी जौं नै करबै तखनि पढ़ल सुग्गा बौक नै हेतै।''

पत्नीक बात सुनि घटक काका सहमला। पाछू घूमि तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे केते घूर-बहूर काज भेल अछि। ईहो हएत। यएह ने दस गोटेमे बजलौं। कोनो कि इएह टा बात बजलौं। सदिकाल तँ एहेन-एहेन बात चलिते रहैए। बड़ हएत तँ बाजब जे पत्नीक विचार नै भेलनि। तहूमे के एहेन छथि जे पत्नीक बात काटि सकै छथि।

मन झिलहोरि खेलाए लगलनि। जहिना पघिलल कटहर गाछसँ खसिते छँहोछित भऽ छिड़िया जाइत तहिना घटक कक्काक मन छँहोछित भऽ छिड़िया गेलनि।



मान

तराजूक दुनू पलड़ा बीच डंडी लगल रहैत, जइ सहारासँ वस्तु-जातक वजन मानल जाइत तहिना जिनगीक तराजू सेहो होइत अछि। कमल फूलक डंटीक सहारासँ जहिना फूलक सभ अंग समान रूपे खिल-खिल खिलैत तहिना जिनगीओक होइत, मुदा से कहाँ होइए?

जिनगीक तराजूक पलड़ा दू रंग होइए, एक सही दोसर घटबी। पलड़ाक घटी-बढ़ी भेने तराजू पसङाह भऽ जाइए जइसँ घटैत-बढ़ैत जिनगी जीवनक दू धारामे प्रवाहित होइत चलए लगैए।

एक महिना अखाढ़ रहितो दू नक्षत्रमे विभाजित होइत, ओना एक पूर्ण होइत दोसर अपूर्ण भेने तेसरो चलि अबैत। तैबीच आद्रा नक्षत्र अपन पूर्ण जिनगी बितबैए। भलहिं अखाढ़क पहिल भाग हो वा मध्य वा अंत। पनरह दिन अन्हार बित आठ इजोरिया मास टपि गेल। हाजरी भुकबैले मौसम जोगार लगा नेने अछि मुदा आद्राक उपस्थिति दर्ज नै भेल अछि। ओना कहैले सालक पाँच बर्खा भऽ चुकल अछि मुदा तैयो आद्रक जगह उम्मस अपन पूर्ण जुआनीमे जगमगा रहल अछि। गोनू झाक हरबाहिक जलखैक खीर जकाँ हाल धरतीकेँ छुछुओने अछि।

दिन उगिते जेना दीनानाथक दर्शन होइत तहिना किसानक बीच नव दर्शन आएल। ओ छी श्री-विधिसँ खेती करब। मास दिन पूर्व धानक बीआ, जैविक खाद, कीटनाशक दबाइ इत्यादिक बँटबारा, पछिला हिसाबे इमानदारीसँ भेल। इमानदारी ऐ लेल जे जहिना बैंकक कर्जकेँ लोक चौक परहक भुज्जा खा सठा दैत तहिना अखनि धरिक बीआ-बालिक हिसाब रहल। वैचारिक रूपमे बीआ पाड़ि खेती करैक समए सेहो पौलक। संयोगो नीक रहल जे एकटा बर्खा सेहो भेल। बर्खा हाथ लगने किछु गोटे बीआ खसौलनि। देखबामे बर्खा भेल, मुदा बीआ पाड़ैबला नै भेल। जइसँ बीआ अदहा-छिदहा जनमल। किछु गोटे कल आ घैलसँ पटा डूमा हाल बना खसौलनि। जनम्बैमे ओ जीतला। मुदा किछु गोटे अखनो बीआ घरेमे आद्राक आशापर रखने छथि। ओना अद्रोसँ रोहणिक बीआकेँ निरोग मानल गेल अछि। मुदा रोहणिक पछाति हिसाबकेँ अनदेखी केने बीराड़ेमे बीआ जरबो करैत। खेतीक एक

उपए तँ हाथ आएल मुदा मूल उपए पानि नै आएल। एक पाशापर भगवान बैसल दोसर २००८ ई.क कोसीक विभिषिका नहर खा गेल, तइ लगल १९८७ ई.क बाढ़ि आ १९८८ई.क भुमकम बीस-पच्चीस बरख पहिने बोरिंगकेँ खा गेल छल। जुड़शीतल पावनिक चलती कमने पोखरिक उड़ाही रूकि गेल जइसँ ओ अपने तेहेन रोगा गेल अछि जे जान लेल रविक संग एकादशीओ करैए।

मनुखक जनम संस्कार ओतए पनपब शुरू होइत जेतए ओकर जनम होइत अछि। ई दीगर बात जे केतौ पेटक बच्चाक सेवा पोनगैक पहिनेसँ हुअ लगैत आ केतौ रस्ते-पेरे जन्मो लैत आ पाललो-पोसलो जाइत।

आद्राक कर्त्तव्यक लापरवाहीसँ जन-जनक बीच तबाही तँ अछिए श्रमक घटबी सेहो बेसियाइए गेल अछि। मुदा किछुओ किए ने हुअए आखिर वसन्तक उनाड़िओ मास तँ छी। किए ने बाग-बगीचामे बगवार वसन्तक संग चैतावर आ बरहमासा गाएत। आमक संग-संग जमुनिया धार सेहो बहिते अछि।

टोलक पाँच गोटेक गाछी एकठाम। साधारण परिवार तँए छोट-छोट गाछी। मुदा कलमी-सरही सभ आम लुबधल। करीब पच्चीस तीस गाछ सभ मिला कऽ पाँचो परिवारक जीवन-शैली एक रंग तँए विचारोमे एकरूपता छन्हि। एते जरूर छन्हि जे बिनु कहने कियो कोनो गाछपर ने ढेला फेकैत आ ने हाथसँ तोड़ैत। मुदा खसल आमक कोनो रोक नै। जइसँ चेतन तँ अपन-आनक ठेकान जरूर बुझैत, मुदा बाल-बोध नै। पाँचो परिवारक धिया-पुता एकेठाम खेलबो करैत आ आम खसलापर पबैले दौगबो करैत। ओना अबोध बच्चा रहने, अवाजकेँ ठीकसँ नै अकानि कियो केम्हरो कियो केम्हरो दौग जाइत मुदा केकरो भेटलापर एते खुशी सभकेँ जरूर होइत जे हराएल भेटल।

रातिक दू बजैत। उमस भरल दिनक संग अदहा रातिओ बित गेल। एक बजेक बाद पूर्बाक लहकी उठल। दिन भरिक गुमराएल मन नीन दिस दौगल।

दुनू बेटाक संग गुलजारी, आमक गाछी विदा भेल। अष्टमीक चान लुप्त भऽ गेल छल। जइसँ अन्हारक साम्राज्य पसरि गेल छेलै। आठ गोटेक परिवार गुलजारीक। तीनू बापूत मिला आठटा पाकल आम भेटलै।

आँगन आबि डिबियाक इजोतमे आठो आम गनि छोटका बेटा-राधेश्याम बाजल-

''जेते गोरे घरमे छी एक-एकक हिसाबसँ आमो अछि।''

राधेश्यामक बात सुनि जेठका भाय गौरीशंकर बाजल-

''जहिना छोट-पैघ आम अछि तहिना तँ घरमे लोको अछि किने। तँए...।''

''अखनि माएकेँ रखैले दऽ दहक। खाइ बेरमे खाएब।'' राधे श्याम बाजि कऽ चुप भऽ गेला।

❍ ❍ ❍

मनोरथ

जहिना शोभा काका सभ छुट्टी गामेमे बितबैत तहिना सभ रविओ बितबै छथि। सुविधो छन्हि। कोस पाँचेपर विद्यालय छन्हि, साइकिल छन्हिए तँए अबै-जाइमे असोकर्जो नहियेँ होइ छन्हि। शनिकेँ स्कूलो अदहे होइ छन्हि, सेहो सुविधा भइए जाइ छन्हि। आने शनि जकाँ सात बजे साँझमे शोभा काका गाम पहुँचला। पछबरिया घरक दाबा लगा साइकिल ठाढ़ कऽ कैरियरपर सँ झोरा उतारि आँगन पएर रखिते छथि आकि पत्नी सुगिया काकीपर नजरि पड़लनि। जेठ-अखाढ़ मास तँए डिबिया नेसैक ओरियान करैत रहथि। ओना डेढ़ियापर जखने साइकिल खड़खड़ाएब सुनलनि कि बूझि गेली जे एहेन अवाज तँ अपने साइकिलक छी। आँखि उठौलनि तँ नजरि पड़ि गेलनि। जेठ-अखाढ़ मास ऐ लेल जे पूर्णिमा भऽ गेल मुदा संक्रान्ति पछुआएले। मुदा काकीक संयोग नीक रहलनि जे नजरिमे नजरि नै मिललनि। जौं नजरि मिलि जइतनि तँ चूल्हि पजारि डिबिया नेसब बाधित भऽ जइतनि। तेकर लाभ सुगिया काकी उठेबो केलनि। लाभ ई उठौलनि जे पतिक आगत-भागतकेँ एक नम्बर काजक सूचीसँ निच्चाँ उतारि दू नम्बरमे रखलनि। कुशल कारीगर-कलाकार जकाँ एक काजकेँ विसर्जन करैसँ पहिने दोसरक संकल्प लऽ लेलनि। विचारि लेलनि जे जाबे जारनक धुआँ फरिच्छ हएत ताबे साँझो घुमा लेब। काजमे लगल देखि शोभो काका बिनु किछु बजने कोनचरे लगसँ झोरा ओसारक चौकीपर रखि पानिक प्रतीक्षा करए लगला। केना ने करितथि जाधरि घरबैया दिससँ पएर धोइले पानि नै पहुँचैत ताधरि कारखाना जकाँ उपस्थिति केना बनैत। मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे अभ्यागतक सेवा योग्य परिवार नै हुअए। सुगिया काकीक मनमे ईहो उठैत रहनि जे भाषणक कलाकारी होइत जे एतबे समैमे एतेटा बात बाजि देब मुदा काज तइसँ बहुत दूर होइत। चलनिहारकेँ पएरक गति रोकिनिहार सेहो बीचमे आबि सकैए। नहियोँ औत, तँए जइमे हँ-नै दुनूक संभावना होइ ओकर गारंटी शत-प्रतिशत नै कएल जा सकैए। तँए सुगिया काकीकेँ होन्हि जे जैठाम दुविधा अछि तैठाम सावधानी नै करब तँ रेलबेक ट्रेन जकाँ एकठाम बिलंम भेने गन्तव्य स्थान धरि बिलमिते ससरब। तेतबे नै, अदहा दिनक चलल छथि, बाटमे केतए आ की देखने हेता, जौं कहीं एहेन समस्या देखने

आएल होथि आ रस्तापर अमती काँटक झाँगड़ि जकाँ रखि दथि तखनि तँ जिनगीए ढंस भऽ जाएत। भोजनकाल जौं पानिक बर्तने फूटि जाए तखनि पानि केना परसब।

सभ काज सम्हारि काकी शोभा कक्काक हाथमे लोटा धरबैत पुछलखिन-

''हाल-चाल सभ आनंद किने?''

काकीक पूछब जेना शोभा कक्काक मन हौंड़ देलकनि। मन सहमि गेलनि जे भरिसक कोनो आक्रोश छन्हि। मुदा अनुकूल समए नै पाबि, उत्तर देखखिन-

''पुरबते।''

शोभा कक्काक उत्तर सेहो सुगिया काकी तारि लेलनि। तँए उचित समए नै पाबि सुगिया काकी सोचलनि जे पएर धोइले दरबज्जापर जेबे करता तँ किए ने टिकमे चिड़चिड़ी लगा दियनि जे जाबे चिड़चिड़ी छोड़ौता ताबे चाह बना लेब। काज औगतेने तँ नै होइ छै। बड़ भूख लागए तँ पातक बदला हाथे नै पसारि दिऐ! बजली-

''नीमक गाछमे गराड़ लगि गेल अछि से कनी देखि लेब?''

सुगिया काकीक बात सुनि शोभा काका बजला किछु नै, मुदा मनमे उठलनि जे नीमक गाछमे केतौ दिवार लगै। एहेन बात किए कहलनि। गराड़कें मीठ जड़ि पचै छै। तीत केना पचत। मुदा फेर मनमे उठलनि जे पुरुखक नाड़ी, नारीक नाड़ीसँ भिन्न चलैए तँए समए लगबै दुआरे जौं कहने होथि। मुदा से केना बूझब जे केते समए लगाएब। भऽ सकैए जे जेतबे समए जड़ि खोड़ि गराड़ देखैमे लगत तेतबे ने मुदा अपने केना बूझब? तइसँ नीक जे जाबे बजबए नै औती ताबे नै जाएब। पछिलो शनिमे जखनि आएल रही पएर धोलाक बाद चाह पिऔने रहथि। तहिना चाहे बनबै दुआरे जौं टारने होथि। नीक हएत जे ताबे धरि कड़ची लऽ कऽ जड़ि खोड़ैत-खाड़ैत रहब जाबे धरि बजबए नै औती।

चाह छानि ओसारक चौकीपर रखि काकी दरबज्जा दिस बढ़ैत बजली-

> ''जओ काटए गेलौं तँ शतुआइन केनहि एलौं। चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल। आ झूठै-फूसेमे लटकल छी।''

झूठ-फूस सुनि शोभा काका चौंकला, कहू जे अपने लटकल छी आकि हुनके किरदानीए लटकल छी। मुदा किछु बजला नै। मनमे उठलनि जे जइ शून्यक कोनो मोजर नै छै सेहो घुमैत-फिड़ैत केतए-सँ-केतए उड़ि जाइत अछि। मुदा ई तँ शब्दवाण छी, कागभुशुण्डी जकाँ सभ दुनियाँ देखौत। पुछलखिन-

> ''केहेन चाह बनेलौं जे लगले पानि भऽ जाएत?''

जहिना मंदिरक बीच भक्त भगवानक आगू ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि अपन मनोरथ मनमे दाबि पहिने स्तुति करैत तहिना मनक बात मनेमे रखि सुगिया काकी बजली-

> ''तबधलमे तपते चाहक ने सुआद होइ छै जौं से नै तँ जहिना अधिक बोखारक आगू कम बोखार बोखार नै रहि जाइत तहिना ने चाहो होइ छै।''

भूखलकेँ जहिना पहिल कौर आ पियासलकेँ पहिल घोंट सुखद होइ छै तहिना चाहक घोंट लगबिते शोभा काका बजला-

> ''गाम-घरक की हाल्-चाल अछि?''

गाम-घरक हाल-चाल सुनि सुगिया काकीक मन उड़ए लगलनि। बजैसँ पहिने सोचए लगली जे किम्हरसँ बाजी। गाम दिससँ आकि परिवार दिससँ। सम्हारैत बजली-

> ''गाममे तँ ऐबेर साक्षात् सरोसतीए आबि गेली। एकोटा विद्यार्थी फेल नै भेल।''

सभकेँ पास सुनि शोभा कक्काक मन ओझरा गेलनि। जखनि सभ पास केलक तखनि सुशीलक केना बूझब जे केतेसँ नीक केतेसँ अधला केलक। पाशा बदलैत पुछलखिन-

“केकरा कोन डिबीजन भेल?”

काकीक मन पहिनेसँ उड़ले रहनि, जहिना दौगैकाल पएरक ठेकान नै रहैत तहिना प्रश्नकेँ सुआदने बिना बजली-

“सभसँ बेसी नम्बर अपने सुशीलकेँ अछि।”

सभसँ नीक सुनि शोभा काका बजला-

“अपने जे हुअए मुदा सुशीलकेँ आगूओ पढ़ाएब।”

आगूक नाओं सुनि सुगिया काकी, भकरार फूल जकाँ बजली-

“रिजल्ट निकललापर जखनि सुशील संगी-साथी सभसँ भेँट कऽ आएल तखनेसँ मन खसल देखै छी।”

“से किए?”

“कहैए जे आगू पढ़ैले सभ बाहर जाएत...?”

सुगिया काकीक विचारकेँ शोभा काका विचारक अलमारीमे चौपेतैत बजला-

“नीक हएत जे बौऔकेँ सोर पाड़ि लिऔ। परिवारक सभ मिलि किए ने परिवारक काजक विचार करब। केकरो मनोरथकेँ किए कियो दाबत?”

शोभा कक्काक विचार सुनि सुगिया काकीक मन खापड़िक धान जकाँ ऐ भागसँ ओइ भाग करए लगलनि। मुदा पतिक बात बूझि हनछिन नै कऽ कन्हलग्गू बड़द जकाँ जू गेली।

सुशीलक संग आबि काकी अपन घरमे अभ्यागत जकाँ बजली-

“बौआ, पहिने बाबूकेँ गोड़ लगहुन।”

ओना सुशीलक मनमे अपनो रहबे करै जे अपन कर्त्तव्यक पालन केना केने छी से तँ पितेक बतौल रस्ता छियनि। तँए ओइ पगक पग-सँ-पग टपलौं तखनि किए ने ओकरे हथियार बना जीवन कर्म करब। पिताकेँ गोड़

लागि सुशील मुँह उठा असिरवादक प्रतिक्षा करए लगल।
शोभा काका कहलखिन-

"बाउ, आगूक की विचार होइए?"

सुशील बाजल-

"सभ बाहर जा-जा नाओं लिखौत।"

शोभा काका कहलखिन-

"मनोरथ अपनो अछि, माएओक मन तेहने देखै छी। चारि-पाँच साल नोकरी रहल अछि। तैबीच देखबे करै छी चारू भाए-बहिन पढ़ै छी, दिनो-दिन आगूए बढ़ब। जइसँ खरचो बढ़िते जाएत। केते कमाइ छी से केकरोसँ छिपल अछि। तखनि तँ आमद-खर्च देखि कऽ जौं परिवारक गाड़ी नै खिंचब तँ केते दिन परिवार ठाढ़ रहत।"

पतिक बातकेँ अनसुन करैत सुगिया काकी बिच्चेमे टपकि उठली-

"हम केकरासँ थोड़ छी जे अपन मनोरथ पूरा नै करब। जहिना सबहक बेटा पढ़ैले बाहर जाएत तहिना हमरो जाएत।"

पत्नीक विचारसँ शोभा काका सकपकेला नै। अपनो मनोरथ, पत्नीओक मनोरथ आ बेटोक मनोरथकेँ पानि-चिन्नी-नेबोक रस जकाँ घोड़ए लगला। मनक बात कहथिन केकरा। नजरि उठा कखनो पत्नी तँ कखनो पुत्रपर दैत विचारए लगला। विचित्र स्थिति बनि गेल अछि। नोकरीक चाहमे लोक केतए-सँ-केतए भागि रहल अछि। किए ने भागत? जे हवा बनि गेल अछि आकि बनल जा रहल अछि तइमे जिनगीक ज्ञान पाछू पड़ि रहल अछि। नव तकनीक संग नव मनुख पैदा लऽ रहल अछि जेकर दूरी एते-बढ़ि रहल अछि जे चिन-पहचिन्ह समाप्त भऽ रहल अछि।

